Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Genesis 1:1

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश एवं पृथ्वी को रचा.

2 पृथ्वी बिना आकार के तथा खाली थी, और पानी के ऊपर अंधकार था तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडरा रहा था.

3 उसके बाद परमेश्वर ने कहा, “प्रकाश हो जाए,” और प्रकाश हो गया.

4 परमेश्वर ने प्रकाश को देखा कि अच्छा है. परमेश्वर ने प्रकाश को अंधकार से अलग किया.

5 परमेश्वर ने प्रकाश को “दिन” तथा अंधकार को “रात” कहा और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार पहला दिन हो गया.

6 फिर परमेश्वर ने कहा, “जल के बीच ऐसा विभाजन हो कि जल दो भागों में हो जाए.”

7 इस प्रकार परमेश्वर ने नीचे के जल और ऊपर के जल को अलग किया. यह वैसा ही हो गया.

8 परमेश्वर ने इस अंतर को “आकाश” नाम दिया. और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार दूसरा दिन हो गया.

9 फिर परमेश्वर ने कहा, “आकाश के नीचे का पानी एक जगह इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे” और वैसा ही हो गया.

10 परमेश्वर ने सूखी भूमि को “धरती” तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको “सागर” कहा और परमेश्वर ने देखा कि वह अच्छा है.

11 फिर परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी से हरी घास तथा पेड़ उगने लगें: और पृथ्वी पर फलदाई वृक्षों में फल लगने लगें.” और वैसा हो गया.

12 पृथ्वी हरी-हरी घास, बीजयुक्त पौधे, जिनमें अपनी-अपनी जाति का बीज होता है तथा फलदाई वृक्ष, जिनके फलों में अपनी-अपनी जाति के बीज होते हैं, उगने लगे. परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है.

13 फिर शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार तीसरा दिन हो गया.

14 फिर परमेश्वर ने कहा, “दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश में ज्योतियां हों, और ये चिन्हों, समयों, दिनों एवं वर्षों के लिए होगा.

15 और आकाश में ज्योतियां हों, जिससे पृथ्वी को प्रकाश मिले,” और ऐसा ही हो गया.

16 परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाई—बड़ी ज्योति को दिन में तथा छोटी ज्योति को रात में राज करने हेतु बनाया. और परमेश्वर ने तारे भी बनाये.

17 इन सभी को परमेश्वर ने आकाश में स्थिर किया कि ये पृथ्वी को रोशनी देते रहें,

18 ताकि दिन और रात अपना काम पूरा कर सकें और रोशनी अंधकार से अलग हो. और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है.

Genesis 2:1

19 और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार चौथा दिन हो
गया.

20 फिर परमेश्वर ने कहा, "पानी में पानी के जंतु और आकाश
में उड़नेवाले पक्षी भर जायें."

21 परमेश्वर ने बड़े-बड़े समुद्री-जीवों तथा सब जातियों के
जंतुओं को भी बनाया, और समुद्र को समुद्री-जीवों से भर
दिया तथा सब जाति के पक्षियों की भी सृष्टि की और परमेश्वर
ने देखा कि यह अच्छा है.

22 इन्हें परमेश्वर ने यह कहकर आशीष दी, "समुद्र में सभी
जंतु, तथा पृथ्वी में पक्षी भर जायें."

23 तब शाम हुई, फिर सुबह हुई—पांचवां दिन हो गया.

24 फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से प्रत्येक जाति के जीवित
प्राणी उत्पन्न हों: पालतू पशु, रेंगनेवाले जंतु तथा हर एक जाति
के वन पशु उत्पन्न हों."

25 परमेश्वर ने हर एक जाति के वन-पशुओं को, हर एक जाति
के पालतू पशुओं को तथा भूमि पर रेंगनेवाले हर एक जाति के
जीवों को बनाया. और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है.

26 फिर परमेश्वर ने कहा, "हम अपने स्वरूप के अनुसार
अपनी समानता में मनुष्य की रचना करें कि वे सागर की
मछलियों, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं, भूमि पर
रेंगनेवाले हर एक जीव तथा सारी पृथ्वी पर राज करें."

27 इसलिये परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को बनाया,
परमेश्वर के ही स्वरूप में परमेश्वर ने उन्हें बनाया; नर और
नारी करके उसने उन्हें बनाया.

28 परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष दी, "फूलो फलो और संख्या में
बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ और सब पर अधिकार कर लो.
सागर की मछलियों, आकाश के पक्षियों व पृथ्वी के सब
रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो."

29 तब परमेश्वर ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हारे खाने के लिए बीज
वाले पौधे और बीज वाले फल के पेड़ आदि दिये हैं जो तुम्हारे
भोजन के लिये होंगे.

30 और पृथ्वी के प्रत्येक पशुओं, आकाश के सब पक्षियों और
पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जीव-जन्तुओं को—प्रत्येक प्राणी को
जिसमें जीवन का श्वास है—मैं प्रत्येक हरे पौधे भोजन के लिये
देता हूं." और वैसा ही हो गया.

31 परमेश्वर ने अपनी बनाई हर चीज़ को देखा, और वह बहुत
ही अच्छी थी. और शाम हुई, फिर सुबह हुई—इस प्रकार
छठवां दिन हो गया.

Genesis 2:1

1 इस प्रकार परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी के लिए सब कुछ
बनाकर अपना काम पूरा किया.

2 सातवें दिन परमेश्वर ने अपना सब काम पूरा कर लिया था;
जो उन्होंने शुरू किया था; अपने सभी कामों को पूरा करके
सातवें दिन उन्होंने विश्राम किया.

3 परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी तथा उसे पवित्र
ठहराया, क्योंकि यह वह दिन था, जब उन्होंने अपनी रचना,
जिसकी उन्होंने सृष्टि की थी, पूरी करके विश्राम किया.

4 यही वर्णन है कि जिस प्रकार याहवेह परमेश्वर ने आकाश
और पृथ्वी को बनाया.

5 उस समय तक पृथ्वी में कोई हरियाली और कोई पौधा नहीं
उगा था, क्योंकि तब तक याहवेह परमेश्वर ने पृथ्वी पर बारिश
नहीं भेजी थी. और न खेती करने के लिए कोई मनुष्य था.

6 भूमि से कोहरा उठता था जिससे सारी भूमि सींच जाती थी.

7 फिर याहवेह परमेश्वर ने मिट्टी से मनुष्य को बनाया तथा
उसके नाक में जीवन की सांस फूंक दिया. इस प्रकार मनुष्य
जीवित प्राणी हो गया.

Genesis 3:1

8 याहवेह परमेश्वर ने पूर्व दिशा में एदेन नामक स्थान में एक
बगीचा बनाया और उस बगीचे में मनुष्य को रखा.

9 याहवेह परमेश्वर ने सुंदर पेड़ और जिनके फल खाने में अच्छे
हैं, उगाए और बगीचे के बीच में जीवन का पेड़ और भले या
बुरे के ज्ञान के पेड़ भी लगाया.

10 एदेन से एक नदी बहती थी जो बगीचे को सींचा करती थी
और वहां से नदी चार भागों में बंट गई.

11 पहली नदी का नाम पीशोन; जो बहती हुई हाविलाह देश में
मिल गई, जहां सोना मिलता है.

12 (उस देश में अच्छा सोना है. मोती एवं सुलेमानी पत्थर भी
वहां पाए जाते हैं.)

13 दूसरी नदी का नाम गीहोन है. यह नदी कूश देश में जाकर
मिलती है.

14 तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल है; यह अश्शूर के पूर्व में
बहती है. चौथी नदी का नाम फरात है.

15 याहवेह परमेश्वर ने आदम को एदेन बगीचे में इस उद्देश्य
से रखा कि वह उसमें खेती करे और उसकी रक्षा करे.

16 याहवेह परमेश्वर ने मनुष्य से यह कहा, "तुम बगीचे के
किसी भी पेड़ के फल खा सकते हो;

17 लेकिन भले या बुरे के ज्ञान का जो पेड़ है उसका फल तुम
कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तुम इसमें से खाओगे, निश्चय
तुम मर जाओगे."

18 इसके बाद याहवेह परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला
रहना अच्छा नहीं है. मैं उसके लिए एक सुयोग्य साथी
बनाऊंगा."

19 याहवेह परमेश्वर ने पृथ्वी में पशुओं तथा पक्षियों को बनाया
और उन सभी को मनुष्य के पास ले आए, ताकि वह उनका
नाम रखे; आदम ने जो भी नाम रखा, वही उस प्राणी का नाम
हो गया.

20 आदम ने सब जंतुओं का नाम रख दिया. किंतु आदम के
लिए कोई साथी नहीं था, जो उसके साथ रह सके.

21 इसलिये याहवेह परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाला;
जब वह सो गया, याहवेह परमेश्वर ने उसकी एक पसली
निकाली और उस जगह को मांस से भर दिया.

22 फिर याहवेह परमेश्वर ने उस पसली से एक स्त्री बना दी
और उसे आदम के पास ले गए.

23 आदम ने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे
मांस में का मांस है; उसे 'नारी' नाम दिया जायेगा, क्योंकि यह
'नर' से निकाली गई थी."

24 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी
पत्नी से मिला रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे.

25 आदम एवं उसकी पत्नी नग्न तो थे पर लजाते न थे.

Genesis 3:1

1 याहवेह परमेश्वर के बनाये सब जंतुओं में सांप सबसे ज्यादा
चालाक था. उसने स्त्री से कहा, "क्या सच में परमेश्वर ने तुमसे
कहा, 'तुम इस बगीचे के किसी भी पेड़ का फल न खाना'?"

2 तब स्त्री ने उत्तर दिया, "हम बगीचे के वृक्षों के फलों को खा
सकते हैं,

3 लेकिन बगीचे के बीच में जो पेड़ है, उसके बारे में परमेश्वर
ने कहा है 'न तो तुम उसका फल खाना और न ही उसको
छूना, नहीं तो तुम मर जाओगे.' "

4 सांप ने स्त्री से कहा, "निश्चय तुम नहीं मरोगे!

5 परमेश्वर यह जानते हैं कि जिस दिन तुम इसमें से खाओगे,
तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी तथा तुम्हें भले और बुरे का ज्ञान हो
जाएगा और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे."

Genesis 4:1

6 जब स्त्री ने उस पेड़ के फल की ओर देखा कि वह खाने में
अच्छा तथा देखने में सुंदर और बुद्धि देनेवाला है, तब उसने
उस पेड़ के फलों में से एक लेकर खाया. और उसने यह फल
अपने पति को भी दिया, जो उसके पास ही था. उसने भी उसे
खाया.

7 तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उन्हें महसूस हुआ कि
वे नंगे हैं. इसलिये उन्होंने अंजीर की पत्तियां जोड़कर कपड़े
बनाए और अपने नंगेपन को ढक दिया.

8 जब आदम और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में याहवेह
परमेश्वर के आने की आवाज बगीचे में सुनी, तब आदम और
उसकी पत्नी पेड़ों के बीच में छिप गये.

9 किंतु याहवेह परमेश्वर ने आदम को बुलाया और पूछा, "तुम
कहां हो?"

10 आदम ने उत्तर दिया, "आपके आने का शब्द सुनकर हम
डर गये और हम छिप गये क्योंकि हम नंगे हैं."

11 याहवेह ने कहा, "किसने तुमसे कहा कि तुम नंगे हो? कहीं
ऐसा तो नहीं, कि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया हो, जिसको
खाने के लिए मैंने मना किया था?"

12 आदम ने कहा, "साथ में रहने के लिए जो स्त्री आपने मुझे
दी है, उसी ने मुझे उस पेड़ से वह फल दिया, जिसे मैंने खाया."

13 यह सुन याहवेह परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, "यह क्या किया
तुमने?" स्त्री ने उत्तर दिया, "सांप ने मुझे बहकाया, इसलिये
मैंने वह फल खा लिया."

14 याहवेह परमेश्वर ने सांप से कहा, तूने ऐसा करके गलत
किया, "इसलिये तू सभी पालतू पशुओं से तथा सभी वन्य
पशुओं से अधिक शापित है! तू पेट के बल चला करेगा और
जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा.

15 मैं तेरे तथा स्त्री के बीच, तेरी संतान तथा स्त्री की संतान के
बीच बैर पैदा करूंगा; वह तेरे सिर को कुचलेगा, तथा तू
उसकी एड़ी को डसेगा."

16 स्त्री से परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारी गर्भावस्था के दर्द को
बहुत बढ़ाऊंगा; तुम दर्द के साथ संतान को जन्म दोगी. यह
होने पर भी तुम्हारी इच्छा तुम्हारे पति की ओर होगी, और पति
तुम पर अधिकार करेगा."

17 फिर आदम से परमेश्वर ने कहा, "तुमने अपनी पत्नी की बात
सुनकर उस पेड़ से फल खाया, 'जिसे खाने के लिये मैंने तुम्हें
मना किया था,' "इस कारण यह पृथ्वी जिस पर तुम रह रहे हो,
श्रापित हो गई है; तुम जीवन भर कड़ी मेहनत करके जीवन
चलाओगे.

18 तुम खेती करोगे लेकिन उसमें कांटे और जंगली पेड़ उगेंगे,
और तुम खेत की उपज खाओगे.

19 तुम अपने पसीने ही की रोटी खाया करोगे और अंततः मिट्टी
में मिल जाओगे क्योंकि तुम मिट्टी ही हो, मिट्टी से ही बने हो."

20 आदम ने अपनी पत्नी को हव्वा नाम दिया, क्योंकि वही
सबसे पहली माता थी.

21 आदम तथा उसकी पत्नी के लिए याहवेह परमेश्वर ने चमड़े
के वस्त्र बनाकर उन्हें पहना दिये.

22 फिर याहवेह परमेश्वर ने सोचा, "आदम और हव्वा ने भले
और बुरे के ज्ञान का फल तो खा लिया, अब वे जीवन के पेड़
से फल खाकर सदा जीवित न रह जाएं."

23 इस कारण याहवेह परमेश्वर ने उन्हें एदेन के बगीचे से बाहर
कर दिया, ताकि वे भूमि पर खेती करें, और फल उपजायें.

24 तब उन्होंने आदम को एदेन के बगीचे से बाहर कर दिया
तथा एदेन के बगीचे की निगरानी के लिए करूबों को और
चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को रख दिया ताकि
कोई जीवन के वृक्ष को छू न सके.

Genesis 4:1

1 जब आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ दाम्पतिक संबंध में
प्रवेश किया, तब हव्वा गर्भवती हुई तथा उसने कयीन को जन्म
दिया. हव्वा ने कहा, "याहवेह की सहायता से मैंने एक पुरुष
को जन्म दिया है."

Genesis 4:1

2 फिर हव्वा ने कयीन के भाई हाबिल को जन्म दिया. हाबिल
भेड़-बकरियों का चरवाहा था, किंतु कयीन खेती करता था.

3 कुछ दिनों बाद याहवेह को भेंट चढ़ाने के उद्देश्य से कयीन
अपनी खेती से कुछ फल ले आया.

4 और हाबिल ने अपने भेड़-बकरियों में से पहला बच्चा भेंट
चढ़ाया तथा चर्बी भी भेंट चढ़ाई. याहवेह ने हाबिल और
उसकी भेंट को तो ग्रहण किया,

5 परंतु कयीन और उसकी भेंट को याहवेह ने ग्रहण नहीं
किया. इससे कयीन बहुत क्रोधित हुआ तथा उसके मुख पर
उदासी छा गई.

6 इस पर याहवेह ने कयीन से पूछा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? क्यों
तू उदास हुआ?

7 अगर तू परमेश्वर के योग्य भेंट चढ़ाता तो क्या तेरी भेंट ग्रहण
न होती? और यदि तू सही न करे, तो पाप द्वार पर है, और
उसकी लालसा तेरी ओर रहेगी. पर तू उस पर प्रभुता करना."

8 हाबिल अपने भाई कयीन के खेत में गया तब कयीन ने
हाबिल से कुछ कहा और कयीन ने हाबिल को मार दिया.

9 तब याहवेह ने कयीन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहां है?"
उसने उत्तर दिया, "पता नहीं. क्या मैं अपने भाई का रखवाला
हूं?"

10 याहवेह ने कहा, "तूने यह क्या किया? भूमि से तेरे भाई का
रक्त मुझे पुकार रहा है.

11 अब तू उस भूमि की ओर से शापित है, क्योंकि इस खेत में
तेरे भाई का खून गिरा है.

12 जब तू खेती करेगा, तुझे इसकी पूरी उपज नहीं मिलेगी; तू
अब पृथ्वी पर अकेला और बेसहारा होगा."

13 कयीन ने याहवेह से कहा, "मेरा दंड मेरी सहन से बाहर है.

14 आपने आज मुझे यहां से निकाल दिया है, मैं आपके सामने
से छिप जाऊंगा; मैं अकेला और बेसहारा होकर घुमूंगा तो मैं
जिस किसी के सामने जाऊंगा, वे मुझे मार देंगे."

15 यह सुन याहवेह ने उससे कहा, "यदि ऐसा हुआ, तो जो कोई
कयीन की हत्या करेगा, उससे सात गुणा बदला लिया
जाएगा." याहवेह ने कयीन के लिए एक विशेष चिन्ह ठहराया,
ताकि कोई उसकी हत्या न कर दे.

16 इसके बाद कयीन याहवेह के पास से चला गया और नोद
देश में बस गया, जो एदेन बगीचे के पूर्व में है.

17 कयीन की पत्नी ने हनोख को जन्म दिया. कयीन ने एक नगर
बसाया और उस नगर को अपने पुत्र के नाम पर हनोख रखा.

18 हनोख से इराद का जन्म हुआ, इराद से महूजाएल का तथा
महूजाएल से मेथूशाएल का, मेथूशाएल से लामेख का जन्म
हुआ.

19 लामेख की दो पत्नियां थीं, एक का नाम अदाह तथा दूसरी
का नाम ज़िल्लाह था.

20 अदाह ने जाबाल को जन्म दिया; वह जानवरों के पालने
वालों और तंबुओं में रहनेवालों का नायक बना.

21 उसके भाई का नाम यूबाल था; वह वीणा और बांसुरी
बजाने वालों का नायक बना.

22 ज़िल्लाह ने तूबल-कयीन को जन्म दिया, जो कांसे एवं लोहे
के सामान बनाता था. तूबल-कयीन की बहन का नाम नामाह
था.

23 लामेख ने अपनी पत्नियों से कहा, "अदाह और ज़िल्लाह
सुनो; तुम मेरी पत्नियां हो, मेरी बात ध्यान से सुनो, मैंने एक
व्यक्ति को मारा है, क्योंकि उसने मुझ पर आक्रमण किया था.

24 जब कयीन के लिए सात गुणा बदला लिया गया था, तब तो
लामेख के लिए सत्तर बार सात गुणा होगा."

Genesis 5:1

25 हव्वा ने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शेत
यह कहकर रखा, “कयीन द्वारा हाबिल की हत्या के बाद
परमेश्वर ने हाबिल के बदले मेरे लिए एक और संतान दिया है.”

26 शेत के भी एक पुत्र पैदा हुआ, जिसका उसने एनोश नाम
रखा. उस समय से लोगों ने याहवेह से प्रार्थना करना शुरू
किया.

Genesis 5:1

1 यह आदम के वंशजों का प्रलेख है: जब परमेश्वर ने मनुष्य
की सृष्टि की, तो उन्होंने मनुष्य को अपने ही रूप में बनाया.

2 परमेश्वर ने मनुष्य को नर तथा नारी कहकर उन्हें आशीष दी
और परमेश्वर ने उनका नाम आदम रखा.

3 जब आदम 130 वर्ष के हुए, तब एक पुत्र पैदा हुआ, जिनका
रूप स्वयं उन्हीं के समान था; उनका शेत नाम रखा गया.

4 शेत के जन्म के बाद आदम 800 वर्ष के हुए, उनके और
पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

5 इस प्रकार आदम कुल 930 साल जीवित रहे, फिर उनकी
मृत्यु हो गई.

6 जब शेत 105 वर्ष के थे, तब एनोश का जन्म हुआ.

7 एनोश के बाद उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए तथा शेत
807 वर्ष और जीवित रहे.

8 जब शेत कुल 912 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो गई.

9 जब एनोश 90 वर्ष के हुए, तब केनान का जन्म हुआ.

10 केनान के जन्म के बाद एनोश 815 वर्ष और जीवित रहे
तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

11 जब एनोश कुल 905 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो
गई.

12 जब केनान 70 वर्ष के हुए, तब माहालालेल का जन्म हुआ.

13 माहालालेल के जन्म के बाद, केनान 840 वर्ष और जीवित
रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

14 इस प्रकार केनान कुल 910 वर्ष के हुए, और उनकी मृत्यु
हो गई.

15 जब माहालालेल 65 वर्ष के हुए, तब यारेद का जन्म हुआ.

16 यारेद के जन्म के बाद, माहालालेल 830 वर्ष और जीवित
रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

17 जब माहालालेल 895 वर्ष के थे, तब उनकी मृत्यु हो गई.

18 जब यारेद 162 वर्ष के हुए, तब हनोख का जन्म हुआ.

19 हनोख के जन्म के बाद, यारेद 800 वर्ष और जीवित रहे
तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुईं.

20 जब यारेद कुल 962 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो
गई.

21 जब हनोख 65 वर्ष के हुए, तब मेथुसेलाह का जन्म हुआ.

22 मेथुसेलाह के जन्म के बाद हनोख 300 वर्ष तक परमेश्वर
के साथ साथ चलते रहे. उसके अन्य पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

23 हनोख कुल 265 साल जीवित रहे.

24 हनोख परमेश्वर के साथ साथ चलते रहे. और वे नहीं रहे,
क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपने पास उठा लिया.

25 जब मेथुसेलाह 187 वर्ष के हुए, तब लामेख का जन्म हुआ.

26 लामेख के जन्म के बाद, मेथुसेलाह 782 वर्ष और जीवित रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां भी पैदा हुए.

27 जब मेथुसेलाह कुल 969 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो गई.

28 जब लामेख 182 वर्ष के हुए, तब एक पुत्र का जन्म हुआ,

29 जिनका नाम उन्होंने नोहा यह कहकर रखा, "यह बालक हमें हमारे कामों से तथा मेहनत से, और इस शापित भूमि से शांति देगा."

30 नोहा के जन्म के बाद लामेख 595 वर्ष और जीवित रहे, तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुए.

31 जब लामेख कुल 777 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हुई.

32 नोहा के 500 वर्ष की आयु में शेम, हाम तथा याफेत का जन्म हुआ.

Genesis 6:1

1 फिर जब पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी और उनके पुत्रियां पैदा हुई,

2 तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्यों के पुत्रियों को देखा कि वे सुंदर हैं. और उन्होंने उन्हें अपनी इच्छा अनुसार अपनी-अपनी पत्नियां बना लिया.

3 यह देखकर याहवेह ने निर्णय लिया, "मेरा आत्मा मनुष्य से हमेशा बहस करता न रहेगा क्योंकि मनुष्य केवल मांस मात्र है, वह 120 वर्ष ही जीवित रहेगा."

4 उन दिनों में पृथ्वी पर दानव रहते थे. जब परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्यों की पुत्रियों के संतान हुए वे बहुत बलवान और शूरवीर थे.

5 जब याहवेह ने मनुष्यों को देखा कि वे हमेशा बुराई ही करते हैं, कि उन्होंने जो कुछ भी सोचा था या कल्पना की थी वह लगातार और पूरी तरह से बुराई थी.

6 तब याहवेह पृथ्वी पर आदम को बनाकर पछताए और मन में अति दुखित हुए.

7 और याहवेह ने सोचा, "मैं पृथ्वी पर से मनुष्य को मिटा दूंगा—हर एक मनुष्य, पशु, रेंगते जंतु तथा आकाश के पक्षी, जिनको बनाकर मैं पछताता हूं."

8 लेकिन नोहा पर याहवेह का अनुग्रह था.

9 नोहा और उनके परिवार का अभिलेख इस प्रकार है: नोहा एक धर्मी और निर्दोष व्यक्ति थे. वे परमेश्वर के साथ साथ चलते थे.

10 उनके तीन पुत्र थे शेम, हाम तथा याफेत.

11 परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी पर बहुत बुराई और उपद्रव बढ़ गया है.

12 परमेश्वर ने पृथ्वी को देखा कि वह भ्रष्ट हो गई है; क्योंकि समस्त मानवों ने पृथ्वी पर अपना आचरण भ्रष्ट कर लिया था.

13 इसलिये परमेश्वर ने नोहा से कहा, "मैं पूरी पृथ्वी के लोग और जो कुछ भी उसमें है सबको नाश कर दूंगा, क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है.

14 इसलिये नोहा से याहवेह ने कहा कि तुम अपने लिए गोपेर पेड़ की लकड़ी का एक बड़ा जहाज़ बनाना; जहाज़ में कई अलग-अलग भाग बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना.

15 जहाज़ की लंबाई एक सौ पैंतीस मीटर, चौड़ाई तेईस मीटर तथा ऊंचाई चौदह मीटर रखना.

16 इसके लिए एक छत बनाना. जहाज़ में एक खिड़की बनाना, जो ऊपर की ओर छत से आधा मीटर नीचे होगी, जहाज़ के

Genesis 7:1

एक तरफ दरवाजा रखना. जहाज़ में पहली, दूसरी तथा तीसरी मंजिलें बनाना.

17 क्योंकि मैं पृथ्वी को जलप्रलय से नाश कर दूंगा और कोई
न बचेगा; सबको जिनमें जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे
से मैं नाश करनेवाला हूं.

18 लेकिन मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा बांधूंगा—जहाज़ में तुम,
तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पत्नी तथा तुम्हारी बहुओं सहित प्रवेश
करना.

19 और प्रत्येक जीवित प्राणी के दो-दो अर्थात् नर एवं मादा को
जहाज़ में ले जाना, ताकि वे तुम्हारे साथ जीवित रह सकें.

20 पक्षी भी अपनी-अपनी जाति के, पशु अपनी-अपनी जाति
के, भूमि पर रेंगनेवाले जंतु अपनी-अपनी जाति के सभी
जातियों के जोड़े जहाज़ में रखना, ताकि वे जीवित रह सकें.

21 और खाने के लिए सब प्रकार का भोजन रखना, जो सबके
लिए होगा."

22 नोहा ने वैसा ही किया, जैसा परमेश्वर ने उनसे कहा.

Genesis 7:1

1 फिर याहवेह ने नोहा से कहा, "तुम और तुम्हारा पूरा परिवार
जहाज़ में जाओ, क्योंकि इस पृथ्वी पर केवल तुम ही धर्मी हो.

2 तुम अपने साथ उन पशुओं के सात-सात जोड़े नर एवं मादा
ले लो, जो शुद्ध माने जाते हैं तथा उन पशुओं का भी एक-एक
जोड़ा, जो शुद्ध नहीं माने जाते.

3 इसी प्रकार आकाश के पक्षियों के सात जोड़े—नर तथा
मादा, ले लो.

4 क्योंकि अब से सात दिन के बाद, मैं पृथ्वी पर जल
बरसाऊंगा, चालीस दिन तथा चालीस रात तक जल बरसाता
रहूंगा और भूमि पर मेरे द्वारा रचे गये सभी जीवित प्राणी नष्ट
हो जायेंगे."

5 नोहा ने याहवेह की सब बातों को माना.

6 जब पृथ्वी पर जलप्रलय शुरू हुआ, तब नोहा छः सौ वर्ष के
थे.

7 नोहा, उनकी पत्नी, उनके पुत्र, तथा उनकी बहुएं प्रलय से
बचने के लिए जहाज़ में चले गए.

8 शुद्ध तथा अशुद्ध पशु, पक्षी तथा भूमि पर रेंगनेवाले जंतु,

9 नर एवं मादा को जोड़ों में नोहा ने जहाज़ में लिया, जैसा
परमेश्वर ने नोहा से कहा था.

10 सात दिन बाद पृथ्वी पर पानी बरसना शुरू हुआ.

11 नोहा के छः सौ वर्ष के दूसरे महीने के सत्रहवें दिन
महासागर के सोते फूट पड़े तथा आकाश को खोल दिया गया.

12 और पृथ्वी पर चालीस दिन तथा चालीस रात लगातार
बरसात होती रही.

13 ठीक उसी दिन नोहा, उनके पुत्र शेम, हाम तथा याफेत,
नोहा की पत्नी तथा उनकी तीनों बहुएं जहाज़ में चले गए.

14 और उनके साथ सब जाति के वन्य पशु, पालतू पशु,
रेंगनेवाले जंतु, सभी प्रकार के पक्षी और वे सभी जिनके पंखे
हैं, जहाज़ में गए.

15 इस प्रकार वे सभी, जिसमें जीवन था, दो-दो नोहा के पास
जहाज़ में पहुंच गए.

16 नोहा को परमेश्वर के आदेश के अनुसार, जो जहाज़ में
पहुंचे, वे सभी प्राणियों के नर एवं मादा थे. जहाज़ में आए
सबके अंदर जाते ही याहवेह ने द्वार बंद कर दिया.

17 पृथ्वी पर चालीस दिन तथा चालीस रात तक पानी बरसता
रहा. पानी ऊपर होता गया और जहाज़ भी ऊपर उठता गया.

Genesis 8:1

18 पानी से पूरी पृथ्वी डूब गई, और जहाज़ पानी के ऊपर तैरता
रहा.

19 जल पृथ्वी पर इतना बढ़ गया कि आकाश के नीचे के बड़े-
बड़े पहाड़ भी डूब गए.

20 पानी पहाड़ के लगभग सात मीटर ऊंचा हो गया.

21 पृथ्वी पर का सब कुछ नाश हो गया; प्रत्येक जीवित प्राणी
जो भूमि पर चलती थी—पक्षी, पशु, जंगली जानवर, वे सभी
प्राणी जो पृथ्वी पर तैरते हैं, और पूरी मानव जाति.

22 थल के सभी जीवित प्राणी मर गये.

23 इस प्रकार याहवेह ने पृथ्वी के सभी मनुष्य, पशु, रेंगनेवाले
जंतु आकाश के पक्षी, सभी को नाश कर दिया. केवल नोहा
और उनका परिवार तथा जो जीव-जन्तु जहाज़ में थे, वही बचे.

24 150 दिन पृथ्वी पानी से ढकी रही.

Genesis 8:1

1 फिर परमेश्वर ने नोहा और सभी जंगली जानवरों और घरेलू
पशुओं को याद किया जो जहाज़ में थे और एक हवा चलाई.
तब पानी सूखने लगे और धीरे धीरे पानी कम होने लगा.

2 आकाश से पानी बरसना रोक दिया गया, और पृथ्वी के नीचे
से पानी का बहना भी रोक दिया गया.

3 इसलिये जलप्रलय धीरे धीरे पृथ्वी से हट गए, 150 दिन पूरे
होते-होते पानी कम हो चुका था.

4 सातवें महीने के सत्रहवें दिन जहाज़ अरारात पर्वत पर जा
टिका.

5 दसवें महीने तक जल उतरता गया, और दसवें महीने के
पहले दिन पर्वत का ऊपरी हिस्सा दिखने लगा.

6 चालीस दिन पूरा होने पर नोहा ने जहाज़ की खिड़की को
खोल दिया, जो उन्होंने बनाई थी.

7 उन्होंने एक कौवे को बाहर छोड़ दिया, जो पृथ्वी पर इधर-
उधर उड़ते और जहाज़ में आते जाते रहा.

8 फिर नोहा ने एक कबूतर को यह देखने के लिये छोड़ा कि
पृथ्वी से पानी कम हुआ या नहीं.

9 लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह नहीं मिली
क्योंकि पानी अभी भी ज़मीन को ढका था; इसलिये वह वापस
जहाज़ में आ गया. नोहा ने अपना हाथ बढ़ाकर कबूतर को
वापस जहाज़ के अंदर ले लिया.

10 सात दिन बाद नोहा ने फिर कबूतर को छोड़ दिया.

11 कबूतर अपनी चोंच में जैतून का एक कोमल पत्ता लेकर
जहाज़ में लौट आया. यह देखकर नोहा समझ गये कि पृथ्वी
पर से पानी कम हो गया है.

12 नोहा ने सात दिन बाद फिर से कबूतर को बाहर छोड़ा
लेकिन इस बार कबूतर वापस नहीं आया.

13 नोहा के जन्म का छः सौ और एक वर्ष के पहले महीने के
पहले दिन पानी पृथ्वी पर से सूख गया. तब नोहा ने जहाज़ की
छत को हटा दिया और उन्होंने देखा कि ज़मीन सूख गई है.

14 दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन ज़मीन पूरी तरह सूख गई.

15 तब परमेश्वर ने नोहा से कहा,

16 “जहाज़ से तुम सब बाहर आ जाओ; तू और तेरी पत्नी और
तेरे बेटे और उनकी पत्नियां.

17 और सभी पशु, सभी पक्षी व जानवर, पृथ्वी पर रेंगनेवाले
सभी को भी बाहर लाकर छोड़ दो ताकि ये जानवर अनेक
जानवर उत्पन्न करेंगे, और फलवंत होकर पृथ्वी को फिर भर
देंगे.”

18 नोहा, उनके पुत्र, नोहा की पत्नी तथा उनकी बहुएं सब बाहर आ गईं.

19 सभी पशु, रेंगनेवाले जंतु, सभी पक्षी—सभी प्राणी जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, जहाज़ से बाहर आ गये.

20 फिर नोहा ने याहवेह के लिए एक वेदी बनाई और हर एक शुद्ध पशु तथा हर एक शुद्ध पक्षी में से वेदी पर होमबलि चढ़ाई.

21 और याहवेह बलिदान की सुगंध से प्रसन्‍न हुए और खुद से कहा, "अब मैं मनुष्य के कारण पृथ्वी को शाप नहीं दूंगा. यद्यपि मानव छोटी उम्र से ही बुरी बातें सोचता है; इसलिये जैसा मैंने अभी किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे प्राणियों को नाश नहीं करूंगा.

22 "जब तक पृथ्वी है, फसल उगाना तथा काटना, ठंड एवं गर्मी, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात अखंड होते रहेंगे."

Genesis 9:1

1 तब परमेश्वर ने नोहा तथा उनके पुत्रों को यह आशीष दी, "फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ.

2 पृथ्वी के हर एक पशु एवं आकाश के हर एक पक्षी पर, भूमि पर रेंगनेवाले जंतु पर तथा समुद्र की समस्त मछलियों पर तुम्हारा भय बना रहेगा—ये सभी तुम्हारे अधिकार में कर दिए गए हैं.

3 सब चलनेवाले जंतु, जो जीवित हैं, तुम्हारा आहार होंगे; इस प्रकार मैं तुम्हें सभी कुछ दे रहा हूं, जिस प्रकार मैंने तुम्हें पेड़ पौधे दिए.

4 "एक बात का ध्यान रखना कि मांस को लहू के साथ मत खाना.

5 मैं तुम्हारे जीवन, अर्थात् लहू, का बदला ज़रूर लूंगा. मैं उस जानवर का जीवन मांगूंगा जो किसी व्यक्ति को मारेगा. प्रत्येक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के खून का बदला ज़रूर लूंगा.

6 "जो कोई मनुष्य का रक्त बहाएगा, मनुष्य द्वारा ही उसका रक्त बहाया जाएगा; क्योंकि परमेश्वर ने अपने रूप में मनुष्य को बनाया है.

7 अब तुम पृथ्वी में रहो; फूलो फलो और बढ़ो और बस जाओ."

8 फिर परमेश्वर ने नोहा तथा उनके पुत्रों से कहा:

9 "मैं तुम्हारे वंश के साथ पक्का वायदा करता हूं.

10 यही नहीं किंतु उन सबके साथ जो इस जहाज़ से बाहर आये हैं—पक्षी, पालतू पशु तथा तुम्हारे साथ पृथ्वी के हर एक पशु, से भी वायदा करता हूं.

11 मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरी करूंगा कि अब मैं जलप्रलय के द्वारा सभी प्राणियों और पृथ्वी को कभी नाश नहीं करूंगा."

12 परमेश्वर ने और कहा, "जो वायदा मैंने तुम्हारे साथ तथा तुम्हारे साथ के जीवित प्राणियों के साथ किया है, यह पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थिर रहेगा और

13 इस बात का सबूत तुम बादलों में मेघधनुष के रूप में देखोगे, यही मेरे एवं पृथ्वी के बीच में वाचा का चिन्ह होगा.

14 जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादल फैलाऊंगा और बादल में मेघधनुष दिखाई देगा,

15 तब मैं अपने वायदे को याद करूंगा, जो मेरे और तुम्हारे बीच किया गया है कि अब कभी भी दुबारा पृथ्वी को इस तरह जलप्रलय से नाश नहीं करूंगा.

16 जब भी यह मेघधनुष दिखेगा, मैं परमेश्वर और पृथ्वी पर रहनेवाले प्रत्येक प्राणी के बीच की हुई सनातन वाचा को याद करूंगा."

17 परमेश्वर ने नोहा से कहा, "जो वायदा मैंने अपने तथा पृथ्वी के हर एक जीवधारी के बीच किया है, यही उसका चिन्ह है."

18 जहाज़ से नोहा के साथ उनके पुत्र शेम, हाम तथा याफेत बाहर आये. (हाम कनान का पिता था.)

19 ये नोहा के तीन पुत्र थे तथा इन्हीं के द्वारा फिर से पृथ्वी मनुष्य से भर गई.

20 नोहा खेती करना शुरू किए, उन्होंने एक दाख की बारी लगाई.

21 एक दिन नोहा दाखमधु पीकर नशे में हो गये और अपने तंबू में नंगे पड़े थे.

22 कनान के पिता हाम ने अपने पिता को इस हालत में देखकर अपने दोनों भाइयों को बुलाया.

23 शेम तथा याफेत ने एक वस्त्र लिया, और दोनों ने उल्टे पांव चलते हुए अपने पिता के नंगे देह को ढक दिया. इस समय उनके मुख विपरीत दिशा में थे, इसलिये उन्होंने अपने पिता के नंगेपन को न देखा.

24 जब नोहा का नशा उतर गया तब उन्हें पता चला कि उनके छोटे बेटे ने उनके साथ क्या किया है.

25 और नोहा ने कहा, “शापित है कनान! वह अपने भाइयों के दासों का भी दास होगा.”

26 नोहा ने यह भी कहा, “धन्य हैं याहवेह, शेम के परमेश्वर! कनान शेम का ही दास हो जाए.

27 परमेश्वर याफेत के वंश को विस्तृत करे; वह शेम के तंबुओं में रहे, और कनान उसका दास हो जाए.”

28 जलप्रलय के बाद नोहा 350 वर्ष और जीवित रहे.

29 जब नोहा कुल 950 साल जीवित रहे, तब उनकी मृत्यु हो गई.

Genesis 10:1

1 शेम, हाम और याफेत नोहा के पुत्र थे, जलप्रलय के बाद इनकी संतान पैदा हुईं.

2 याफेत के पुत्र: गोमर, मागोग, मेदिया, यावन, तूबल, मेशेख तथा तिरास थे.

3 गोमर के पुत्र: अश्केनाज, रिफात तथा तोगरमाह थे.

4 यावन के पुत्र: एलिशाह, तरशीश, कित्तिम तथा दोदानिम थे.

5 (और उनके वंशज मल्लाह बनकर प्रत्येक की अपनी भाषा, गोत्र और राष्ट्र होकर विभिन्न देशों में बंट गये.)

6 हाम के पुत्र: कूश, मिस्र, पूट तथा कनान हुए.

7 कूश के पुत्र: सेबा, हाविलाह, सबताह, रामाह और सबतेका. रामाह के पुत्र: शीबा और देदान.

8 कूश उस निमरोद का पिता था जो पृथ्वी पर पहले वीर व्यक्ति के रूप में मशहूर हुआ.

9 वह याहवेह की दृष्टि में पराक्रमी, शिकारी था, और ऐसा कहा जाने लगा, “निमरोद के समान याहवेह की दृष्टि में पराक्रमी शिकारी!”

10 उसके राज्य की शुरुआत शीनार देश में, बाबेल, एरेख, अक्काद तथा कालनेह से हुई.

11 वहां से वे अश्शूर में गये, वहां उन्होंने नीनवेह, रेहोबोथ-इर तथा कलाह नगर बनाए.

12 तथा रेसेन नगर को बनाए, जो नीनवेह तथा कलाह के बीच का एक बड़ा नगर है.

13 मिस्र के पुत्र: लूदिम, अनामिम, लेहाबिम, नाफतुहि,

Genesis 11:1

14 पथरूस, कस्लूह (जिनसे फिलिस्तीनी राष्ट्र निकले) और
काफ़तोर

15 कनान का पहला पुत्र सीदोन, फिर हित्ती,

16 यबूसी, अमोरी, गिर्गाशी,

17 हिव्वी, आरकी, सीनी,

18 अरवादी, ज़ेमारी, हामाथी. (बाद में कनानी परिवार भी
बढ़ते गए.

19 कनान के वंश की सीमा सीदोन से होकर गेरार से होती हुई
अज्जाह तक थी तथा सोदोम, अमोराह, अदमाह तथा ज़ेबोईम
से लाशा तक थी.)

20 ये सभी गोत्रों, भाषाओं, देशों तथा उनके राष्ट्रों के अनुसार
हाम के वंश में से थे.

21 शेम याफेत के बड़े भाई थे; वे एबर के वंश के गोत्रपिता हुए.

22 शेम के पुत्र: एलाम, अशहूर, अरफाक्साद, लूद तथा अराम
थे.

23 अराम के पुत्र: उज़, हूल, गेथर तथा माश थे.

24 अरफाक्साद शेलाह का पिता था, शेलाह एबर का.

25 एबर के दो पुत्र हुए: एक का नाम पेलेग अर्थात् बांटना,
क्योंकि उनके समय में पृथ्वी का बंटवारा हुआ. उनके भाई का
नाम योकतान था.

26 योकतान के पुत्र: अलमोदाद, शेलेफ, हासारमेबेथ, जेराह,

27 हादरोम, उजाल, दिखलाह,

28 ओबाल, अबीमाएल, शीबा,

29 ओफीर, हाविलाह और योबाब. ये सभी योकतान के पुत्र थे.

30 (ये जहां रहते थे, वहां की सीमा मेषा से लेकर पूर्व के पहाड़
के सेफार तक थी.)

31 ये सभी अपने गोत्रों, भाषाओं, देशों तथा राष्ट्रों के अनुसार
शेम वंश के थे.

32 अपनी-अपनी संतान और जाति के अनुसार, ये नोहा के बेटों
के वंशज हैं. जलप्रलय के बाद, जाति-जाति के लोग इनसे
निकलकर पृथ्वी में फैल गए.

Genesis 11:1

1 पूरी पृथ्वी पर एक ही भाषा तथा एक ही बोली थी.

2 उस समय लोग पूर्व दिशा की ओर चलते हुए, शीनार देश में
मैदान देखकर रुक गये और वहीं रहने लगे.

3 वे आपस में कहने लगे, “हम सब मिलकर अच्छी ईंट
बनाकर आग में पकायें.” उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंटों का
और चुने के स्थान पर मिट्टी के गारे को काम में लिया.

4 और उन्होंने कहा, “आओ, हम अपने लिए एक नगर और
मीनार बनाएं; मीनार इतनी ऊंची बनाएं कि आकाश तक जा
पहुंचे, ताकि हम प्रसिद्ध हो जाएं. अन्यथा हम सारी पृथ्वी में
इधर-उधर हो जायेंगे.”

5 याहवेह उस नगर तथा मीनार को देखने उतर आए, जिसे
लोग बना रहे थे.

6 याहवेह ने सोचा, “ये लोग एक झुंड हैं, इनकी एक ही भाषा
है, और इन्होंने सोचकर काम करने की शुरुआत की है; अब
आगे भी इस प्रकार और काम करेंगे, तो इनके लिए कोई काम
मुश्किल नहीं होगा.

7 आओ, हम उनकी भाषा में गड़बड़ी लाएं ताकि वे एक दूसरे
की बात को समझ न सकें.”

8 इस प्रकार याहवेह ने उन्हें अलग कर दिया और वे पृथ्वी पर
अलग-अलग जगह पर चले गये और नगर व मीनार का काम
रुक गया.

9 इसी कारण इस स्थान का नाम बाबेल पड़ा, क्योंकि यहीं
याहवेह ने भाषा में गड़बड़ी डाली थी तथा यहीं से याहवेह ने
उन्हें पूरी पृथ्वी पर फैला दिया.

10 शेम के वंश का विवरण यह है: जलप्रलय के दो साल बाद
अरफाक्साद का जन्म हुआ तब शेम 100 साल के थे.

11 अरफाक्साद के जन्म के बाद शेम 500 वर्ष और जीवित
रहे. इनके अतिरिक्त उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

12 जब अरफाक्साद 35 साल के हुए, तब शेलाह का जन्म
हुआ.

13 शेलाह के जन्म के बाद अरफाक्साद 403 वर्ष और जीवित
रहे तथा उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

14 जब शेलाह 30 वर्ष के हुए, तब एबर का जन्म हुआ.

15 एबर के जन्म के बाद शेलाह 403 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

16 जब एबर 34 वर्ष के हुए, तब पेलेग का जन्म हुआ.

17 पेलेग के जन्म के बाद एबर 430 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

18 जब पेलेग 30 वर्ष के हुए, तब रेउ का जन्म हुआ.

19 रेउ के जन्म के बाद पेलेग 209 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

20 जब रेउ 32 वर्ष के हुए, तब सेरुग का जन्म हुआ.

21 सेरुग के जन्म के बाद रेउ 207 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

22 जब सेरुग 30 वर्ष के हुए, तब नाहोर का जन्म हुआ.

23 नाहोर के जन्म के बाद सेरुग 200 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

24 जब नाहोर 29 वर्ष के हुए, तब तेराह का जन्म हुआ.

25 तेराह के जन्म के बाद नाहोर 119 वर्ष और जीवित रहे तथा
उनके और पुत्र-पुत्रियां पैदा हुईं.

26 जब तेराह 70 वर्ष के हुए, तब अब्राम, नाहोर तथा हारान
का जन्म हुआ.

27 तेराह के वंशज ये हैं: तेराह से अब्राम, नाहोर तथा हारान
का जन्म हुआ; हारान ने लोत को जन्म दिया.

28 हारान की मृत्यु उनके पिता के जीवित रहते उसकी
जन्मभूमि कसदियों के ऊर में हुई.

29 अब्राम तथा नाहोर ने विवाह किया. अब्राम की पत्नी का नाम
सारय तथा नाहोर की पत्नी का नाम मिलकाह था, जो हारान
की पुत्री थी. हारान की अन्य पुत्री का नाम यिसकाह था.

30 सारय बांझ थी. उनकी कोई संतान न थी.

31 तेराह ने अपने पुत्र अब्राम तथा अपने पोते लोत को, जो
हारान का पुत्र था तथा अब्राम की पत्नी सारय को अपने साथ
लिया और वे सब कसदियों के ऊर से हारान नामक जगह
पहुंचे और वहीं रहने लगे.

32 हारान में तेराह की मृत्यु हो गई, तब वे 205 वर्ष के थे.

Genesis 12:1

1 फिर याहवेह ने अब्राम से कहा, “अपने पिता के घर तथा
अपने रिश्तेदारों को छोड़कर उस देश को चला जा, जो मैं
तुम्हें दिखाऊंगा.

2 “मैं तुमसे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, मैं तुम्हें आशीष दूंगा; मैं
तुम्हारा नाम बड़ा करूंगा, और तुम एक आशीष होंगे.

3 जो तुम्हें आशीष देंगे, मैं उन्हें आशीष दूंगा तथा जो तुम्हें शाप
देगा; मैं उन्हें शाप दूंगा. तुमसे ही पृथ्वी के सब लोग आशीषित
होंगे.”

4 इसलिये याहवेह के आदेश के अनुसार अब्राम चल पड़े;
लोत भी उनके साथ गये. जब अब्राम हारान से निकले, तब वे
75 वर्ष के थे.

5 अब्राम अपने साथ उनकी पत्नी सारय, उनका भतीजा लोत,
उनकी पूरी संपत्ति तथा हारान देश में प्राप्त दास और दासियों
को लेकर कनान देश पहुंचे.

6 वहां से अब्राम शेकेम में मोरेह के बांज वृक्ष तक पहुंच गए.
उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे.

7 याहवेह ने अब्राम को दर्शन दिया और कहा, “तुम्हारे वंश को
मैं यह देश दूंगा.” तब अब्राम ने उस स्थान पर याहवेह के
सम्मान में, जो उन पर प्रकट हुए थे, एक वेदी बनाई.

8 फिर अब्राम वहां से बेथेल के पूर्व में पर्वत की ओर बढ़ गए,
वहीं उन्होंने तंबू खड़े किए. उनके पश्चिम में बेथेल तथा पूर्व में
अय नगर थे. अब्राम ने वहां याहवेह के सम्मान में वेदी बनाई
और आराधना की.

9 वहां से अब्राम नेगेव की ओर बढ़े.

10 उस देश में अकाल पड़ा, तब अब्राम कुछ समय के लिये
मिस्र देश में रहने के लिये चले गए, क्योंकि उनके देश में
भयंकर अकाल पड़ा था.

11 जब वे मिस्र देश के पास पहुंचे, तब अब्राम ने अपनी पत्नी
सारय से कहा, “सुनो, मुझे मालूम है कि तुम एक सुंदर स्त्री हो.

12 जब मिस्र के लोगों को यह पता चलेगा कि तुम मेरी पत्नी हो,
तो वे मुझे मार डालेंगे और तुम्हें जीवित छोड़ देंगे.

13 इसलिये तुम यह कहना कि तुम मेरी बहन हो, ताकि तुम्हारे
कारण मेरी भलाई हो और वे मुझे नहीं मारें.”

14 जब अब्राम मिस्र देश पहुंचे, तब मिस्रियों ने सारय को देखा
कि वह बहुत सुंदर है.

15 और फ़रोह के अधिकारियों ने भी सारय को देखा, तो
उन्होंने फ़रोह को उसकी सुंदरता के बारे में बताया और
सारय को फ़रोह के महल में लाया गया.

16 फ़रोह ने सारय के कारण अब्राम के साथ अच्छा व्यवहार
किया. उसने उसे भेड़ें, बैल, गधे-गधियां, ऊंट तथा दास-
दासियां दिए.

17 पर याहवेह ने अब्राम की पत्नी सारय के कारण फ़रोह तथा
उसके घर पर बड़ी-बड़ी विपत्तियां डाली.

18 इसलिये फ़रोह ने अब्राम को बुलवाया और उनसे कहा,
“तुमने मेरे साथ यह क्या किया? तुमने मुझसे यह बात क्यों
छिपाई कि यह तुम्हारी पत्नी है?

19 तुमने यह क्यों कहा, ‘यह मेरी बहन है’? इस कारण मैंने उसे
अपनी पत्नी बनाने के उद्देश्य से अपने महल में रखा! इसलिये
अब तुम उसे अपने साथ लेकर यहां से चले जाओ!”

20 तब फ़रोह ने अपने अधिकारियों को अब्राम के बारे में
आदेश दिया और उन्होंने अब्राम को उनकी पत्नी और उनकी
सब संपत्ति के साथ विदा किया.

Genesis 13:1

1 अब्राम अपनी पत्नी, सारी संपत्ति और लोत को लेकर कनान
देश के नेगेव में आए.

2 अब्राम के पास बहुत पशु, सोने तथा चांदी होने के कारण वे
बहुत धनी हो गये थे.

Genesis 14:1

3 वे नेगेव से बेथेल तक पहुंच गए, जहां वे पहले रहते थे अर्थात् बेथेल तथा अय के बीच में.

4 और जहां उन्होंने पहले एक वेदी बनाई थी वहां अब्राम ने याहवेह से प्रार्थना की.

5 लोत के पास भी बहुत भेड़-बकरियां और पशु थे. उन्होंने भी अब्राम के पास अपने तंबू लगाए.

6 पर ज़मीन की कमी के कारण वे दोनों एक साथ न रह पा रहे थे क्योंकि उनके पास बहुत अधिक संपत्ति थी.

7 और अब्राम तथा लोत के चरवाहों के बीच आपस में लड़ाई हो जाती थी. और उस समय उस देश में कनानी एवं परिज्ज़ी लोग भी रहते थे.

8 इसलिये अब्राम ने लोत से कहा, "हम दोनों के बीच और हमारे चरवाहों के बीच झगड़ा न हो, क्योंकि हम एक ही परिवार के हैं.

9 इसलिये हम दोनों अलग हो जाते हैं. यदि तुम बायीं दिशा में जाना चाहते हो, तो मैं दायीं ओर चला जाऊंगा और यदि तुम दायीं दिशा में जाना चाहते हो, तो मैं बायीं ओर चला जाऊंगा."

10 लोत ने यरदन नदी व उसके आस-पास की हरियाली को देखा; वह चारों तरफ फैली थी और ज़ोअर की दिशा में यरदन नदी भी पानी से भरी थी. वह याहवेह का बगीचा, और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी. (यह याहवेह के द्वारा सोदोम व अमोराह को नाश करने के पहले की बात है.)

11 इसलिये लोत ने यरदन घाटी को जो, पूर्व दिशा की ओर है, चुन लिया. इस प्रकार लोत तथा अब्राम एक दूसरे से अलग हो गए.

12 अब्राम कनान देश में बस गए तथा लोत यरदन घाटी के नगरों में. लोत ने अपने तंबू सोदोम नगर के निकट खड़े किए.

13 सोदोम के पुरुष दुष्ट थे और याहवेह की दृष्टि में वे बहुत पापी थे.

14 लोत से अब्राम के अलग होने के बाद याहवेह ने अब्राम से कहा, "तुम जिस स्थान पर खड़े हो, वहां से चारों ओर देखो.

15 क्योंकि यह सारी भूमि, जो तुम्हें दिख रही है, मैं तुम्हें तथा तुम्हारे वंश को हमेशा के लिए दूंगा.

16 मैं तुम्हारे वंश को भूमि की धूल के कण के समान असंख्य बना दूंगा, तब यदि कोई इन कणों को गिन सके, तो तुम्हारे वंश को भी गिन पायेगा.

17 अब उठो, इस देश की लंबाई और चौड़ाई में चलो फिरो, क्योंकि यह मैं तुम्हें दूंगा."

18 इसलिये अब्राम ने हेब्रोन में ममरे के बांज वृक्ष के पास अपने तंबू खड़े किए और उन्होंने वहां याहवेह के लिए एक वेदी बनाई.

Genesis 14:1

1 शीनार देश के राजा अमराफेल, एलासार के राजा आरिओख, एलाम के राजा खेदोरलाओमर और गोईम के राजा तिदाल ने अपने शासनकाल में,

2 एकजुट होकर सोदोम के राजा बेरा, अमोराह के राजा बिरशा, अदमाह के राजा शीनाब, ज़ेबोईम के राजा शेमेबेर तथा बेला (अर्थात् ज़ोअर) के राजा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया.

3 ये सभी एक साथ होकर सिद्दिम घाटी (अर्थात् लवण-सागर) के पास इकट्ठे हो गए.

4 बारह वर्ष तक तो वे खेदोरलाओमर के अधीन रहे, किंतु तेरहवें वर्ष में उन्होंने विरोध किया.

5 चौदहवें वर्ष में खेदोरलाओमर तथा उसके मित्र राजाओं ने आकर अश्तेरोथ-करनाइम में रेफाइम को, हाम में ज़ुज़ीम को, शावेह-किरयथाईम में एमियों को,

6 तथा सेईर पर्वत में निर्जन प्रदेश के पास एल-पारान तक होरियों को भी हरा दिया.

Genesis 15:1

7 इसके बाद वे मुड़े और एन-मिशपत (अर्थात् कादेश) आ गए
और पूरे अमालेकियों को तथा हज़ज़ोन-तामार में रह रहे
अमोरियों को भी हरा दिया.

8 तब सोदोम, अमोराह, अदमाह, ज़ेबोईम तथा बेला (अर्थात्
ज़ोअर) के राजा बाहर निकल गए और उन्होंने सिद्दिम की
घाटी में उनके विरुद्ध युद्ध किया.

9 यह लड़ाई एलाम के राजा खेदोरलाओमर, गोईम के राजा
तिदाल, शीनार के राजा अमराफेल तथा एलासार के राजा
आरिओख—ये चार राजा उन पांच राजाओं से लड़ रहे थे.

10 सिद्दिम घाटी में सब जगह गड्ढे थे. जब सोदोम तथा अमोराह
के राजा युद्ध से भाग रहे थे, तो कुछ लोग गड्ढों में जा गिरे और
बाकी बचे लोग पर्वत पर की बस्ती में भाग गए.

11 तब चारों राजाओं ने सोदोम तथा अमोराह से सब कुछ ले
लिया और खाने का सब सामान भी ले गए.

12 वे अपने साथ अब्राम के भतीजे लोत एवं उसकी पूरी संपत्ति
भी ले गए, क्योंकि लोत उस समय सोदोम में रह रहा था.

13 और युद्ध क्षेत्र से भागकर एक व्यक्ति ने इब्री अब्राम को ये
बातें बताई. अब्राम तो उस समय ममरे नामक व्यक्ति, जो
अमोरी जाति का था, उसके बड़े बलूत पेड़ों के पास रहता था.
ममरे, एशकोल एवं ऐनर का भाई था; और इन्होंने अब्राम से
वाचा बांधी थी.

14 जब अब्राम को यह पता चला कि लोत को बंदी बना लिया
गया है, तो उसने अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और 318
जो युद्ध सीखे हुए वीर थे, साथ लेकर दान नामक स्थान तक
उनका पीछा किया.

15 रात्रि में अब्राम ने अपने लोगों को उनके ऊपर हमला करने
के लिये बांट दिया और अब्राम तथा उनके सेवकों ने उन्हें
पराजित कर दिया तथा दमेशेक के उत्तर में स्थित होबाह नगर
तक उनका पीछा किया.

16 अब्राम ने उन लोगों से सब सामान वापस ले लिया और लोत,
उसके सभी लोग और उसकी संपत्ति भी उनसे ले ली.

17 जब अब्राम खेदोरलाओमर तथा उनके मित्र राजाओं को
हरा कर लौट रहे थे, सोदोम का राजा शावेह घाटी (जिसे राजा
की घाटी भी कहा जाता है) में अब्राम से मिलने आया.

18 शालेम के राजा मेलखीज़ेदेक, जो परमेश्वर के पुरोहित थे,
भोजन एवं दाखरस लेकर आये.

19 उन्होंने अब्राम को आशीष देते हुए कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी
को बनानेवाले, परम प्रधान परमेश्वर की ओर से तुम धन्य हो,

20 धन्य हैं परम प्रधान परमेश्वर, जिन्होंने आपके शत्रुओं को
आपके अधीन कर दिया है." अब्राम ने मेलखीज़ेदेक को
सबका दशमांश दिया.

21 सोदोम के राजा ने अब्राम से कहा, "मुझे इन्सानों को दे
दीजिए, सामान सब आप रख लीजिए."

22 सोदोम के राजा को अब्राम ने उत्तर दिया, "मैंने स्वर्ग और
पृथ्वी के अधिकारी, याहवेह परमेश्वर के सामने शपथ ली है,

23 कि मैं आपकी संपत्ति में से एक भी वस्तु, यहां तक कि एक
धागा या जूती का बंधन तक न लूंगा, ताकि इन चीज़ों को देकर
आप यह न कहने लगें, 'मैंने अब्राम को धनी बनाया है.'

24 मैं आपसे कुछ नहीं लूंगा पर सिर्फ खाना, जिसे मेरे लोगों ने
खा लिया है और उनका हिस्सा, जो मेरे साथ गये थे याने ऐनर,
एशकोल तथा ममरे का हिस्सा, मैं आपको नहीं लौटाऊंगा.
उन्हें उनके हिस्सा रखने दीजिये."

Genesis 15:1

1 इन बातों के बाद अब्राम को एक दर्शन में याहवेह का यह
संदेश मिला: "अब्राम, भयभीत न हो, मैं तुम्हारी ढाल, और
तुम्हारा सबसे बड़ा प्रतिफल हूं."

2 अब्राम ने उत्तर दिया, "हे प्रभु याहवेह, आप मुझे क्या दे
सकते हैं, क्योंकि मेरी कोई संतान नहीं है, और मेरा वारिस
दमेशेक का एलिएज़र होगा?"

Genesis 16:1

3 अब्राम ने यह भी कहा, “आपकी ओर से तो मुझे कोई संतान
नहीं मिली; इसलिये मेरे घर में एक सेवक मेरा वारिस होगा.”

4 तब अब्राम के पास याहवेह का यह वचन आया, “तुम्हारा
वारिस यह दास नहीं, परंतु एक पुत्र जो तुम्हारा ही मांस और
खून है, तुम्हारा वारिस होगा.”

5 याहवेह अब्राम को बाहर ले गए और अब्राम से कहने लगे,
“आकाश की ओर देखो. और तारों की गिनती करो.” याहवेह
ने अब्राम से कहा, “ऐसे ही तुम्हारा वंश होगा, जिनको कोई
गिन नहीं पायेगा.”

6 अब्राम ने याहवेह पर विश्वास किया; याहवेह ने इस बात को
उसकी धार्मिकता मानी.

7 याहवेह ने अब्राम को आश्वासन दिया “मैं वही याहवेह हूं,
जिसने तुम्हें कसदियों के ऊर नगर से बाहर निकाला, ताकि
तुम्हें यह देश मिले और तुम इस देश पर अधिकार करे.”

8 अब्राम ने कहा, “हे प्रभु याहवेह, मैं कैसे जानूं कि आप मुझे
यह देश देंगे?”

9 इसलिये परमेश्वर ने अब्राम से कहा, “मेरे लिए तीन वर्ष की
एक कलोर, तीन वर्ष की एक बकरी, तीन वर्ष का एक मेढ़ा,
एक पिण्डुक तथा एक कबूतर का बच्चा ले आओ.”

10 अब्राम याहवेह के लिए ये सब ले आए, इन सभी चीज़ों को
काटकर दो-दो टुकड़े किए तथा हर एक टुकड़े को आमने-
सामने रख दिये, पर उन्होंने पक्षियों के टुकड़े नहीं किए.

11 इन टुकड़ों को देख गिद्ध नीचे उतर आए, किंतु अब्राम ने
उन्हें भगा दिया.

12 जब सूरज डूब रहा था, तब अब्राम गहरी नींद में सो गए और
पूरा अंधेरा हो गया.

13 तब याहवेह ने अब्राम से कहा, “यह सच है तुम्हारे वंश के
लोग पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, जहां उन्हें दास बना
लिया जाएगा, और वे उन्हें चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे.

14 फिर जिस देश के वे दास होंगे, उस देश के लोगों को मैं दंड
दूंगा, फिर तुम्हारे वंश के लोग वहां से बहुत धन लेकर
निकलेंगे.

15 पर तुम्हारा अंत बहुत शांति से होगा और तुम अपनी पूरे
बुढ़ापे की आयु में अपने पुरखों के पास दफनाए जाओगे.

16 तुम्हारा वंश, चौथी पीढ़ी में यहां फिर लौट आयेगा, क्योंकि
अमोरियों का अधर्म अब तक पूरा नहीं हुआ.”

17 शाम ढलकर रात बहुत हो गई थी तब एक अंगीठी जिससे
धुआं निकल रहा था और उसमें से एक जलता हुआ पतीला
उन टुकड़ों के बीच में से गुजरा.

18 और उसी दिन याहवेह ने अब्राम से एक वाचा बांधी और
कहा, “मैं तुम्हारे वंश को मिस्र के नदी से लेकर फरात
महानदी तक दूंगा,

19 जो कि केनी, कनिज्ज़ी, कदमोनी,

20 हित्ती, परिज्ज़ी, रेफाइम,

21 अमोरी, कनानी, गिर्गाशी तथा यबूसियों का देश है.”

Genesis 16:1

1 अब्राम की पत्नी सारय निःसंतान थी. उसकी हागार नामक
एक दासी थी, जो मिस्री थी;

2 सारय ने अब्राम से कहा, “मैं तो मां नहीं बन सकती क्योंकि
मैं बांझ हूं इसलिये कृपा करके आप मेरी दासी को स्वीकारें,
संभवतः उसके द्वारा संतान का सुख पा सकूं.” अब्राम ने सारय
के इस बात को मान लिया.

3 अब्राम को कनान देश में रहते हुए दस साल हो चुके थे.
अब्राम की पत्नी सारय ने अपनी दासी हागार को अब्राम की
पत्नी होने के लिए उनको सौंप दिया.

4 अब्राम ने हागार के साथ शारीरिक संबंध बनाए; इस प्रकार
हागार गर्भवती हुई तब हागार सारय को तुच्छ समझने लगी.

Genesis 17:1

5 सारय ने अब्राम से कहा, “मेरे साथ हो रहे उपद्रव का कारण
आप हैं. मैंने अपनी दासी को केवल वारिस पाने के लिए
आपको सौंपा था लेकिन हागार गर्भवती होते ही मुझे तुच्छ
समझने लगी. अब याहवेह ही आपके तथा मेरे बीच न्याय
करें.”

6 अब्राम ने सारय से कहा, “सुनो, तुम्हारी दासी पर तुम्हारा ही
अधिकार है. तुम जैसा चाहो उसके साथ करो.” तब सारय
हागार को तंग करने लगी. हागार परेशान होकर सारय के
सामने से भाग गई.

7 जब याहवेह के दूत ने उसे निर्जन प्रदेश में एक सोते के पास
देखा जो शूर के मार्ग पर था.

8 तब स्वर्गदूत ने उससे पूछा, “हे सारय की दासी हागार, तुम
कहां से आ रही हो? और कहां जा रही हो?” हागार ने उत्तर
दिया, “मैं अपनी स्वामिनी सारय के पास से भागकर आई हूं.”

9 याहवेह के दूत ने कहा, “अपनी स्वामिनी के पास वापस चली
जाओ और उसके अधीन में रहो.”

10 और याहवेह के दूत ने कहा, “मैं तुम्हारे वंश को बहुत
बढाऊंगा, इतना कि उनकी गिनती करना मुश्किल होगा.”

11 याहवेह के दूत ने यह भी कहा: “देखो, तुम गर्भवती होगी
और एक पुत्र को जन्म दोगी. उसका नाम तुम इशमाएल
रखना, क्योंकि याहवेह ने तुम्हारे रोना सुना है.

12 वह जंगली गधे की प्रकृति का पुरुष होगा; सभी से उसकी
दुश्मनी होगी और सबको उससे दुश्मनी होगी, और वह अपने
संबंधियों के साथ शत्रुतापूर्ण वातावरण में जीवन व्यतीत
करेगा.”

13 तब हागार ने याहवेह का जिन्होंने उससे बात की थी, यह
नाम रखा: “अत्ता-एल-रोई,” (अर्थात् आप मुझे देखनेवाला
परमेश्वर हैं) उसने यह भी कहा, “मैंने अब उसको देखा है जो
मुझे देखता है.”

14 इस घटना के कारण उस कुएं का नाम बएर-लहाई-रोई
पड़ा, जो कादेश तथा बेरेद के बीच में है.

15 अब्राम से हागार का एक बेटा हुआ तथा अब्राम ने हागार से
जन्मे अपने इस बेटे का नाम इशमाएल रखा.

16 अब्राम छियासी वर्ष के थे, जब इशमाएल पैदा हुआ.

Genesis 17:1

1 जब अब्राम निन्यानबे वर्ष के हुए तब याहवेह उन पर प्रकट
हुए और उनसे कहा, “मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; तुम मेरे
सामने विश्वासयोग्यता से चलो और निर्दोष रहो.

2 मैं अपने और तुम्हारे बीच अपना करार स्थापित करूंगा
और तुम्हारे वंश को बहुत बढ़ाऊंगा.”

3 तब अब्राम ने झुककर परमेश्वर को प्रणाम किया और
परमेश्वर ने उनसे कहा,

4 “तुम्हारे साथ मेरी वाचा यह है: तुम अनेक जातियों के
गोत्रपिता होंगे.

5 अब से तुम्हारा नाम अब्राम न रहेगा, पर अब्राहाम होगा;
क्योंकि मैंने तुम्हें अनेक जातियों का गोत्रपिता बनाया है.

6 मैं तुम्हें बहुत फलवंत करूंगा; तुम्हें जाति-जाति का मूल
बनाऊंगा, और तुम्हारे वंश में राजा पैदा होंगे.

7 मैं तेरे और आनेवाले तेरे वंश के साथ पीढ़ी-पीढ़ी की यह
वाचा बांधूंगा कि मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का
परमेश्वर रहूंगा.

8 यह कनान देश, जिसमें तुम पराये होकर रहते हो, यह देश
तुमको और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों को सदाकाल के लिये
अधिकार में दे दूंगा; और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा.”

9 परमेश्वर ने अब्राहाम से फिर कहा, “तुम और तुम्हारे बाद
तुम्हारे वंश के लोग मेरी वाचा को सच्चाई से मानते रहना.

10 तुम्हारे और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश के साथ मेरी वाचा यह
है, जिसे तुम्हें मानना ज़रूरी है: तुम्हारे बीच में प्रत्येक पुरुष
का ख़तना किया जाये.

11 और यह ख़तना तुम्हारे खलड़ी (त्वचा) का किया जाये. यही
मेरे एवं तुम्हारे बीच की गई वाचा का चिन्ह होगा.

12 तुम्हारे वंश में सभी पीढ़ियों में हर लड़के के आठ दिन के
होने पर उसका ख़तना करना, तुम्हारे घर का वह सेवक
जिसका जन्म तुम्हारे घर में हुआ है अथवा जिसे किसी परदेशी
से मूल्य देकर खरीदा गया हो, चाहे वे तुम्हारे वंश में से न हों.

13 तुम्हारे घर में पैदा हुए हों या फिर पैसा देकर खरीदे गये हों,
उन सबका ख़तना करना ज़रूरी है. तुम्हारे मांस में मेरी यह
वाचा सदाकाल की वाचा है.

14 परंतु जो पुरुष बिना ख़तना किए रहेगा, उसे समाज से
अलग कर दिया जाएगा, क्योंकि उसने मेरी वाचा को तोड़ा है."

15 परमेश्वर ने अब्राहाम से यह भी कहा, "तुम्हारी पत्नी सारय
को तुम अब सारय नहीं कहना; परंतु अब उसका नाम साराह
होगा.

16 मैं उसे आशीष दूंगा और मैं तुम्हें उसके द्वारा एक बेटा दूंगा.
मैं उसे आशीष दूंगा. जिससे वह जाति-जाति की मूलमाता
होगी; और राजाओं का जन्म उसके वंश में होगा."

17 यह सुनकर अब्राहाम ने झुककर प्रणाम किया; वह हंसने
लगा और मन में कहने लगा, "क्या सौ साल के व्यक्ति से बेटा
पैदा हो सकता है? साराह, जो नब्बे साल की है, क्या वह बेटा
जन्म दे सकती है?"

18 और अब्राहाम ने परमेश्वर से कहा, "अच्छा हो कि इशमाएल
आपसे आशीष पाये!"

19 तब परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा, "नहीं! तुम्हारी पत्नी साराह
से एक बेटा होगा, और तुम उसका नाम यित्सहाक रखना. मैं
उसके साथ ऐसी वाचा बांधूंगा, जो उसके बाद आनेवाली
पीढ़ी-पीढ़ी तक सदाकाल की वाचा होगी.

20 और इशमाएल के बारे में, मैंने तुम्हारी बात सुनी है: मैं उसे
ज़रूर आशीष दूंगा; मैं उसे फलवंत करूंगा और उसको
संख्या में बहुत बढ़ाऊंगा. वह बारह शासकों का पिता होगा,
और मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊंगा.

21 परंतु मैं अपनी वाचा यित्सहाक के साथ बांधूंगा, जिसे साराह
तेरे लिए अगले साल इसी समय जन्म देगी."

22 जब परमेश्वर अब्राहाम से अपनी बात कह चुके, तब वे चले
गए.

23 तब अब्राहाम ने उसी दिन परमेश्वर के आदेश के अनुसार
अपने पुत्र इशमाएल तथा अपने उन सेवकों का, जिनका जन्म
उनके परिवार में हुआ था या जिन्हें अब्राहाम ने धन देकर
खरीदा था, परिवार के हर एक पुरुष लेकर परमेश्वर के कहे
अनुसार उनका ख़तना किया.

24 अब्राहाम के खलड़ी के खतने के समय उनकी उम्र
निन्यानवे वर्ष थी,

25 और खतने के समय उनका पुत्र इशमाएल तेरह वर्ष का था.

26 अब्राहाम तथा उनके पुत्र इशमाएल का ख़तना एक ही दिन
किया गया.

27 और उनके परिवार के सब पुरुष, जो उनके घर में पैदा हुए
थे अथवा जो किसी विदेशी से धन देकर खरीदे गये थे, उन
सबका ख़तना उनके साथ किया गया.

Genesis 18:1

1 याहवेह ने ममरे के बांज वृक्षों के पास अब्राहाम को दर्शन
दिया, तब अब्राहाम दिन की कड़ी धूप में अपने तंबू के द्वार पर
बैठे हुए थे.

2 अब्राहाम ने आंखें ऊपर उठाकर देखा कि उनके सामने तीन
व्यक्ति खड़े हैं. जब उन्होंने इन व्यक्तियों को देखा, तब वे
उनसे मिलने के लिये तंबू के द्वार से दौड़कर उनके पास गए,
और झुककर उनको प्रणाम किया.

3 अब्राहाम ने उनसे कहा, “मेरे स्वामी, यदि मुझ पर आपकी
कृपादृष्टि हो, तो अपने सेवक के यहां रुके बिना न जाएं.

4 आप इस पेड़ के नीचे बैठिये, मैं पानी लेकर आता हूं, ताकि
आप अपने पांव धो सकें.”

5 मैं आपके लिए भोजन तैयार करता हूं, ताकि आप खाकर
तरो ताजा हो सकें और फिर अपनी आगे की यात्रा में जाएं—
क्योंकि आप अपने सेवक के यहां आए हैं. उन्होंने अब्राहाम से
कहा, “वैसा ही करो, जैसा कि तुमने कहा है.”

6 अब्राहाम जल्दी तंबू में साराह के पास गए और कहा, “तुरंत,
तीन माप मैदा गूंधकर कुछ रोटियां बनाओ.”

7 अब्राहाम दौड़कर अपने गाय-बैल के झुंड के पास गए और
एक कोमल अच्छा बछड़ा छांट कर अपने सेवक को दिया
और उससे कहा, जल्दी से खाना तैयार करो.

8 फिर अब्राहाम ने दही, दूध तथा बछड़ा जो तैयार करवाया
था, उनको खिलाया. जब वे तीनों भोजन कर रहे थे, अब्राहाम
पेड़ की छाया में उनके पास खड़े रहे.

9 उन्होंने अब्राहाम से पूछा, “तुम्हारी पत्नी साराह कहां है?”
अब्राहाम ने कहा, “वह तंबू में है.”

10 इस पर उनमें से एक ने कहा, “अगले वर्ष, इसी वसन्त ऋतु
समय में, मैं निश्चय वापस आऊंगा, तब तुम्हारी पत्नी साराह
पुत्रवती होगी.” अब्राहाम की पीठ तंबू की ओर थी, और तंबू के
द्वार पर साराह यह बात सुन रही थी.

11 अब्राहाम तथा साराह बहुत बूढ़े थे, और साराह बच्चा पैदा
करने की उम्र को पार कर चुकी थी.

12 इसलिये साराह मन ही मन हंसते हुए सोचने लगी, “मैं
कमजोर हो चुकी और मेरे स्वामी बहुत बूढ़े है, अब क्या यह
खुशी हमारे जीवन में आयेगी?”

13 तब याहवेह ने अब्राहाम से प्रश्न किया, “साराह यह कहकर
क्यों हंस रही है कि क्या मैं वास्तव में एक बच्चे को जन्म दूंगी,
जबकि मैं तो एक बूढ़ी हूं?

14 क्या याहवेह के लिए कोई काम कठिन है? मैं अगले साल
इसी निर्धारित समय तुमसे मिलने आऊंगा, तब साराह पुत्रवती
होगी.”

15 तब साराह डर गयी, और यह कहकर झूठ बोलने लगी, “मैं
नहीं हंसी थी.” तब परमेश्वर के दूत ने कहा, “तुम ज़रूर हंसी
थी.”

16 इसके बाद वे व्यक्ति जाने के लिए उठे और सोदोम की ओर
देखने लगे, अब्राहाम उनको विदा करने के लिए उनके साथ
साथ चल रहे थे.

17 तब याहवेह ने सोचा, “जो काम मैं करनेवाला हूं, क्या मैं
अब्राहाम से छिपा रखूं?

18 अब्राहाम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति होगी
तथा उससे ही पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी

19 क्योंकि मैंने उन्हें इसलिये चुना कि वे अपने बच्चों एवं घर के
लोगों को सही और न्याय की बात सिखायें और वे याहवेह के
मार्ग में स्थिर रहें, ताकि याहवेह अब्राहाम से किए गए वायदे
को पूरा करें.”

20 तब याहवेह ने बताया, “सोदोम तथा अमोराह की चिल्लाहट
बढ़ गई है, उनका पाप बहुत बढ़ गया है

21 इसलिये मैं वहां जाकर देखूंगा कि उनके काम उस
चिल्लाहट के मुताबिक बुरे हैं या नहीं. यदि नहीं, तो मैं समझ
लूंगा.”

22 फिर उनमें से दो व्यक्ति वहां से मुड़कर सोदोम की ओर
चले गए, जबकि अब्राहाम याहवेह के सामने रुके रहे.

23 अब्राहाम ने याहवेह से कहा: “क्या आप सचमुच बुरे लोगों
के साथ धर्मियों को भी नाश करेंगे?

24 यदि उस नगर में पचास धर्मी हों, तो क्या आप उस नगर को
नाश करेंगे? क्या उन पचास धर्मियों के कारण बाकी सब लोग
बच नहीं सकते?

25 इस प्रकार का काम करना आपसे दूर रहे—दुष्ट के साथ धर्मी को मार डालना, दुष्ट और धर्मी के साथ एक जैसा व्यवहार करना. ऐसा करना आपसे दूर रहे! क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?"

26 याहवेह ने कहा, "यदि मुझे सोदोम शहर में पचास धर्मी व्यक्ति मिल जाएं, तो मैं उनके कारण पूरे शहर को छोड़ दूंगा."

27 अब्राहाम ने फिर कहा: "हालाकि मैं केवल मिट्टी और राख हूं, फिर भी मैंने प्रभु से बात करने की हिम्मत की है,

28 यदि वहां पचास में से पांच धर्मी कम हो जायें, तो क्या आप पांच धर्मी कम होने के कारण पूरे नगर का नाश करेंगे?" याहवेह ने उत्तर दिया, "यदि मुझे वहां पैंतालीस भी मिल जाएं, तो मैं उस नगर को नाश नहीं करूंगा."

29 एक बार फिर अब्राहाम ने याहवेह से कहा, "यदि वहां चालीस ही धर्मी पाए जाएं तो?" याहवेह ने उत्तर दिया, "उन चालीस के कारण भी मैं नाश न करूंगा."

30 तब अब्राहाम ने कहा, "प्रभु, आप मुझ पर नाराज न होएं, पर मुझे बोलने दें. यदि वहां तीस ही धर्मी पाए जाएं तो?" याहवेह ने उत्तर दिया, "यदि मुझे वहां तीस भी मिल जाएं, तो मैं नाश न करूंगा."

31 अब्राहाम ने कहा, "प्रभु, मैंने आपसे बात करने की हिम्मत तो कर ही ली है; यह भी हो सकता है कि वहां बीस ही पाए जाएं तो?" याहवेह ने उत्तर दिया, "मैं उन बीस के कारण उस नगर को नाश न करूंगा."

32 फिर अब्राहाम ने कहा, "हे प्रभु, आप क्रोधित न हों, आखिरी बार आपसे विनती करता हूं. यदि वहां दस ही पाए जाएं तो?" याहवेह ने उत्तर दिया, "मैं उन दस के कारण उस नगर को नाश न करूंगा."

33 जब याहवेह अब्राहाम से बात कर चुके, तो वे वहां से चले गये, और अब्राहाम अपने घर वापस चला गया.

Genesis 19:1

1 संध्या होते-होते वे दो स्वर्गदूत सोदोम पहुंचे. इस समय लोत सोदोम के प्रवेश द्वार पर ही बैठे हुए थे. स्वर्गदूतों पर दृष्टि पड़ते ही लोत उनसे भेंटकरने के लिए खड़े हुए और उनको झुककर दंडवत किया.

2 और कहा, "हे मेरे प्रभुओ, आप अपने सेवक के घर पर आएं. आप अपने पैर धोकर रात्रि यहां ठहरें और तड़के सुबह अपनी यात्रा पर आगे जाएं." किंतु उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, रात तो हम यहां नगर के चौक में व्यतीत करेंगे."

3 किंतु लोत उनसे विनतीपूर्वक आग्रह करते रहे. तब वे लोत के आग्रह को स्वीकार कर उसके साथ उसके घर में चले गए. लोत ने उनके लिए भोजन, खमीर रहित रोटी, तैयार की और उन्होंने भोजन किया.

4 इसके पूर्व वे बिछौने पर जाते, नगर के पुरुष, सोदोम के लोगों ने आकर लोत के आवास को घेर लिया, ये सभी युवा एवं वृद्ध नगर के हर एक भाग से आए थे.

5 वे ऊंची आवाज में पुकारकर लोत से कहने लगे, "कहां हैं वे पुरुष, जो आज रात्रि के लिए तुम्हारे यहां ठहरे हुए हैं? उन्हें बाहर ले आओ कि हम उनसे संभोग करें."

6 लोत बाहर निकले और उन्होंने द्वार को बंद कर

7 उनसे निवेदन किया, "हे मेरे भाइयो, मेरा आग्रह है, ऐसा अनैतिक कार्य न करें.

8 देखिए, मेरी दो बेटियां हैं, जिनका संसर्ग किसी पुरुष से नहीं हुआ है. मैं उन्हें यहां बाहर ले आता हूं. आप उनसे अपनी अभिलाषा पूरी कर लीजिए; बस, इन व्यक्तियों के साथ कुछ न कीजिए, क्योंकि वे मेरे अतिथि हैं."

9 किंतु वे चिल्लाने लगे, "पीछे हट! यह परदेशी हमारे मध्य आ बसा है और देखो, अब हमारा शासक बनना चाहता है! हम तुम्हारी स्थिति उन लोगों से भी अधिक दयनीय बना देंगे." वे लोत पर दबाव डालने लगे और दरवाजे को तोड़ने के लिये आगे बढ़ने लगे.

10 पर उन अतिथियों ने हाथ बढ़ाकर लोत को आवास के
भीतर खींच लिया और द्वार बंद कर दिया.

11 उन अतिथियों ने उन सभी को, जो द्वार पर थे, छोटे से लेकर
बड़े तक, अंधा कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि द्वार
को खोजते-खोजते वे थक गए.

12 तब उन दो अतिथियों ने लोत से कहा, "यहां तुम्हारे और
कौन-कौन संबंधी हैं? दामाद, पुत्र तथा तुम्हारी पुत्रियां अथवा
इस नगर में तुम्हारे कोई भी रिश्तेदार हो, उन्हें इस स्थान से
बाहर ले जाओ,

13 क्योंकि हम इस स्थान को नष्ट करने पर हैं. याहवेह के समक्ष
उसके लोगों के विरुद्ध चिल्लाहट इतनी ज्यादा हो गई है कि
याहवेह ने हमें इसका सर्वनाश करने के लिए भेजा है."

14 लोत ने जाकर अपने होनेवाले उन दामादों से बात की,
जिनसे उनकी बेटियों की सगाई हो गई थी. उन्होंने कहा,
"उठो, यहां से निकल चलो, याहवेह इस नगर का सर्वनाश
करने पर हैं!" किंतु लोत के दामादों ने समझा कि वे मजाक
कर रहे हैं.

15 जब पौ फटने लगी, तब उन स्वर्गदूतों ने लोत से आग्रह
किया, "उठो! अपनी पत्नी एवं अपनी दोनों पुत्रियों को, जो इस
समय यहां हैं, अपने साथ ले लो, कहीं तुम भी नगर के साथ
उसके दंड की चपेट में न आ जाओ."

16 किंतु लोत विलंब करते रहे. तब उन अतिथियों ने उनका,
उनकी पत्नी तथा उनकी दोनों पुत्रियों का हाथ पकड़कर उन्हें
सुरक्षित बाहर ले गये, क्योंकि याहवेह की दया उन पर थी.

17 जब वे उन्हें बाहर ले आए, तो उनमें से एक ने उन्हें आदेश
दिया, "अपने प्राण बचाकर भागो! पलट कर मत देखना तथा
मैदान में कहीं मत रुकना! पहाड़ों पर चले जाओ, अन्यथा तुम
सभी इसकी चपेट में आ जाओगे."

18 किंतु लोत ने उनसे आग्रह किया, "हे मेरे प्रभुओ, ऐसा न
करें!

19 जब आपके सेवक ने आपकी कृपादृष्टि प्राप्त कर ही ली है
और आपने मेरे जीवन को सुरक्षा प्रदान करने के द्वारा अपनी
प्रेममय कृपा को बढ़ाया है; तो पर्वतों में जा छिपना मेरे लिए
संभव न होगा, क्योंकि इसमें इस महाविनाश से हमारा घिर
जाना निश्चित ही है तथा मेरी मृत्यु हो जाएगी.

20 तब देखिए, यहां पास में एक नगर है, जहां दौड़कर जाया
जा सकता है और यह छोटा है. कृपया मुझे वहीं जाने की
अनुमति दे दीजिए. यह बहुत छोटा नगर भी है. तब मेरा जीवन
सुरक्षित रहेगा."

21 उन्होंने लोत से कहा, "चलो, मैं तुम्हारा यह अनुरोध भी मान
लेता हूं; मैं इस नगर को, जिसका तुम उल्लेख कर रहे हो, नष्ट
नहीं करूंगा.

22 किंतु बिना देर किए, भागकर वहां चले जाओ, क्योंकि जब
तक तुम वहां पहुंच न जाओ, तब तक मैं कुछ नहीं कर
सकूंगा." (इसी कारण उस नगर का नाम ज़ोअर पड़ा.)

23 लोत के ज़ोअर पहुंचते-पहुंचते सूर्योदय हो चुका था.

24 तब याहवेह ने सोदोम तथा अमोराह पर आकाश से गंधक
एवं आग की बारिश की.

25 याहवेह ने उन नगरों को, उस संपूर्ण मैदान, भूमि के सभी
उत्पादों तथा उन नगरों के सभी निवासियों को पूरी तरह नाश
कर दिया.

26 परंतु लोत के पत्नी ने मुड़कर पीछे देखा और
परिणामस्वरूप वह नमक का खंभा बन गई.

27 अगले दिन अब्राहाम बड़े सुबह उठे और उस जगह को
गये, जहां वे याहवेह के सामने खड़े हुए थे.

28 उन्होंने सोदोम, अमोराह तथा संपूर्ण मैदान की ओर दृष्टि
की, तो उन्हें संपूर्ण प्रदेश से धुआं उठता दिखाई दिया, जो ऐसा
उठ रहा था, जैसा भट्टी का धुआं.

29 जब परमेश्वर ने मैदान के नगरों का सर्वनाश किया, तो
उन्होंने अब्राहाम को याद किया और उन्होंने लोत को उस
विपदा में से सुरक्षित बाहर निकाल लिया, उन नगरों को नाश
कर दिया, जहां लोत निवास करते थे.

30 लोत अपनी दोनों बेटियों के साथ ज़ोअर को छोड़कर पहाड़ों में रहने चले गये, क्योंकि वह ज़ोअर में रहने से डरते थे. वे और उनकी दोनों बेटियां गुफाओं में रहते थे.

31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "हमारे पिता तो बूढ़े हो गये हैं और यहां आस-पास ऐसा कोई पुरुष नहीं है, जो हमें बच्चा दे सके—जैसे कि पूरी धरती पर यह रीति है.

32 इसलिये आ, हम अपने पिता को दाखमधु पिलाएं और उनके साथ संभोग करें और अपने पिता के द्वारा अपने परिवार के वंशक्रम आगे बढ़ाएं."

33 उस रात उन्होंने अपने पिता को दाखमधु पिलाया, और बड़ी बेटी अपने पिता के पास गयी और उसके साथ सोई. लोत को यह पता न चला कि कब वह उसके साथ सोई और कब वह उठकर चली गई.

34 उसके दूसरे दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "कल रात मैं अपने पिता के साथ सोई थी. आ, आज रात उन्हें फिर दाखमधु पिलाएं, तब तुम जाकर उनके साथ सोना, ताकि हम अपने पिता के ज़रिये अपने परिवार के वंशक्रम को आगे बढ़ा सकें."

35 इसलिये उन्होंने उस रात भी अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी अपने पिता के पास गयी और उसके साथ सोई. लोत को फिर पता न चला कि कब वह उनके साथ सोई और कब वह उठकर चली गई.

36 इस प्रकार लोत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं.

37 बड़ी बेटी ने एक बेटे को जन्म दिया, और उसने उसका नाम मोआब रखा; वह आज के मोआबी जाति का गोत्रपिता है.

38 छोटी बेटी का भी एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम बेन-अम्मी रखा; वह आज के अम्मोन जाति का गोत्रपिता है.

Genesis 20:1

1 फिर अब्राहाम नेगेव देश की ओर गये तथा कादेश और शूर के बीच में रहने लगे, कुछ समय तक वे गेरार में रहे,

2 और वहां अब्राहाम ने अपनी पत्नी साराह के विषय में कहा, "वह मेरी बहन है." और गेरार के राजा अबीमेलेक ने साराह को बुलवाया तथा अपने महल में रखा.

3 परंतु एक रात परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक से कहा, "तू एक मृत व्यक्ति की तरह है, क्योंकि जिस स्त्री को तुमने ले लिया है, वह एक विवाहित स्त्री है."

4 फिर अबीमेलेक ने परमेश्वर से कहा, "हे प्रभु, क्या आप एक निर्दोष जाति को नाश करेंगे?

5 क्या अब्राहाम ने मुझसे नहीं कहा, 'वह मेरी बहन है,' और क्या साराह ने भी नहीं कहा, 'वह मेरा भाई है'? मैंने यह काम साफ विवेक और स्वच्छ मन से किया है."

6 तब स्वप्न में ही परमेश्वर ने उससे कहा, "मुझे मालूम है कि तुमने यह काम साफ मन से किया है, इसलिये मैंने तुमको मेरे विरुद्ध में पाप करने से रोक रखा है. इसी कारण से मैंने तुम्हें उसे छूने नहीं दिया है.

7 अब तुम उनकी पत्नी को उन्हें लौटा दो, क्योंकि वे एक भविष्यद्वक्ता हैं. वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे और तुम जीवित रहोगे. पर यदि तुम उनकी पत्नी को न लौटाओगे, तो तुम यह निश्चित जान लो कि तुम और तुम्हारे सारे लोग मर जायेंगे."

8 अबीमेलेक ने अगले दिन बड़े सुबह अपने सब कर्मचारियों को बुलवाया, और उन्हें सब बातें बताई, जिसे सुनकर वे बहुत डर गये.

9 तब अबीमेलेक ने अब्राहाम को भीतर बुलवाया और उनसे कहा, "तुमने हमसे ये क्या किया? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुमने मेरे और मेरे राज्य को इस मुसीबत में डाल दिया है? तुमने मेरे साथ ऐसा काम किया है जो कभी नहीं करना चाहिए."

10 अबीमेलेक ने अब्राहाम से यह भी पूछा, "ऐसा करने का कारण क्या है?"

11 अब्राहाम ने कहा, "मैंने अपने मन में सोचा, 'इस नगर में निश्चित रूप से कोई परमेश्वर से नहीं डरता, और वे लोग मुझे मेरी पत्नी के कारण मार डालेंगे.'

12 इसके बावजूद, वह सही में मेरी बहन ही है, मेरे पिता की बेटी है, पर मेरी मां की बेटी नहीं है; और वह मेरी पत्नी हो गई.

13 और जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने को कहा, तब मैंने ही अपनी पत्नी से यह कहा, 'तुम इस प्रकार से अपना प्रेम मेरे प्रति दिखा सकती हो: जहां भी हम जाएं, तुम मेरे बारे में यही कहना, "यह मेरा भाई है." ' "

14 तब अबीमेलेक ने भेड़, बछड़े, सेवक तथा सेविकाएं लाकर अब्राहाम को दिया, और उनकी पत्नी साराह को भी उन्हें लौटा दिया.

15 और अबीमेलेक ने अब्राहाम से कहा, "मेरा पूरा देश तुम्हारे सामने है; तुम जहां चाहे, वहां रह सकते हो."

16 साराह से उसने कहा, "मैं तुम्हारे भाई को चांदी के एक हजार टुकड़े दे रहा हूं. यह तेरे साथ के लोगों के सामने उस अपराध की भरपाई है, जिसे मैंने तेरे विरुद्ध किया है; तू पूरी तरह से निर्दोष है."

17 तब अब्राहाम ने परमेश्वर से प्रार्थना की, और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नी तथा उसकी सेविकाओं को चंगा किया कि वे फिर से संतान पैदा करने लगें,

18 क्योंकि याहवेह ने अब्राहाम की पत्नी साराह के कारण अबीमेलेक के परिवार की सभी स्त्रियों की कोखों को बंद कर दिया था.

Genesis 21:1

1 याहवेह ने अपने कहे वचन के मुताबिक साराह पर अनुग्रह किया, और उन्होंने साराह से जो वायदा किया था, उसे पूरा किया.

2 साराह गर्भवती हुई और उसने अब्राहाम के बुढ़ापे में, परमेश्वर के नियुक्त किए गये समय में एक बेटे को जन्म दिया.

3 अब्राहाम ने साराह से जन्मे इस पुत्र का नाम यित्सहाक रखा.

4 जब उसका बेटा यित्सहाक आठ दिन का हुआ, तब अब्राहाम ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका ख़तना किया.

5 यित्सहाक के जन्म के समय अब्राहाम की आयु एक सौ वर्ष की थी.

6 साराह ने कहा, "मुझे परमेश्वर ने हंसी से भर दिया और जो कोई यह बात सुनेगा, वह भी मेरे साथ हंसेगा."

7 और उसने यह भी कहा, "अब्राहाम से कौन कहता था कि साराह बच्चे को दूध पिला पायेगी? किंतु मैंने उनके बुढ़ापे में उनको एक पुत्र दिया."

8 साराह का बेटा बड़ा होता गया और उसका दूध छुड़ाया गया, और जिस दिन यित्सहाक का दूध छुड़ाया गया, उस दिन अब्राहाम ने एक बड़ा भोज दिया.

9 पर साराह ने देखा कि मिस्री हागार का बेटा, जो अब्राहाम से जन्मा था, उपहास कर रहा है,

10 तो साराह ने अब्राहाम से कहा, "इस दासी तथा इसके पुत्र को यहां से निकाल दो, क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र यित्सहाक के साथ वारिस कभी नहीं हो सकता."

11 इस बात ने अब्राहाम को बहुत दुखित कर दिया, क्योंकि यह बात अपने पुत्र इशमाएल के सम्बन्ध में थी.

12 किंतु परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा, "उस लड़के और दासी के बारे में सोचकर परेशान मत हो जो कुछ साराह तुमसे कहे, उसे सुन लो क्योंकि तुम्हारे वंशज यित्सहाक के माध्यम से नामित होंगे.

13 दासी के पुत्र से भी मैं एक जाती बनाऊंगा, क्योंकि वह तुम्हारा है."

14 तब अब्राहाम ने जल्दी उठकर खाना और पानी देकर हागार और उसके पुत्र को वहां से चले जाने को कहा हागार वहां से निकल गई और बेअरशेबा के सुनसान रास्ते में भटकती रही.

Genesis 22:1

15 और जब पानी खत्म हो गया, उसने अपने बेटे को एक झाड़ी
की छांव में लेटा दिया.

16 वह स्वयं एक तीर की दूरी में जाकर बैठ गई, क्योंकि वह
सोच रही थी, "मैं अपने बेटे का रोना और उसकी परेशानी नहीं
देख पाऊंगी." और वहां बैठते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी.

17 परमेश्वर ने उस बेटे का रोना सुना और स्वर्ग से परमेश्वर के
दूत ने हागार से पूछा, "हे हागार, क्या हुआ तुम्हें? डरो मत;
क्योंकि जहां तेरा बेटा पड़ा है, वहां से परमेश्वर ने उसके रोने
को सुन लिया हैं.

18 अब उठो, अपने बेटे को उठाओ, क्योंकि मैं उससे एक बड़ी
जाति बनाऊंगा."

19 यह कहते हुए परमेश्वर ने हागार को एक कुंआ दिखाया.
उसने उस कुएं से पानी लेकर अपने बेटे को पिलाया.

20 वह बेटा परमेश्वर के अनुग्रह से बड़ा हो गया और वह
धनुर्धारी बना.

21 वह पारान के निर्जन देश में रहता था. उसकी माता ने उसके
लिए मिस्र देश से ही शादी के लिए लड़की ढूंढ़ ली.

22 अबीमेलेक तथा उसकी सेना के सेनापति फीकोल ने
अब्राहाम से कहा, "आपके सब कामों में परमेश्वर की आशीष
रही है.

23 इसलिये आप हमसे वायदा कीजिये कि आप मुझे, मेरे
वंशजों से अथवा मेरी भावी पीढ़ियों से कभी धोखा नहीं करेंगे,
लेकिन आप हम सब पर दया करना-जैसा मैंने आपसे किया
था."

24 अब्राहाम ने कहा, "मैं आपसे वायदा करता हूं."

25 और अब्राहाम ने अबीमेलेक से उस कुएं के विषय में कहा,
जिसे अबीमेलेक के सेवकों ने ले लिया था.

26 अबीमेलेक ने उत्तर दिया, "न तो आपने मुझे इसके विषय
में कभी बताया, न आज तक मैंने इस विषय में सुना है और न
मुझे यह बात मालूम है."

27 अब्राहाम ने अबीमेलेक को भेंट में भेड़ें एवं बछड़े दिए तथा
दोनों ने वायदा किया.

28 फिर अब्राहाम ने सात मेमनों को अलग किया,

29 अबीमेलेक ने अब्राहाम से पूछा, "क्या मतलब है इन सात
मेमनों को अलग करने का?"

30 अब्राहाम ने कहा, "कि आप ये सात मेमने लें ताकि यह
हमारे बीच सबूत होगा, कि यह कुंआ मैंने खोदा है."

31 इसलिये अब्राहाम ने उस स्थान का नाम बेअरशेबा रखा,
क्योंकि यहां उन दोनों ने यह शपथ ली थी.

32 अतः उन दोनों ने बेअरशेबा में यह वाचा स्थापित की. फिर
अबीमेलेक तथा उसका सेनापति फीकोल फिलिस्तिया देश
चले.

33 अब्राहाम ने बेअरशेबा में एक झाऊ का पेड़ लगाया और
वहां उसने याहवेह, सनातन परमेश्वर की आराधना की.

34 और बहुत समय तक अब्राहाम फिलिस्तिया देश में रहा.

Genesis 22:1

1 कुछ समय के बाद, परमेश्वर ने अब्राहाम की परीक्षा ली.
परमेश्वर ने उनसे कहा, "हे अब्राहाम!" उन्होंने उत्तर दिया, "हे
प्रभु! मैं यहां हूं."

2 परमेश्वर ने कहा, "अपने एकलौते पुत्र यित्सहाक को, जो तुम्हें
प्रिय है, साथ लेकर मोरियाह देश को जाओ. वहां उसे एक
पर्वत पर, जिसे मैं बताऊंगा, होमबलि करके चढ़ाओ."

3 अगले दिन अब्राहाम ने सुबह जल्दी उठकर अपने गधे पर
काठी कसी. उन्होंने अपने साथ दो सेवकों तथा अपने पुत्र
यित्सहाक को लिया. जब उन्होंने होमबलि के लिये पर्याप्त

Genesis 22:1

लकड़ी काट ली, तब वे उस स्थान की ओर चले, जिसके बारे
में परमेश्वर ने उन्हें बताया था.

4 तीसरे दिन अब्राहाम ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और दूर
से उस जगह को देखा.

5 अब्राहाम ने अपने सेवकों से कहा, "गधे के साथ यहीं रुको.
मैं और मेरा बेटा वहां जायेंगे और परमेश्वर की आराधना
करके तुम्हारे पास लौट आएंगे."

6 अब्राहाम ने होमबलि के लिए तैयार की गई लकड़ियां लीं
और यित्सहाक को पकड़ा दिया और स्वयं आग एवं छुरा ले
लिया. जब दोनों आगे जा रहे थे,

7 तब यित्सहाक ने अपने पिता अब्राहाम से पूछा, "पिताजी?"
अब्राहाम ने उत्तर दिया, "हां, बेटा?" यित्सहाक ने कहा, "आग
और लकड़ी तो यहां है, पर होमबलि के लिए मेमना कहां है?"

8 अब्राहाम ने जवाब दिया, "हे मेरे पुत्र, परमेश्वर खुद होमबलि
के लिये मेमने का इंतजाम करेंगे." और वे दोनों एक साथ आगे
बढ़ गये.

9 जब वे उस स्थल पर पहुंचे, जिसे परमेश्वर ने उन्हें बताया था,
तब वहां अब्राहाम ने एक वेदी बनाई और उस पर लकड़ियां
रखीं. उन्होंने अपने पुत्र यित्सहाक को बांधकर उसे उन
लकड़ियों के ऊपर वेदी पर लिटा दिया.

10 फिर अब्राहाम ने अपने बेटे को मार डालने के लिये हाथ में
छुरा लिया.

11 पर स्वर्ग से याहवेह के दूत ने उन्हें पुकारकर कहा, "हे
अब्राहाम! हे अब्राहाम!" अब्राहाम ने कहा, "हे प्रभु! मैं यहां हूं."

12 याहवेह ने कहा, "उस लड़के पर हाथ मत उठाओ; उसे
कुछ मत करो. अब मुझे यह मालूम हो चुका है कि तुम
परमेश्वर का भय मानते हो, क्योंकि तुम मेरे लिये अपने
एकलौते पुत्र तक को बलिदान करने के लिये तैयार हो गये."

13 उसी समय अब्राहाम ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं तो झाड़ी
में एक मेढ़ा दिखा जिसका सींग झाड़ी में फंसा हुआ था.
अब्राहाम जाकर उस मेढ़े को लाए और अपने पुत्र के बदले में
उसे होमबलि चढ़ाए.

14 अब्राहाम ने उस जगह का नाम "याहवेह यिरेह" रखा
अर्थात् याहवेह उपाय करनेवाले. इसलिये आज भी यह कहा
जाता है, "याहवेह के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा."

15 फिर स्वर्ग से याहवेह के दूत ने दूसरी बार अब्राहाम को
पुकारकर कहा,

16 "याहवेह अपनी ही शपथ खाकर कहते हैं, क्योंकि तुमने
यह किया है और अपने एकलौते पुत्र तक को बलिदान करने
के लिये तैयार हो गये,

17 तो मैं निश्चय रूप से तुम्हें आशीष दूंगा और तुम्हारे वंश
को आकाश के तारे और समुद्र के बालू के कण के समान
अनगिनत करूंगा. तुम्हारा वंश अपने शत्रुओं के शहरों को
अपने अधिकार में ले लेगा,

18 और तुम्हारे वंश के ज़रिये पृथ्वी की सारी जातियां आशीष
पाएंगी, क्योंकि तुमने मेरी बात को माना है."

19 तब अब्राहाम अपने सेवकों के पास लौट आये और वे सब
बेअरशेबा चले गए. और अब्राहाम बेअरशेबा में रहने लगे.

20 कुछ समय के बाद, अब्राहाम को यह बताया गया,
"मिलकाह भी मां बन गई है; उसने तुम्हारे भाई नाहोर के लिये
बेटों को जन्म दिया है:

21 बड़ा बेटा उज़, उसका भाई बुज़, केमुएल (अराम का
पिता),

22 फिर केसेद, हाज़ो, पिलदाश, यिदलाफ तथा बेथुएल."

23 बेथुएल रेबेकाह का पिता हुआ. अब्राहाम के भाई नाहोर से
मिलकाह के द्वारा ये आठ पुत्र पैदा हुए.

24 नाहोर की रखैल रियूमाह के भी ये पुत्र हुए: तेबाह, गाहम,
ताहाश तथा माकाह.

Genesis 23:1

1 साराह एक सौ सत्ताईस वर्ष की हुई.

2 तब उसकी मृत्यु किरयथ-अरबा (अर्थात् हेब्रोन) में हुई, जो
कनान देश में है. अब्राहाम साराह के लिए विलाप किया और
रोया.

3 तब अब्राहाम ने अपनी पत्नी के शव के पास से उठकर
हित्तियों से कहा;

4 "मैं तो तुम्हारे बीच एक परदेशी और अजनबी हूं. मुझे
कब्रस्थान के लिये बिक्री में कुछ ज़मीन दीजिये ताकि मैं अपने
मृत लोगों को गाड़ सकूं."

5 हित्तियों ने अब्राहाम से कहा,

6 "महोदय, आप हमारी बात सुनें. आप हमारे बीच में एक बड़े
प्रधान हैं. आप जहां चाहें अपनी पत्नी को हमारे अच्छे कब्रों में
गाड़ सकते हैं. हममें से कोई भी आपको अपनी पत्नी को
गाड़ने के लिये अपनी कब्र देने से मना नहीं करेगा."

7 तब अब्राहाम उठे और उस देश के लोगों को अर्थात् हित्तियों
को झुककर प्रणाम किया

8 और उनसे कहा, "यदि आप चाहते हैं कि मैं अपनी पत्नी को
मिट्टी दूं, तब मेरी एक बात और मान लीजिये और आप ज़ोहार
के पुत्र एफ्रोन से मेरी तरफ से बात कीजिये

9 ताकि वह माखपेलाह की गुफा को, जो उसकी है और उसके
खेत की आखिरी छोर में है, दाम लेकर मुझे बेच दे. उससे
कहिये कि वह उस जगह का पूरा दाम लेकर मुझे बेच दे ताकि
वह तुम्हारे बीच में हमारे लिये एक कब्रस्थान की जगह हो."

10 हित्ती एफ्रोन अपने लोगों के साथ वहां बैठा था. जो हित्ती
उसके शहर के फाटक पर एकत्रित हुए थे, उनके सामने
एफ्रोन ने अब्राहाम से कहा,

11 "हे मेरे स्वामी; मेरी बात सुनिये; मैं आपको वह गुफा खेत
सहित मेरे संबंधियों के सामने दे रहा हूं. आप इसमें अपनी
पत्नी को गाड़ दीजिये."

12 अब्राहाम ने फिर से उन लोगों को झुककर प्रणाम किया

13 और लोगों के सुनते में एफ्रोन से कहा, "मेरी बात सुनिये,
आपको मैं उस खेत का दाम चुकाऊंगा, आप इसे स्वीकार
कर लीजिये ताकि मैं अपनी पत्नी को वहां गाड़ सकूं."

14 यह सुन एफ्रोन ने अब्राहाम से कहा,

15 "हे मेरे स्वामी, मेरी बात सुनिये; इस खेत का दाम सिर्फ चार
सौ शेकेल चांदी है, पर यह आपके और मेरे लिए कुछ नहीं है.
आप अपनी पत्नी को मिट्टी दे दीजिये."

16 अब्राहाम ने एफ्रोन की बात मानकर उसको उतने मूल्य की
चांदी तौलकर दे दी, जितना उसने हित्तियों के सुनते में कहा
था: चार सौ शेकेल चांदी जो उस समय व्यापारियों के बीच में
चलती थी.

17 इसलिये उन्होंने एफ्रोन का वह खेत और गुफा, जो
माखपेलाह में ममरे के पास था, और खेत के सभी पेड़ जो
उसमें और उसके चारों ओर सीमा के अंदर थे,

18 सब अब्राहाम को दे दिया. जितने हित्ती शहर के फाटक पर
एकत्रित हुए थे, उन सभों के सामने वह संपत्ति अब्राहाम के
अधिकार में पक्की रीति से आ गई.

19 उसके बाद अब्राहाम ने अपनी पत्नी साराह को माखपेलाह
के खेत की गुफा में गाड़ दिया, जो कनान देश में ममरे के पास
(अर्थात् हेब्रोन) में था.

20 इस प्रकार हित्तियों के द्वारा वह खेत और उसमें की गुफा
कब्रस्थान के रूप में अब्राहाम के अधिकार में दे दी गई.

Genesis 24:1

1 अब्राहाम बहुत बूढ़े हो गये थे, और याहवेह ने उन्हें सब
प्रकार से आशीषित किया था.

Genesis 24:1

2 अब्राहाम ने अपने पुराने सेवक से, जो घर की और पूरे संपत्ति
की देखभाल करता था, कहा, "तुम अपना हाथ मेरी जांघ के
नीचे रखो.

3 मैं चाहता हूं कि तुम स्वर्ग एवं पृथ्वी के परमेश्वर याहवेह की
शपथ खाओ कि तुम इन कनानियों की पुत्रियों में से, जिनके
बीच हम रह रहे हैं, मेरे बेटे की शादी नहीं कराओगे,

4 परंतु तुम मेरे देश में मेरे रिश्तेदारों में से मेरे बेटे यित्सहाक
के लिए पत्नी लाओगे."

5 उस सेवक ने अब्राहाम से पूछा, "उस स्थिति में मैं क्या करूं,
जब वह स्त्री इस देश में आना ही न चाहे; क्या मैं आपके पुत्र
को उस देश में ले जाऊं, जहां से आप आए हैं?"

6 इस पर अब्राहाम ने कहा, "तुम मेरे पुत्र को वहां कभी नहीं
ले जाना.

7 याहवेह, जो स्वर्ग के परमेश्वर हैं, जो मुझे मेरे पिता के परिवार
और मेरी जन्मभूमि से लाये हैं और जिन्होंने शपथ खाकर
मुझसे यह वायदा किया, 'यह देश मैं तुम्हारे वंश को दूंगा'—वे
ही स्वर्गदूत को तुम्हारे आगे-आगे भेजेंगे और तुम मेरे पुत्र के
लिए वहां से एक पत्नी लेकर आओगे.

8 अगर कन्या तुम्हारे साथ आने के लिए मना करे, तब तुम मेरी
इस शपथ से मुक्त हो जाओगे. लेकिन ध्यान रखना कि तुम
मेरे पुत्र को वापस वहां न ले जाना."

9 इसलिये उस सेवक ने अपने स्वामी अब्राहाम की जांघ के
नीचे अपना हाथ रखा और इस बारे में शपथ खाकर अब्राहाम
से वायदा किया.

10 तब उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंट के झुंड में से दस
ऊंटों को लिया और उन पर अपने स्वामी की ओर से विभिन्न
उपहार लादा और नाहोर के गृहनगर उत्तर-पश्चिम
मेसोपोतामिया की ओर प्रस्थान किया.

11 नगर के बाहर पहुंचकर उसने ऊंटों को कुएं के पास बैठा
दिया; यह शाम का समय था. इसी समय स्त्रियां पानी भरने
बाहर आया करती थीं.

12 तब सेवक ने प्रार्थना की, "याहवेह, मेरे स्वामी अब्राहाम के
परमेश्वर, मेरे काम को सफल करें और मेरे स्वामी अब्राहाम
पर दया करें.

13 आप देख रहे हैं कि मैं इस पानी के सोते के निकट खड़ा हूं,
और इस नगरवासियों की कन्याएं पानी भरने के लिए
निकलकर आ रही हैं.

14 आप कुछ ऐसा कीजिए कि जिस कन्या से मैं यह कहूं,
'अपना घड़ा झुकाकर कृपया मुझे पानी पिला दे,' और वह
कन्या कहे, 'आप पानी पी लीजिए, और फिर मैं आपके ऊंटों
को भी पानी पिला दूंगी'—यह वही कन्या हो जिसे आपने
अपने सेवक यित्सहाक के लिए चुना है. इसके द्वारा मुझे यह
विश्वास हो जाएगा कि आपने मेरे स्वामी पर अपनी करुणा
दिखाई है."

15 इसके पूर्व कि उसकी प्रार्थना खत्म होती, रेबेकाह नगर के
बाहर अपने कंधे पर घड़ा लेकर पानी भरने आई. वह
मिलकाह के पुत्र बेथुएल की पुत्री थी और मिलकाह अब्राहाम
के भाई नाहोर की पत्नी थी.

16 रेबेकाह बहुत सुंदर थी, कुंवारी थी; अब तक किसी पुरुष
से उसका संसर्ग नहीं हुआ था. वह नीचे सोते पर गई, अपना
घड़ा पानी से भरा और फिर ऊपर आ गई.

17 सेवक दौड़कर उसके निकट आया और उससे कहा,
"कृपया अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी पिला दो."

18 रेबेकाह ने कहा, "हे मेरे प्रभु लीजिए, पीजिये" और उसने
तुरंत घड़े को नीचे करके उसे पानी पिलाया.

19 जब वह सेवक को पानी पिला चुकी, तब रेबेकाह ने उससे
कहा, "मैं आपके ऊंटों के लिए भी पानी लेकर आती हूं, जब
तक वे पूरे तृप्त न हो जाएं."

20 उसने बिना देर किए घड़े का पानी हौदे में उंडेलकर वापस
सोते पर और पानी भरने गई, और उसके सारे ऊंटों के लिये
पर्याप्त पानी ले आई.

21 जब यह सब हो रहा था, बिना एक शब्द कहे, उस सेवक
ध्यान से रेबेकाह को देखकर सोच रहा था कि याहवेह ने
उसकी यात्रा को सफल किया है या नहीं.

22 जब ऊंटों ने पानी पी लिया, तब सेवक ने आधा शेकेल सोने
की एक नथ और दस शेकेल सोने के दो कंगन निकाला.

23 और रेबेकाह को देकर उससे पूछा, "तुम किसकी बेटी हो?
कृपया मुझे बताओ, क्या तुम्हारे पिता के घर में इस रात ठहरने
के लिए जगह है?"

24 रेबेकाह ने उत्तर दिया, "मैं नाहोर तथा मिलकाह के पुत्र
बेथुएल की बेटी हूं."

25 और उसने यह भी कहा, "हमारे यहां घास और चारा बहुत
है, और रात में ठहरने के लिये जगह भी है."

26 तब उस सेवक ने झुककर और यह कहकर याहवेह की
आराधना की,

27 "धन्य हैं याहवेह, मेरे स्वामी अब्राहाम के परमेश्वर, जिन्होंने
मेरे स्वामी के प्रति अपने प्रेम और करुणा को नहीं हटाया.
याहवेह मुझे सही जगह पर लाये जो मेरे स्वामी के रिश्तेदारों
का ही घर है."

28 वह कन्या दौड़कर अपने घर गई और अपनी माता के घर
के लोगों को सब बातें बताई.

29 रेबेकाह के भाई लाबान दौड़कर कुएं के पास गए जहां
सेवक था.

30 जब उसने नथ और अपनी बहन के हाथों में कंगन देखा
और जो बात सेवक ने कही थी, उसे सुनी, तब वह उस सेवक
के पास गया, और देखा कि वह सेवक सोते के निकट ऊंटों
के बाजू में खड़ा है.

31 लाबान ने सेवक से कहा, "हे याहवेह के आशीषित जन, मेरे
साथ चलिए! आप यहां बाहर क्यों खड़े हैं? मैंने घर को, और
ऊंटों के ठहरने के लिये भी जगह तैयार की है."

32 वह सेवक लाबान के साथ घर आया और ऊंटों पर से
सामान उतारा गया. ऊंटों के लिये पैंरा और चारा लाया गया.
सेवक तथा उसके साथ के लोगों के लिये पैर धोने हेतु पानी
दिया गया.

33 तब सेवक को खाना दिया गया, पर उसने कहा, "मैं तब तक
भोजन न करूंगा, जब तक कि मैं अपने आने का प्रयोजन न
बता दूं." लाबान ने कहा, "ठीक है, बता दें."

34 तब उसने कहा, "मैं अब्राहाम का सेवक हूं.

35 याहवेह ने मेरे स्वामी को बहुत आशीष दी हैं, जिससे वे
धनवान हो गए हैं. याहवेह ने उन्हें बहुत भेड़-बकरी और पशु,
सोना और चांदी, सेवक और सेविकाएं तथा ऊंट और गधे दिये
हैं.

36 मेरे स्वामी की पत्नी साराह को वृद्धावस्था में एक बेटा पैदा
हुआ, और अब्राहाम ने उसे अपना सब कुछ दे दिया है.

37 और मेरे स्वामी ने मुझे शपथ दिलाकर कहा, 'तुम मेरे पुत्र
की पत्नी बनने के लिए कनानियों की किसी बेटी को, जिनके
बीच मैं रहता हूं, न लाना,

38 पर तुम मेरे पिता के परिवार, मेरे अपने वंश में जाना, और
मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी लाना.'

39 "तब मैंने अपने स्वामी से पूछा, 'यदि वह युवती मेरे साथ
आना नहीं चाहेगी, तब क्या?'

40 "मेरे स्वामी ने कहा, 'याहवेह, जिनके सामने मैं ईमानदारी
से चलता आया हूं, वे अपने स्वर्गदूत को तुम्हारे साथ भेजेंगे
और तुम्हारी यात्रा को सफल करेंगे, ताकि तुम मेरे पुत्र के लिए
मेरे अपने वंश और मेरे पिता के परिवार से एक पत्नी ला सको.

41 तुम मेरे इस शपथ से तब ही छूट पाओगे, जब तुम मेरे वंश
के लोगों के पास जाओगे, और यदि वे उस कन्या को तुम्हारे
साथ भेजने के लिए मना करें—तब तुम मेरे शपथ से छूट
जाओगे.'

42 “आज जब मैं कुएं के पास पहुंचा, तो मैंने यह प्रार्थना की,
‘याहवेह, मेरे स्वामी अब्राहाम के परमेश्वर, मैं जिस उद्देश्य से
यहां आया हूं, वह काम पूरा हो जाये.

43 देखिये, मैं इस कुएं के किनारे खड़ा हूं. यदि कोई कन्या
निकलकर पानी भरने के लिये आती है और मैं उससे कहता
हूं, “कृपा करके मुझे अपने घड़े से थोड़ा पानी पिला दे,”

44 और यदि वह मुझसे कहती है, “पीजिये, और मैं आपके
ऊंटों के लिये भी पानी लेकर आती हूं,” तो वह वही कन्या हो,
जिसे याहवेह ने मेरे मालिक के बेटे के लिये चुना है.’

45 “इसके पहले कि मैं अपने मन में यह प्रार्थना खत्म करता,
रेबेकाह अपने कंधे पर घड़ा लिये निकलकर आई. वह नीचे
सोते के पास जाकर पानी भरने लगी, और मैंने उससे कहा,
‘कृपया मुझे थोड़ा पानी पिला दो.’

46 “तब उसने तुरंत अपने कंधे में से घड़े को झुकाकर कहा,
‘पी लीजिये, और फिर मैं आपके ऊंटों को भी पानी पिला दूंगी.’
तब मैंने पानी पिया, और उसने ऊंटों को भी पानी पिलाया.

47 “तब मैंने उससे पूछा, ‘तुम किसकी बेटी हो?’ “उसने कहा,
‘मैं बेथुएल की बेटी हूं, जो नाहोर तथा मिलकाह के पुत्र है.’
“तब मैंने उसके नाक में नथ तथा उसके हाथों में कंगन पहना
दिए,

48 और मैंने झुककर याहवेह की आराधना की. मैंने याहवेह,
अपने मालिक अब्राहाम के परमेश्वर की महिमा की, जिन्होंने
मुझे सही मार्ग में अगुवाई की, ताकि मैं अपने मालिक के भाई
की नतनिन को अपने मालिक के बेटे के लिये पत्नी के रूप में
ले जा सकूं.

49 इसलिये अब, यदि आप मेरे मालिक के प्रति दया और
सच्चाई दिखाना चाहते हैं, तो मुझे बताईये; और यदि नहीं, तो
वह भी बताईये, कि किस रास्ते पर मुड़ना है.”

50 यह सब सुनकर लाबान एवं बेथुएल ने कहा, “यह सब
याहवेह की ओर से हुआ है; हम तुमसे अच्छा या बुरा कुछ नहीं
कह सकते.

51 रेबेकाह तुम्हारे सामने है; इसे अपने साथ ले जाओ, ताकि
वह तुम्हारे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए, जैसा कि याहवेह ने
निर्देश दिया है.”

52 उनकी बातों को सुनकर अब्राहाम के सेवक ने भूमि पर
झुककर याहवेह को दंडवत किया.

53 तब सेवक ने सोने और चांदी के गहने तथा वस्त्र निकालकर
रेबेकाह को दिए; उसने रेबेकाह के भाई और उसकी माता
को भी बहुमूल्य वस्तुएं दी.

54 फिर उसने तथा उसके साथ के लोगों ने खाया पिया और
वहां रात बिताई. अगले दिन सुबह जब वे सोकर उठे तो सेवक
ने कहा, “मुझे अपने स्वामी के पास वापस जाने के लिए विदा
कीजिये.”

55 पर रेबेकाह के भाई और उसकी मां ने कहा, “कन्या को
हमारे साथ कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन रहने दो;
तब उसे ले जाना.”

56 पर सेवक ने उनसे कहा, “मुझे मत रोकिए; क्योंकि याहवेह
ने मेरी इस यात्रा को सफल किया है. मुझे अपने स्वामी के पास
लौट जाने के लिये विदा कीजिए.”

57 तब उन्होंने कहा, “हम रेबेकाह को बुलाकर इसके बारे में
उससे पूछते हैं.”

58 तब उन्होंने रेबेकाह को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तुम इस
व्यक्ति के साथ जाओगी?” उसने कहा, “हां, मैं जाऊंगी.”

59 इसलिये उन्होंने अपनी बहन रेबेकाह को उसकी
परिचारिका और अब्राहाम के सेवक और उसके लोगों के
साथ विदा किया.

60 और उन्होंने रेबेकाह को आशीर्वाद देते हुए कहा, “हे हमारी
बहन, तुम्हारा वंश हजारों हजार की संख्या में बढ़े; तुम्हारा वंश
अपने शत्रुओं के नगर पर अधिकार करने पाये.”

61 तब रेबेकाह और उसकी परिचारिकाएं तैयार हुईं और
ऊंटों पर चढ़कर उस व्यक्ति के साथ गईं और वह सेवक
रेबेकाह को लेकर रवाना हो गया.

62 यित्सहाक बएर-लहाई-रोई से आकर अब नेगेव में निवास
कर रहे थे.

63 एक शाम जब वे चिंतन करने मैदान में गये थे, तब उन्होंने
ऊंटों को आते हुए देखा.

64 रेबेकाह ने भी आंख उठाकर यित्सहाक को देखा और वह
अपने ऊंट पर से नीचे उतरी

65 और सेवक से पूछा, "मैदान में वह कौन व्यक्ति है, जो हमसे
मिलने आ रहे हैं?" सेवक ने उत्तर दिया, "वे मेरे स्वामी हैं." यह
सुनकर रेबेकाह ने अपना घूंघट लिया और अपने आपको ढांप
लिया.

66 तब सेवक ने यित्सहाक को वे सब बातें बताई, जो उसने
किया था.

67 तब यित्सहाक रेबेकाह को अपनी मां साराह के तंबू में ले
आया, और उसने रेबेकाह से शादी की. वह उसकी पत्नी हो
गई, और उसने उससे प्रेम किया; इस प्रकार यित्सहाक को
उसकी माता की मृत्यु के बाद सांत्वना मिली.

Genesis 25:1

1 अब्राहाम ने केतुराह नामक एक और स्त्री से विवाह कर
लिया था.

2 उससे अब्राहाम के जो पुत्र हुए, उनका नाम था ज़िमरान,
योकशान, मेदान, मिदियान, इशबक और शुआह.

3 योकशान शीबा तथा देदान के पिता थे. देदान के वंश में
असशुरिम, लेतुशिम तथा लेउम्मिम लोगों का जन्म हुआ.

4 मिदियान के पुत्र: एफाह, एफ़र, हनोख, अविदा तथा एलदाह
थे. ये सब केतुराह से पैदा हुए थे.

5 अब्राहाम ने अपनी पूरी संपत्ति यित्सहाक को सौंप दी थी.

6 किंतु अब्राहाम ने अपनी रखैलों की संतानों को अपने
जीवनकाल में ही उपहार देकर उन्हें अपने पुत्र यित्सहाक से
दूर पूर्व के देश में भेज दिया था.

7 अब्राहाम की उम्र एक सौ पचहत्तर साल की थी.

8 तब अब्राहाम ने अपनी पूरी वृद्धावस्था में आखिरी सांस ली,
एक वृद्ध व्यक्ति के रूप में उनकी पूरी आयु में मृत्यु हुई; और
वे अपने लोगों में जा मिले.

9 उनके पुत्र यित्सहाक और इशमाएल ने उन्हें ममरे के पास
माखपेलाह के गुफा में मिट्टी दी, जो हित्ती ज़ोहार के पुत्र एफ्रोन
के खेत में थी,

10 यह वही खेत था, जिसे अब्राहाम ने हित्तियों से खरीदा था.
वहां उनकी पत्नी साराह के पास अब्राहाम दफनाया गया.

11 अब्राहाम की मृत्यु के बाद, परमेश्वर ने उनके पुत्र यित्सहाक
को आशीष दी, जो उस समय बएर-लहाई-रोई में रहता था.

12 अब्राहाम के पुत्र इशमाएल, जो साराह के मिस्र की दासी
हागार से पैदा हुआ था, उसकी वंशावली इस प्रकार है.

13 जन्म के अनुसार इशमाएल के बेटों का नाम इस प्रकार है:
इशमाएल का बड़ा बेटा नेबाइयोथ, फिर केदार, अदबील,
मिबसाम,

14 मिशमा, दूमाह, मास्सा,

15 हदद, तेमा, येतुर, नाफिश और केदेमाह.

16 ये इशमाएल के पुत्र थे, और ये उन बारह जाति के प्रधानों
के नाम हैं जो उनके बंदोबस्त और छावनियों के अनुसार रखे
गये.

17 इशमाएल एक सौ सैंतीस वर्ष तक जीवित रहा. तब उसकी
मृत्यु हो गई, और वह अपने लोगों में जा मिला.

Genesis 26:1

18 उसके वंशज मिस्र देश के पूर्वी सीमा के नजदीक अश्शूर
की दिशा में हाविलाह से लेकर शूर तक के क्षेत्र में बस गए
और वे उनसे संबंधित सभी गोत्रों से बैर रखते थे.

19 अब्राहाम के पुत्र यित्सहाक की वंशावली इस प्रकार है:
अब्राहाम से यित्सहाक का जन्म हुआ.

20 पद्दन-अरामवासी अरामी बेथुएल की पुत्री और अरामी
लाबान की बहन रेबेकाह से विवाह करते समय यित्सहाक की
आयु चालीस वर्ष थी.

21 यित्सहाक ने अपनी पत्नी की ओर से याहवेह से प्रार्थना की,
क्योंकि वह बांझ थी. याहवेह ने उसकी प्रार्थना सुन ली और
उसकी पत्नी रेबेकाह गर्भवती हुई.

22 बच्चे उसके गर्भ में एक दूसरे को धक्का देते रहते थे. तब
रेबेकाह ने कहा, "यह क्या हो रहा है मेरे साथ?" और वह
याहवेह से पूछने गई.

23 याहवेह ने उससे कहा, "तुम्हारे गर्भ में दो जातियां हैं, तुममें
से दो जनता के लोग निकलकर अलग होंगे; एक समूह के
लोग दूसरे से अधिक बलवान होंगे, और बड़ा छोटे की सेवा
करेगा."

24 जब उसके प्रसव का समय आया. उसके गर्भ में जुड़वां
बच्चे थे.

25 जो पहला बेटा हुआ वह लाल था, और उसका पूरा शरीर
बालों से भरा था; इस कारण उसका नाम एसाव रखा गया.

26 इसके बाद, उसके भाई का जन्म हुआ, जो अपने हाथ से
अपने भाई एसाव की एड़ी पकड़े हुए था; तब उसका नाम
याकोब रखा गया. जब रेबेकाह ने बच्चों को जन्म दिया, तब
यित्सहाक की उम्र साठ वर्ष थी.

27 दोनों बच्चे बड़े होते गये, और एसाव खुले मैदान का एक
कुशल शिकारी बन गया, जबकि याकोब घर में तंबुओं के बीच
रहकर संतुष्ट रहता था.

28 एसाव यित्सहाक का प्रिय था क्योंकि यित्सहाक को आखेट
का मांस बहुत अच्छा लगता था, पर याकोब रेबेकाह का प्रिय
था.

29 एक बार जब याकोब धीमी आंच में कुछ पका रहा था, तब
एसाव बाहर मैदान से आया और वह बहुत भूखा था.

30 उसने याकोब से कहा, "मुझे बहुत भूख लगी है; तुम जो
पका रहे हो, जल्दी करके उसमें से मुझे कुछ खाने को दो."
(यही कारण है कि उसे एदोम भी कहा गया.)

31 किंतु याकोब ने उससे कहा, "पहले आप अपने पहलौठे का
अधिकार मुझे दे दो."

32 एसाव ने कहा, "देख, भूख से मेरे प्राण निकल रहे हैं;
पहलौठे के अधिकार से मुझे क्या फायदा है?"

33 पर याकोब ने कहा, "तो पहले आप मुझसे शपथ खाईये."
तब एसाव ने शपथ खाकर अपने पहलौठे का अधिकार
याकोब के हाथ बेच दिया.

34 तब याकोब ने एसाव को कुछ रोटी और पकाई हुई दाल दी.
एसाव ने खाया पिया, और उठकर चला गया. इस प्रकार
एसाव ने अपने पहलौठे के अधिकार को तुच्छ समझा.

Genesis 26:1

1 उस देश में अकाल पड़ा. ऐसा ही अकाल अब्राहाम के समय
में भी पड़ा था. यित्सहाक गेरार में फिलिस्तीनियों के राजा
अबीमेलेक के पास गया.

2 याहवेह ने यित्सहाक को दर्शन देकर कहा, "मिस्र देश को
मत जाओ; लेकिन उस देश में रहो, जहां मैं बताऊंगा.

3 कुछ समय के लिये इस देश में रहो, और मैं तुम्हारे साथ
रहूंगा और तुम्हें आशीष दूंगा. मैं यह पूरा देश तुम्हें और तुम्हारे
वंश को दूंगा और तुम्हारे पिता अब्राहाम से किए अपने वायदे
को मैं पूरा करूंगा,

Genesis 26:1

4 मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के समान अनगिनत करूंगा और यह पूरा देश उन्हें दूंगा, और तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जनता आशीषित होंगी,

5 क्योंकि अब्राहाम ने मेरी बात मानी और मेरी आज्ञाओं, नियमों और निर्देशों का ध्यान रखते हुए उसने वह सब किया जिसे मैंने उसे करने को कहा था."

6 इसलिये यित्सहाक गेरार में ही रहने लगे.

7 जब उस स्थान के लोगों ने उससे उसके पत्नी के बारे में पूछा, तो उसने कहा, "वह मेरी बहन है," क्योंकि वह यह कहने से डरता था, "वह मेरी पत्नी है." वह सोचता था, "इस स्थान के लोग रेबेकाह के कारण शायद मुझे मार डालेंगे, क्योंकि वह सुंदर है."

8 जब यित्सहाक को वहां रहते हुए काफ़ी समय हो गया, तो एक दिन फिलिस्तीनियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की से नीचे झांककर देखा कि यित्सहाक अपनी पत्नी रेबेकाह से प्रेम कर रहा है.

9 इसलिये अबीमेलेक ने यित्सहाक को बुलवाया और कहा, "निश्चय ही वह तुम्हारी पत्नी है! फिर तुमने यह क्यों कहा, 'वह मेरी बहन है'?" यित्सहाक ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने सोचा कि उसके कारण कहीं मुझे अपनी जान गंवानी न पड़े."

10 तब अबीमेलेक ने कहा, "तुमने हमसे यह क्या किया? हमारी प्रजा में से कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के साथ सो सकता था, और तुम हमको पाप का भागीदार बनाते हो."

11 इसलिये अबीमेलेक ने सब लोगों को आज्ञा दी: "जो कोई इस पुरुष तथा उसकी पत्नी की हानि करेगा, वह निश्चित रूप से मार डाला जाएगा."

12 यित्सहाक ने उस देश में खेती की और उसे उसी वर्ष सौ गुणा उपज मिली, क्योंकि याहवेह ने उसे आशीष दी.

13 वह धनवान हो गया; उसका धन बढ़ता गया और वह बहुत धनवान हो गया.

14 उसके पास इतनी भेड़-बकरी, पशु और सेवक हो गये कि फिलिस्तीनी उससे जलन करने लगे.

15 इसलिये उन सभी कुंओं को, जो उसके पिता अब्राहाम के सेवकों ने उसके पिता के समय में खोदे थे, फिलिस्तीनियों ने मिट्टी से पाटकर बंद कर दिया.

16 तब अबीमेलेक ने यित्सहाक से कहा, "तुम हमारे पास से दूर चले जाओ, क्योंकि तुम हमसे बहुत ज्यादा बलवान हो गये हो."

17 इसलिये यित्सहाक वहां से चला गया और गेरार घाटी में तंबू खड़ा करके वहां रहने लगा.

18 यित्सहाक ने उन कुंओं को फिर खोदवाया, जो उसके पिता के समय में खोदे गये थे, और जिन्हें फिलिस्तीनियों ने अब्राहाम की मृत्यु के बाद मिट्टी से पाट दिया था, और उसने उन कुंओं के वही नाम रखे जो उसके पिता ने रखे थे.

19 यित्सहाक के सेवकों को घाटी में खुदाई करते समय वहां एक मीठे पानी का कुंआ मिला.

20 इस पर गेरार के चरवाहों ने यित्सहाक के चरवाहों से झगड़ा किया और कहा, "यह पानी हमारा है!" इसलिये यित्सहाक ने उस कुएं का नाम ऐसेक रखा, क्योंकि उन्होंने उससे झगड़ा किया था.

21 तब उन्होंने दूसरा कुंआ खोदा, पर उन्होंने उस पर भी झगड़ा किया; इसलिये यित्सहाक ने उस कुएं का नाम सितनाह रखा.

22 तब वह वहां से चला गया और एक और कुंआ खोदा, और इस पर किसी ने झगड़ा नहीं किया. यित्सहाक ने यह कहकर उस कुएं का नाम रेहोबोथ रखा, "अब याहवेह ने हमें बहुत स्थान दिया है और हम लोग इस देश में उन्नति करेंगे."

23 फिर यित्सहाक वहां से बेअरशेबा चला गया.

24 उसी रात याहवेह ने उसे दर्शन देकर कहा, "मैं तुम्हारे पिता अब्राहाम का परमेश्वर हूं. मत डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं;

Genesis 27:1

मैं तुम्हें अपने सेवक अब्राहाम के कारण आशीष दूंगा और तुम्हारे वंश को बढ़ाऊंगा."

25 तब यित्सहाक ने वहां एक वेदी बनाई और याहवेह की आराधना की. वहां उसने अपना तंबू खड़ा किया और वहां उसके सेवकों ने एक कुंआ खोदा.

26 इसी बीच अबीमेलेक गेरार से यित्सहाक से मिलने आये. उनके साथ उनका सलाहकार अहुज्ज़ाथ और उनकी सेना के सेनापति फीकोल भी थे.

27 यित्सहाक ने उनसे पूछा, "आप लोग मेरे पास क्यों आये हैं, जबकि आपने मुझसे बैर करके मुझे दूर जाने को कहा था?"

28 उन्होंने उत्तर दिया, "हमने साफ-साफ देखा कि याहवेह तुम्हारे साथ है; इसलिये हमने कहा, 'तुम्हारे और हमारे बीच में शपथपूर्वक वाचा होनी चाहिये.' इसलिये हम तुमसे एक संधि करना चाहते हैं

29 कि तुम हमारी कोई हानि नहीं करोगे, जैसे कि हमने भी तुम्हारी कोई हानि नहीं की, पर हमेशा तुमसे अच्छा व्यवहार किया और शांतिपूर्वक तुम्हें जाने को कहा. और अब तुम याहवेह के आशीषित भी हो."

30 तब यित्सहाक ने उनके लिये एक भोज का आयोजन किया, और उन्होंने खाया और पिया.

31 अगले दिन वे बड़े सबेरे उठकर एक दूसरे के साथ शपथ खाई. तब यित्सहाक ने उन्हें विदा किया, और वे शांतिपूर्वक चले गये.

32 उस दिन यित्सहाक के सेवकों ने आकर उसे उस कुएं के बारे में बताया, जिसे उन्होंने खोदा था. उन्होंने कहा, "हमें पानी मिल गया है!"

33 यित्सहाक ने उस कुएं का नाम शिबाह रखा, और आज तक उस नगर का नाम बेअरशेबा है.

34 जब एसाव चालीस वर्ष के हुए, तो उसने हित्ती बएरी की बेटी यूदित, और हित्ती एलोन की पुत्री बसेमाथ से भी विवाह किया.

35 ये स्त्रियां यित्सहाक और रेबेकाह के दुःख का कारण बनीं.

Genesis 27:1

1 जब यित्सहाक वृद्ध हो गये थे और उनकी आंखें इतनी कमजोर हो गईं कि वह देख नहीं सकते थे, तब उन्होंने अपने बड़े बेटे एसाव को बुलाया और कहा, "हे मेरे पुत्र." उन्होंने कहा, "क्या आज्ञा है पिताजी?"

2 यित्सहाक ने कहा, "मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि कब मर जाऊंगा.

3 इसलिये अब तुम अपना हथियार—अपना तरकश और धनुष लो और खुले मैदान में जाओ और मेरे लिये कोई वन पशु शिकार करके ले आओ.

4 और मेरी पसंद के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे पास ले आना कि मैं उसे खाऊं और अपने मरने से पहले तुम्हें आशीष दूं."

5 जब यित्सहाक अपने पुत्र एसाव से बातें कर रहे थे, तब रेबेकाह उनकी बातों को सुन रही थी. जब एसाव खुले मैदान में शिकार लाने के लिए चला गया,

6 तब रेबेकाह ने अपने पुत्र याकोब से कहा, "देख, मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से यह कहते हुए सुना है,

7 'शिकार करके मेरे लिये स्वादिष्ट भोजन बनाकर ला कि मैं उसे खाऊं और अपने मरने से पहले याहवेह के सामने तुम्हें आशीष दूं.'

8 इसलिये, हे मेरे पुत्र, अब ध्यान से मेरी बात सुन और जो मैं कहती हूं उसे कर:

9 जानवरों के झुंड में जाकर दो अच्छे छोटे बकरे ले आ, ताकि मैं तुम्हारे पिता के लिए उनके पसंद के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बना दूं.

Genesis 27:1

10 तब तुम उस भोजन को अपने पिता के पास ले जाना, ताकि
वह उसे खाकर अपने मरने से पहले तुम्हें अपनी आशीष दें."

11 याकोब ने अपनी माता रेबेकाह से कहा, "पर मेरे भाई के
शरीर में पूरे बाल हैं, लेकिन मेरी त्वचा चिकनी है.

12 यदि मेरे पिता मुझे छुएंगे तब क्या होगा? मैं तो धोखा
देनेवाला ठहरूंगा और आशीष के बदले अपने ऊपर शाप
लाऊंगा."

13 तब उसकी मां ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम्हारा शाप मुझ पर आ
जाए. मैं जैसा कहती हूं तू वैसा ही कर; जा और उनको मेरे
लिये ले आ."

14 इसलिये याकोब जाकर उनको लाया और अपनी मां को दे
दिया, और उसने याकोब के पिता की पसंद के अनुसार
स्वादिष्ट भोजन तैयार किया.

15 तब रेबेकाह ने अपने बड़े बेटे एसाव के सबसे अच्छे कपड़े
घर से लाकर अपने छोटे बेटे याकोब को पहना दिए.

16 उसने बकरी के खालों से उसके चिकने भाग और गले और
गले के चिकने भाग को भी ढंक दिया.

17 तब उसने अपनी पकाई स्वादिष्ट मांस को और रोटी लेकर
याकोब को दी.

18 अपने पिता के पास जाकर याकोब ने कहा, "पिताजी."
यित्सहाक ने उत्तर दिया, "हां बेटा, कौन हो तुम?"

19 याकोब ने अपने पिता को उत्तर दिया, "मैं आपका बड़ा बेटा
एसाव हूं. मैंने वह सब किया है, जैसा आपने कहा था. कृपया
बैठिये और मेरे शिकार से पकाया भोजन कीजिये और मुझे
अपनी आशीष दीजिये."

20 यित्सहाक ने अपने पुत्र से पूछा, "मेरे पुत्र, यह तुम्हें इतनी
जल्दी कैसे मिल गया?" याकोब ने कहा, "याहवेह आपके
परमेश्वर ने मुझे सफलता दी."

21 तब यित्सहाक ने याकोब से कहा, "हे मेरे पुत्र, मेरे पास आ,
ताकि मैं तुम्हें छूकर जान सकूं कि तू सही में मेरा पुत्र एसाव है
या नहीं."

22 तब याकोब अपने पिता यित्सहाक के पास गया, जिसने उसे
छुआ और कहा, "आवाज तो याकोब की है किंतु हाथ एसाव
के हाथ जैसे हैं."

23 यित्सहाक ने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ में वैसे
ही बाल थे जैसे एसाव के थे. इसलिए यित्सहाक उसे आशीष
देने के लिए आगे बढ़ा.

24 यित्सहाक ने पूछा, "क्या तू सही में मेरा पुत्र एसाव है?"
याकोब ने उत्तर दिया, "मैं हूं."

25 तब यित्सहाक ने कहा, "हे मेरे पुत्र, अपने शिकार से पकाये
कुछ भोजन मेरे खाने के लिये ला, ताकि मैं तुम्हें अपनी आशीष
दूं." याकोब अपने पिता के पास खाना लाया और उसने खाया;
और वह दाखरस भी लाया और उसने पिया.

26 तब उसके पिता यित्सहाक ने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, यहां
आ और मुझे चूम."

27 इसलिये याकोब उसके पास गया और उसे चूमा. जब
यित्सहाक को उसके कपड़ों से एसाव की गंध आई, इसलिये
उसने उसे आशीष देते हुए कहा, "मेरे बेटे की खुशबू याहवेह
की आशीष से मैदान में फैल गई है.

28 अब परमेश्वर तुम्हें आकाश की ओस, पृथ्वी की अच्छी उपज
तथा अन्न और नये दाखरस से आशीषित करेंगे.

29 सभी राष्ट्र तुम्हारी सेवा करेंगे, जाति-जाति के लोग तुम्हारे
सामने झुकेंगे, तुम अपने भाइयों के ऊपर शासक होंगे;
तुम्हारी मां के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे. जो तुम्हें शाप देंगे वे
स्वयं शापित होंगे और जो तुम्हें आशीष देंगे वे आशीष पायेंगे."

30 जैसे ही यित्सहाक याकोब को आशीष दे चुके तब उनका
भाई एसाव शिकार करके घर आया.

31 उन्होंने जल्दी स्वादिष्ट खाना तैयार किया और अपने पिता से कहा “पिताजी, उठिए और स्वादिष्ट खाना खाकर मुझे अपनी आशीष दीजिए.”

32 उसके पिता यित्सहाक ने उनसे पूछा, “कौन हो तुम?” उसने कहा, “मैं आपका बेटा हूं, आपका बड़ा बेटा एसाव.”

33 यह सुन यित्सहाक कांपते हुए बोले, “तो वह कौन था, जो मेरे लिए भोजन लाया था? और मैंने उसे आशीषित भी किया, अब वह आशीषित ही रहेगा!”

34 अपने पिता की ये बात सुनकर एसाव फूट-फूटकर रोने लगा और अपने पिता से कहा, “पिताजी, मुझे आशीष दीजिए, मुझे भी!”

35 यित्सहाक ने कहा, “तुम्हारे भाई ने धोखा किया और आशीष ले ली.”

36 एसाव ने कहा, “उसके लिए याकोब नाम सही नहीं है? दो बार उसने मेरे साथ बुरा किया: पहले उसने मेरे बड़े होने का अधिकार ले लिया और अब मेरी आशीष भी छीन ली!” तब एसाव ने अपने पिता से पूछा, “क्या आपने मेरे लिए एक भी आशीष नहीं बचाई?”

37 यित्सहाक ने एसाव से कहा, “मैं तो उसे तुम्हारा स्वामी बना चुका हूं. और सभी संबंधियों को उसका सेवक बनाकर उसे सौंप दिया और उसे अन्‍न एवं नये दाखरस से भरे रहने की आशीष दी हैं. अब मेरे पुत्र, तुम्हारे लिए मैं क्या करूं?”

38 एसाव ने अपने पिता से पूछा, “पिताजी, क्या आपके पास मेरे लिए एक भी आशीष नहीं? और वह रोता हुआ कहने लगा कि पिताजी मुझे भी आशीष दीजिए!”

39 तब यित्सहाक ने कहा, “तुम्हारा घर अच्छी उपज वाली भूमि पर हो और उस पर आकाश से ओस गिरे.

40 तुम अपनी तलवार की ताकत से जीवित रहोगे. तुम अपने भाई की सेवा करोगे; किंतु हां, किंतु तुम आज़ादी के लिए लड़ोगे, और तुम अपने ऊपर पड़े उसके प्रतिबन्ध को तोड़ फेंकोगे.”

41 एसाव अपने भाई याकोब से नफ़रत करने लगा और मन में ऐसा सोचने लगा, “पिता की मृत्यु शोक के दिन नज़दीक है, उनके बाद मैं याकोब की हत्या कर दूंगा.”

42 जब रेबेकाह को अपने बड़े बेटे की ये बातें बताई गईं तब उसने सेवक भेजकर अपने छोटे पुत्र याकूब को बुलवाकर उससे कहा, “तुम्हारे भाई एसाव के मन में तुम्हारे लिए बहुत नफ़रत हैं. सुनो, तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने का षड्‌यंत्र कर रहा है.

43 इसलिये तुम यहां से भागकर मेरे भाई लाबान के यहां चले जाओ.

44 वहां जाकर कुछ समय रहो, जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा खत्म न हो जाए.

45 जब तुम्हारे भाई का गुस्सा खत्म होगा, और भूल जायेगा कि तुमने उसके साथ क्या किया, तब मैं तुम्हें वहां से बुला लूंगी. मैं एक ही दिन तुम दोनों को क्यों खो दूं?”

46 एक दिन रेबेकाह ने यित्सहाक से कहा, “हेथ की इन पुत्रियों ने मेरा जीवन दुःखी कर दिया है. यदि याकोब भी हेथ की पुत्रियों में से किसी को, अपनी पत्नी बना लेगा तो मेरे लिए जीना और मुश्किल हो जाएगा?” इसलिये याकोब को उसके मामा के घर भेज दो.

Genesis 28:1

1 इसलिये यित्सहाक ने याकोब को आशीष दी और कहा: “कनानी कन्याओं से शादी मत करना.

2 पर पद्दन-अराम में अपने नाना बेथुएल के यहां चले जाओ. और वहां अपने मामा लाबान की पुत्रियों में से किसी से विवाह कर लेना.

3 सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दया तुम पर बनी रहे तथा सुख और शांति से आगे बढ़ो.

4 परमेश्वर तुम्हें वे आशीषें दें, जिन्हें उन्होंने अब्राहाम को दी थी, तुम्हें और तुम्हारे वंश को, उस देश का अधिकारी बनाये.”

Genesis 29:1

5 इन सब आशीषित वचन के साथ यित्सहाक ने याकोब को विदा किया. याकोब अपनी और एसाव की माता रेबेकाह के भाई अरामवासी लाबान के यहां चले गए, जो पद्दन-अराम के बेथुएल के पुत्र थे.

6 एसाव को मालूम हो गया था कि यित्सहाक ने याकोब को आशीष देकर पद्दन-अराम में भेजा है ताकि वह अपने लिए पत्नी चुने, और आदेश भी दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न करे,

7 और याकोब अपने पिता एवं माता की बात को मानते हुए पद्दन-अराम में चले गये.

8 तब एसाव को यह समझ में आ गया, कि उसके पिता को कनान देश की कन्याएं पसंद नहीं हैं.

9 इसलिये एसाव ने अपनी पत्नियों के अलावा अब्राहाम के पुत्र इशमाएल की पुत्री माहालाथ से, जो नेबाइयोथ की बहन थी, विवाह कर लिया.

10 याकोब बेअरशेबा से हारान की ओर गए.

11 जब वह एक जगह पहुंचा तब रात को उन्हें वहां रुकना पड़ा, क्योंकि तब तक सूरज ढल चुका था. उन्होंने एक पत्थर अपने सिर के नीचे रखा और लेट गए.

12 तब उन्होंने एक स्वप्न देखा: एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, उसका दूसरा सिरा स्वर्ग तक पहुंचा हुआ था. उन्होंने देखा कि परमेश्वर के स्वर्गदूत इस पर चढ़ रहे और उतर रहे हैं.

13 उन्होंने देखा कि ऊपर याहवेह खड़े हैं, और कह रहे हैं, "मैं ही याहवेह हूं, तुम्हारे पिता अब्राहाम तथा यित्सहाक का परमेश्वर. जिस भूमि पर तुम इस समय लेटे हुए हो, मैं वह भूमि तुम्हें तथा तुम्हारे वंश को दूंगा.

14 तुम्हारा वंश भूमि की धूल के समान आशीषित होकर पृथ्वी के चारों दिशाओं में फैल जायेगा. पृथ्वी पर सभी लोग तुम्हारे और तुम्हारे वंश के द्वारा आशीषित होंगे.

15 मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और जहां कहीं तुम जाओगे, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा. और तुम्हें इसी देश में लौटा ले आऊंगा. जब तक मैं अपनी बात पूरी न कर लूं तब तक तुम्हें न छोड़ूंगा."

16 अचानक याकोब की नींद खुल गई और कहा, "निश्चय इस स्थान पर याहवेह की उपस्थिति है और मुझे यह मालूम ही न था."

17 याकोब भयभीत होकर कहने लगे, "अनोखा है यह स्थान! यह परमेश्वर के भवन के अलावा कुछ और नहीं हो सकता; ज़रूर यह स्वर्ग का द्वार ही होगा."

18 याकोब ने उस पत्थर को, जिसे उसने अपने सिर के नीचे रखा था, एक स्तंभ के जैसे खड़ा कर उस पर तेल डाला,

19 याकोब ने उस स्थान का नाम बेथेल रखा; जबकि उस स्थान का नाम लूज़ था.

20 फिर याकोब ने प्रण लिया, "यदि परमेश्वर की उपस्थिति मेरे साथ साथ बनी रहेगी, और मुझे सुरक्षित रखेंगे, मुझे भोजन एवं वस्त्रों की कमी नहीं होगी

21 और मुझे मेरे पिता के घर तक सुरक्षित पहुंचा देंगे, तो याहवेह ही मेरे परमेश्वर होंगे.

22 यह पत्थर, जिसे मैंने स्तंभ बनाकर खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन होगा तथा आप मुझे जो कुछ देंगे, निश्चयतः मैं उसका दशमांश आपको ही समर्पित करूंगा."

Genesis 29:1

1 याकोब अपनी यात्रा में आगे बढ़ते गए और पूर्वी देश में जा पहुंचे.

2 तब उन्हें मैदान में एक कुंआ और भेड़-बकरियों के तीन झुंड बैठे नज़र आये और उन्होंने देखा कि जिस कुएं से भेड़-बकरियों को पानी पिलाते थे उस कुएं पर बड़ा पत्थर रखा हुआ था.

Genesis 29:1

3 जब भेड़-बकरियां एक साथ इकट्ठी हो जातीं तब कुएं से
पत्थर हटाकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाया जाता था, फिर
पत्थर कुएं पर वापस लुढ़का दिया जाता था.

4 याकोब ने चरवाहों से पूछा, "मेरे भाइयो, आप कहां से आए
हैं?" उन्होंने कहा, "हम हारान के हैं."

5 याकोब ने पूछा, "क्या आप नाहोर के पोते लाबान को जानते
हैं?" उन्होंने कहा, "हां, हम जानते हैं."

6 फिर याकोब ने पूछा, "क्या वे ठीक हैं?" उन्होंने कहा, "वे
ठीक हैं और उनकी बेटी राहेल अपनी भेड़ों के साथ यहां आ
रही है."

7 याकोब ने कहा, "देखो, सूरज अभी भी ऊंचा है, अभी तो
शाम नहीं हुई फिर इतनी जल्दी भेड़-बकरियों को क्यों इकट्ठा
कर रहे हो, अभी उन्हें पानी पिलाकर चरने दो."

8 लेकिन उन्होंने कहा, "नहीं, सब भेड़-बकरियां एक साथ
आने पर ही कुएं से पत्थर हटाकर भेड़-बकरियों को जल
पिलाया जाता है."

9 जब वे बात कर रहे थे, राहेल अपने पिता की भेड़ें लेकर वहां
आ गई, क्योंकि वह पशु चराया करती थी.

10 जब याकोब ने अपनी माता के भाई लाबान की पुत्री तथा
भेड़-बकरी को देखा, तो उन्होंने जाकर कुएं के मुख से पत्थर
हटाया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाने लगे.

11 तब याकोब ने राहेल को चुंबन दिया और रोने लगे.

12 याकोब ने राहेल को बताया, कि वह उसके पिता के संबंधी
हैं, और रेबेकाह के पुत्र हैं. राहेल दौड़ती हुई अपने पिता को
यह बताने गई.

13 जब लाबान ने अपनी बहन के पुत्र याकोब के बारे में सुना,
वह भी दौड़कर उनसे मिलने आये. उन्होंने याकोब को चुंबन
दिया और उन्हें अपने घर पर लाए. याकोब ने लाबान को अपने
बारे में बताया.

14 लाबान ने याकोब से कहा, "निःसंदेह तुम मेरी ही हड्डी एवं
मांस हो." याकोब वहां एक महीने रुके.

15 तब लाबान ने याकोब से कहा, "यद्यपि तुम मेरे संबंधी हो,
यह अच्छा नहीं कि मेरे लिए तुम बिना वेतन के काम करते
रहो! इसलिये तुम वेतन लेकर ही काम करना!"

16 लाबान की दो पुत्रियां थीं. बड़ी का नाम लियाह तथा छोटी
का नाम राहेल था.

17 लियाह की आंखें धुंधली थी पर राहेल सुंदर थी.

18 याकोब राहेल को चाहने लगे, याकोब ने लाबान से कहा,
"आपकी छोटी बेटी राहेल को पाने के लिए मैं सात वर्ष
आपकी सेवा करने को तैयार हूं."

19 लाबान ने कहा, "मैं राहेल को किसी अन्य पुरुष को देने से
तुमको देना बेहतर है. तुम यहीं हमारे साथ रहो."

20 इसलिये याकोब ने राहेल को पाने के लिए सात वर्ष सेवा
की, लेकिन उसे यह समय बहुत कम लगा क्योंकि वह राहेल
से बहुत प्रेम करता था.

21 फिर याकोब ने लाबान से कहा, "सात वर्ष हो गये; अब
आपकी बेटी राहेल मुझे दीजिए ताकि उससे मेरी शादी हो
जाये."

22 लाबान ने अपने समाज के लोगों को बुलाकर सबको खाना
खिलाया.

23 शाम को उसने अपनी बेटी लियाह को याकोब को सौंप दी
और याकोब ने उसके साथ विवाह किया.

24 लाबान ने अपनी दासी ज़िलपाह को भी लियाह को उसकी
दासी होने के लिए दिया.

25 जब याकोब को मालूम पड़ा कि वह तो लियाह थी, याकोब
ने लाबान से पूछा, "यह क्या किया आपने मेरे साथ? मैं आपकी
सेवा राहेल के लिए कर रहा था? फिर आपने मेरे साथ ऐसा
धोखा क्यों किया?"

Genesis 30:1

26 लाबान ने कहा, “हमारे समाज में बड़ी को छोड़ पहले छोटी
की शादी नहीं कर सकते.

27 विवाह के उत्सव को पूरे सप्ताह मनाते रहो और मैं राहेल
को भी तुम्हें विवाह के लिए दूंगा; परंतु तुम्हें और सात वर्ष तक
मेरी सेवा करनी पड़ेगी.”

28 इसलिये याकोब ने ऐसा ही किया. और समारोह का वह
सप्ताह पूरा किया, तब लाबान ने याकोब को राहेल पत्नी
स्वरूप सौंप दी.

29 लाबान ने अपनी दासी बिलहाह को भी राहेल की दासी होने
के लिए उसे सौंप दिया.

30 याकोब राहेल के पास गया और उसे राहेल लियाह से
अधिक प्रिय थी. और उसने लाबान के लिए और सात साल
सेवा की.

31 जब याहवेह ने देखा कि लियाह को प्यार नहीं मिल रहा,
याहवेह ने लियाह को गर्भ से आशीषित किया और राहेल को
बांझ कर दिया.

32 लियाह गर्भवती हुई और उसने एक बेटे को जन्म दिया और
उसका नाम रियूबेन यह कहकर रखा, “याहवेह ने मेरे दुःख
को देखा, और अब मेरे पति ज़रूर मुझसे प्रेम करेंगे.”

33 लियाह का एक और पुत्र पैदा हुआ. उसने कहा, “क्योंकि
याहवेह ने यह सुन लिया कि मैं प्रिय नहीं हूं और मुझे यह एक
और पुत्र दिया.” उसने उसका नाम शिमओन रखा.

34 लियाह फिर से गर्भवती हुई और जब उसका एक पुत्र पैदा
हुआ तब उसने कहा, “अब मेरे पति मुझसे जुड़ जायेंगे क्योंकि
मैनें उनके तीन पुत्रों को जन्म दिया है.” इसलिये लियाह ने
तीसरे बेटे का नाम लेवी रखा.

35 उसने एक और बेटे को जन्म दिया और कहा, “अब मैं
याहवेह की स्तुति करूंगी,” इसलिये उसने उस बेटे का नाम
यहूदाह रखा. उसके बाद लियाह के बच्चे होने बंद हो गए.

Genesis 30:1

1 राहेल ने यह देखा कि याकोब के लिए उसके द्वारा कोई
संतान नहीं हुई, तो उसे अपनी बहन से नफ़रत हो गई. वह
याकोब से झगड़ने लगी, “मुझे संतान दीजिए, नहीं तो मैं मर
जाऊंगी!”

2 यह सुन याकोब गुस्से से चिल्लाए और कहा, “क्या मैं
परमेश्वर के स्थान में हूं कि तुम्हारी बंद कोख खोलूं?”

3 यह सुन उसने कहा, “तो मेरी दासी बिलहाह के पास जाइए,
ताकि उसके द्वारा मैं मां बन सकूं.”

4 इसलिये राहेल ने याकोब को पत्नी स्वरूप में अपनी दासी
सौंप दी, और याकोब ने बिलहाह से वैवाहिक संबंध बनाया.

5 बिलहाह गर्भवती हुई और उसका एक बेटा हुआ.

6 तब राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरा न्याय किया और मेरी
दुहाई सुन ली और मुझे बेटा दिया.” उसने उसका नाम दान
रखा.

7 फिर राहेल की दासी बिलहाह से एक और बेटा हुआ.

8 तब राहेल ने कहा, “मैंने अपनी बहन के साथ बड़ा संघर्ष
किया है और अब मैं जीत गई हूं.” इसलिये इस बेटे का नाम
नफताली रखा गया.

9 जब लियाह ने देखा कि उसके और बच्चे होने रुक गये है,
तब उसने अपनी दासी ज़िलपाह को याकोब को पत्नी स्वरूप
में दे दी.

10 लियाह की दासी ज़िलपाह ने याकोब से एक बेटे को जन्म
दिया.

11 लियाह ने सोचा, “कैसी धन्यता है यह!” इसलिये उस बेटे
का नाम गाद रखा.

12 लियाह की दासी ज़िलपाह से एक और बेटा हुआ.

Genesis 30:1

13 तब लियाह ने सोचा, “मैं धन्य हूं और स्त्रियां मुझे धन्य
कहेंगी.” इसलिये इस पुत्र का नाम आशेर रखा.

14 खेत में गेहूं की कटाई के समय रियूबेन जब खेत में गया
उसे दूदाईम नामक कुछ विशेष पौधा मिला, जिन्हें वह अपनी
मां लियाह के पास ले आया. राहेल ने लियाह से कहा, “मुझे भी
थोड़ा दूदाईम दे दो.”

15 लियाह ने राहेल से कहा, “क्या यह काफ़ी नहीं कि तुमने
मुझसे मेरा पति छीन लिया? और अब मेरे पुत्र द्वारा लाए
दूदाईम भी लेना चाहती हो?” तब राहेल ने उससे कहा, “यदि
तुम मुझे यह पौधा दोगी, तो मैं आज की रात तुम्हें याकोब के
साथ व्यतीत करने दूंगी.”

16 जब शाम को याकोब खेत से आये तब लियाह ने याकोब से
कहा, “मैंने आपको अपने बेटे द्वारा लाए गये दूदाईम देकर
किराये में लिया है.”

17 परमेश्वर ने लियाह की सुन ली. उसने गर्भधारण किया तथा
याकोब को पांचवां पुत्र दिया.

18 इस पर लियाह ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे मेरी मजदूरी दी है
क्योंकि मैंने अपनी दासी मेरे पति को दी.” और इसलिये
उसका नाम इस्साखार रखा.

19 फिर लियाह ने छठे पुत्र को जन्म दिया.

20 लियाह ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे एक उत्तम भेंट से
सम्मानित किया है. अब मेरे पति मेरी कद्र करेंगे, क्योंकि मैंने
उनको छः पुत्र दिये हैं.” और इसलिये उस पुत्र का नाम ज़ेबुलून
रखा.

21 फिर कुछ समय बाद लिया की एक बेटी हुई, उसका नाम
दीनाह रखा.

22 इसके बाद परमेश्वर ने राहेल पर दया की. परमेश्वर ने उसे
गर्भधारण करने के लिए सक्षम किया.

23 उसे एक बेटा हुआ, और उसने कहा, “परमेश्वर ने मेरा
कलंक मिटा दिया है.”

24 यह कहते हुए उसे योसेफ़ नाम दिया कि याहवेह मुझे एक
और पुत्र दें.

25 जब राहेल ने योसेफ़ को जन्म दिया, तब याकोब ने लाबान
से कहा, “अब मुझे मेरे देश जाने दीजिए.

26 मुझे मेरी पत्नियां एवं संतान दे दीजिए, जिसके लिए मैंने
इतने वर्ष आपकी सेवा की है. जो सेवा मैं आपके लिए करता
रहा हूं, वह आपको मालूम है.”

27 किंतु लाबान ने कहा, “याहवेह की ओर से मुझे यह मालूम
हुआ है, कि मुझे जो आशीष मिली है, वह तुम्हारे ही कारण
मिली है. इसलिये तुम मुझसे नाराज नहीं हो, तो मेरे यहां ही
रहो.”

28 लाबान ने कहा, “सेवा के बदले तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हें
वही दूंगा.”

29 किंतु याकोब ने लाबान से कहा, “मैंने आपकी सेवा कैसे की
है, यह बात आपसे छिपी नहीं है, और आपके पशु की देखरेख
भी मैंने कैसे की हैं.

30 पहले पशु कम थे लेकिन अब बहुत ज्यादा हो गये हैं. मैंने
जो भी काम किया, उसमें याहवेह ने आशीष दी है. लेकिन अब
मैं अपने घराने के बारे में सोचना चाहता हूं.”

31 तब लाबान ने पूछा, “तुम्हारी मजदूरी क्या होगी?” याकोब
ने कहा, “आप मुझे कुछ न दीजिए. लेकिन, आप चाहें तो
आपके पशुओं की चरवाही तथा देखभाल करता रहूंगा:

32 आज मैं भेड़-बकरियों में से, धारी वाले सब एक तरफ और
बिना धारी वाले एक तरफ करके अलग करूंगा और इस
तरह दोनों को अलग रखकर उनकी देखरेख करूंगा.

33 जब आप मेरी मजदूरी देने आएंगे तब इन भेड़-बकरियों
को जो अलग करके रखी हैं आप देखना और यदि इन भेड़-
बकरियों में से कोई धारी वाली और चितकबरी न हो वह दिखे
तो उसे चोरी किया हुआ मान लेना.”

34 लाबान ने उत्तर दिया, "ठीक हैं, तुम जैसा चाहते हो वैसा करो."

35 पर उस दिन लाबान ने धारी वाले तथा धब्बे युक्त बकरों तथा सभी चित्तीयुक्त एवं धब्बे युक्त बकरियों को अलग कर दिया तथा हर एक, जिस पर श्वेत रंग पाया गया तथा भेड़ों में से सभी काली भेड़ अलग कर इन सभी को अपने पुत्रों को सौंप दिया.

36 तब उन्होंने अपने व याकोब के बीच तीन दिन की यात्रा की दूरी बना ली. अब याकोब लाबान की बच गई भेड़-बकरियों की चरवाही करने लगे.

37 कुछ समय बाद याकोब ने चिनार, बादाम तथा अर्मोन वृक्ष की टहनियां लेकर उनकी छाल छील कर उन पर सफेद धारियां बनाई इससे उन टहनियों के अंदर का सफेद भाग दिखने लगा.

38 फिर याकोब ने इन छड़ियों को हौदों में सजा दिया, ताकि वे सीधे भेड़-बकरियों के सामने हों जहां वे भेड़ें पानी पिया करती थीं.

39 वे छड़ियों के सामने समागम किया और बकरियां गाभिन हुईं, और जब बच्चे होते थे तो वे धारीयुक्त, चित्तीयुक्त अथवा धब्बे युक्त होते थे.

40 याकोब उनको अलग करते जाते थे. साथ ही वे भेड़ों का मुख लाबान की धारीयुक्त तथा पूरी काली भेड़ों की ओर कर देते थे. इस प्रकार वह अपने पशु तथा लाबान के पशु को अलग रखते थे.

41 जब ताकतदार भेड़े समागम करते थे, याकोब उन्हीं के समक्ष नांदों में वे छड़ियां रख देते थे, कि उनका समागम उन्हीं छड़ियों के समक्ष हो,

42 किंतु जब उनके समक्ष दुर्बल भेड़ें होती थीं, तब वह उन छड़ियों को उनके समक्ष नहीं रखते थे. परिणामस्वरूप, समस्त दुर्बल भेड़ें लाबान के पक्ष में तथा सशक्त भेड़ें याकोब के पक्ष में आ जाती थी.

43 इसलिये याकोब बहुत धनी हो गये, उनके पास बहुत भेड़-बकरियां दास-दासियां, ऊंट तथा गधे भी थे.

Genesis 31:1

1 याकोब के कानों में यह समाचार पड़ा कि लाबान के पुत्र बड़बड़ा रहे थे, "याकोब ने तो वह सब हड़प लिया है, जो हमारे पिता का था और अब वह हमारे पिता ही की संपत्ति के आधार पर समृद्ध बना बैठा है."

2 यहां याकोब ने पाया कि लाबान की अभिवृत्ति उनके प्रति अब पहले जैसी नहीं रह गई थी.

3 इस स्थिति के प्रकाश में याहवेह ने याकोब को आदेश दिया, "अपने पिता एवं अपने संबंधियों के देश को लौट जाओ. मैं इसमें तुम्हारे पक्ष में हूं."

4 इसलिये याकोब ने राहेल तथा लियाह को वहीं बुला लिया, जहां वे भेड़-बकरियों के साथ थे.

5 उन्होंने उनसे कहा, "मैं तुम्हारे पिता की अभिवृत्ति स्पष्ट देख रहा हूं; अब यह मेरे प्रति पहले जैसी सौहार्दपूर्ण नहीं रह गई; किंतु मेरे पिता के परमेश्वर मेरे साथ रहे हैं.

6 तुम दोनों को ही यह उत्तम रीति से ज्ञात है कि मैंने यथाशक्ति तुम्हारे पिता की सेवा की है.

7 इतना होने पर भी तुम्हारे पिता ने मेरे साथ छल किया और दस अवसरों पर मेरे पारिश्रमिक में परिवर्तन किए हैं; फिर भी परमेश्वर ने उन्हें मेरी कोई हानि न करने दी.

8 यदि उन्होंने कहा, 'चित्तीयुक्त पशु तुम्हारे पारिश्रमिक होंगे,' तो सभी भेड़ चित्तीयुक्त मेमने ही पैदा करने लगे; यदि उन्होंने कहा, 'अच्छा, धारीयुक्त पशु तुम्हारा पारिश्रमिक होंगे,' तो भेड़ धारीयुक्त मेमने उत्पन्न करने लगे.

9 यह तो परमेश्वर का ही कृत्य था, जो उन्होंने तुम्हारे पिता के ये पशु मुझे दे दिए हैं.

10 “तब पशुओं के समागम के अवसर पर मैंने एक स्वप्न देखा
कि वे बकरे, जो संभोग कर रहे थे, वे धारीयुक्त, चित्तीयुक्त एवं
धब्बे युक्त थे.

11 परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझसे कहा, ‘याकोब,’ मैंने कहा,
‘क्या आज्ञा है, प्रभु?’

12 और उसने कहा, ‘याकोब, देखो-देखो, जितने भी बकरे इस
समय संभोग कर रहे हैं, वे धारीयुक्त हैं, चित्तीयुक्त हैं तथा
धब्बे युक्त हैं; क्योंकि मैंने वह सब देख लिया है, जो लाबान
तुम्हारे साथ करता रहा है.

13 मैं बेथेल का परमेश्वर हूं, जहां तुमने उस शिलाखण्ड का
अभ्यंजन किया था, जहां तुमने मेरे समक्ष संकल्प लिया था;
अब उठो. छोड़ दो इस स्थान को और अपने जन्मस्थान को
लौट जाओ.’ ”

14 राहेल तथा लियाह ने उनसे कहा, “क्या अब भी हमारे पिता
की संपत्ति में हमारा कोई अंश अथवा उत्तराधिकार शेष रह
गया है?

15 क्या अब हम उनके आंकलन में विदेशी नहीं हो गई हैं?
उन्होंने हमें बेच दिया है, तथा हमारे अंश की धनराशि भी हड़प
ली है.

16 निःसंदेह अब तो, जो संपत्ति परमेश्वर ने हमारे पिता से छीन
ली है, हमारी तथा हमारी संतान की हो चुकी है. तो आप वही
कीजिए, जिसका निर्देश आपको परमेश्वर दे चुके हैं.”

17 तब याकोब ने अपने बालकों एवं पत्नियों को ऊंटों पर बैठा
दिया,

18 याकोब ने अपने समस्त पशुओं को, अपनी समस्त संपत्ति
को, जो उनके वहां रहते हुए संकलित होती गई थी तथा वह
पशु धन, जो पद्दन-अराम में उनके प्रवासकाल में संकलित
होता चला गया था, इन सबको लेकर अपने पिता यित्सहाक
के आवास कनान की ओर प्रस्थान किया.

19 जब लाबान ऊन कतरने के लिए बाहर गया हुआ था, राहेल
ने अपने पिता के गृहदेवता—प्रतिमाओं की चोरी कर ली.

20 तब याकोब ने भी अरामी लाबान के साथ प्रवंचना की;
याकोब ने लाबान को सूचित ही नहीं किया कि वे पलायन कर
रहे थे.

21 इसलिये याकोब अपनी समस्त संपत्ति को लेकर पलायन
कर गए. उन्होंने फरात नदी पार की और पर्वतीय प्रदेश
गिलआद की दिशा में आगे बढ़ गए.

22 तीसरे दिन जब लाबान को यह सूचना दी गई कि याकोब
पलायन कर चुके हैं,

23 तब लाबान ने अपने संबंधियों को साथ लेकर याकोब का
पीछा किया. सात दिन पीछा करने के बाद वे गिलआद के
पर्वतीय प्रदेश में उनके निकट पहुंच गए.

24 परमेश्वर ने अरामी लाबान पर रात्रि में स्वप्न में प्रकट होकर
उसे चेतावनी दी, “सावधान रहना कि तुम याकोब से कुछ
प्रिय-अप्रिय न कह बैठो.”

25 लाबान याकोब तक जा पहुंचा. याकोब के शिविर पर्वतीय
क्षेत्र में थे तथा लाबान ने भी अपने शिविर अपने संबंधियों
सदृश गिलआद के पर्वतीय क्षेत्र में खड़े किए हुए थे.

26 लाबान ने याकोब से कहा, “यह क्या कर रहे हो तुम? यह
तो मेरे साथ छल है! तुम तो मेरी पुत्रियों को ऐसे लिए जा रहे
हो, जैसे युद्धबन्दियों को तलवार के आतंक में ले जाया जाता
है.

27 क्या आवश्यकता थी ऐसे छिपकर भागने की, मुझसे छल
करने की? यदि तुमने मुझे इसकी सूचना दी होती, तो मैं तुम्हें
डफ तथा किन्नोर की संगत पर गीतों के साथ सहर्ष विदा
करता!

28 तुमने तो मुझे सुअवसर ही न दिया कि मैं अपने पुत्र-पुत्रियों
को चुंबन के साथ विदा कर सकता. तुम्हारा यह कृत्य
मूर्खतापूर्ण है.

29 मुझे यह अधिकार है कि तुम्हें इसके लिए प्रताड़ित करूं;
किंतु तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने कल रात्रि मुझ पर प्रकट
होकर मुझे आदेश दिया है कि मैं तुमसे कुछ भी प्रिय-अप्रिय
न कहूं.

Genesis 31:1

30 ठीक है, तुम्हें अपने पिता के निकट रहने की इच्छा है, मान
लिया; किंतु क्या आवश्यकता थी तुम्हें मेरे गृह-देवताओं की
चोरी करने की?"

31 तब याकोब ने लाबान को उत्तर दिया, "मेरे इस प्रकार आने
का कारण थी मेरी यह आशंका, कि आप मुझसे अपनी पुत्रियां
बलात छीन लेते.

32 किंतु आपको जिस किसी के पास से वे गृहदेवता प्राप्त होंगे,
उसे जीवित न छोड़ा जाएगा. आपके ही संबंधियों की
उपस्थिति में आप हमारी संपत्ति में से जो कुछ आपका है, ले
लीजिए." याकोब को इस तथ्य का कोई संज्ञान न था कि राहेल
ने उन गृह-देवताओं की मूर्तियों को चुराई हैं.

33 इसलिये लाबान याकोब के शिविर के भीतर गया, उसके
बाद लियाह के शिविर में, और उसके बाद परिचारिकाओं के
शिविर में. किंतु वह देवता उसे वहां प्राप्त न हुआ. तब वह
लियाह के शिविर से निकलकर राहेल के शिविर में गया.

34 राहेल ने ही वे गृहदेवता छिपाए हुए थे, जिन्हें उसने ऊंट की
काठी में रखा हुआ था. वह स्वयं उन पर बैठ गई थी. लाबान ने
समस्त शिविर में खोज कर ली थी, किंतु उसे कुछ प्राप्त न
हुआ था.

35 उसने अपने पिता से आग्रह किया, "पिताजी, आप क्रुद्ध न
हों. मैं आपके समक्ष खड़ी होने के असमर्थ हूं; क्योंकि इस
समय मैं रजस्वला हूं." तब लाबान के खोजने पर भी उसे वे
गृह-देवताओं की मूर्तियां नहीं मिलीं.

36 तब याकोब का क्रोध उद्दीप्त हो उठा. वह लाबान से तर्क-
वितर्क करने लगे, "क्या अपराध है मेरा?" क्या पाप किया है
मैंने, जो आप इस प्रकार मेरा पीछा करते हुए आ रहे हैं?

37 आपने मेरी समस्त वस्तुओं में उन देवताओं की खोज कर
ली है, किंतु आपको कोई भी अपनी वस्तु प्राप्त हुई है? आपके
तथा मेरे संबंधियों के समक्ष यह स्पष्ट हो जाए, कि वे हम दोनों
के मध्य अपना निर्णय दे सकें.

38 "इन बीस वर्षों तक मैं आपके साथ रहा हूं. आपकी भेड़ों
एवं बकरियों में कभी गर्भपात नहीं हुआ. अपने भोजन के लिए
मैंने कभी आपके पशुवृन्द में से मेढ़े नहीं उठाए.

39 जब कभी किसी वन्य पशु ने हमारे पशु को फाड़ा, मैंने उसे
कभी आपके वृन्द में सम्मिलित नहीं किया; इसे मैंने अपनी ही
हानि में सम्मिलित किया था. चाहे कोई पशु दिन में चोरी हुआ
अथवा रात्रि में, आपने मुझसे भुगतान की मांग की.

40 मेरी स्थिति तो ऐसी रही कि दिन में मुझ पर ऊष्मा का प्रहार
होता रहा तथा रात्रि में ठंड का. मेरे नेत्रों से निद्रा दूर ही दूर
रही.

41 इन बीस वर्षों में मैं आपके परिवार में रहा हूं; चौदह वर्ष
आपकी पुत्रियों के लिए तथा छः वर्ष आपके भेड़-बकरियों के
लिए. इन वर्षों में आपने दस बार मेरा पारिश्रमिक परिवर्तित
किया है.

42 यदि मेरे पिता के परमेश्वर, अब्राहाम तथा यित्सहाक के
परमेश्वर का भय मेरे साथ न होता, तो आपने तो मुझे रिक्त
हस्त ही विदा कर दिया होता. परमेश्वर ने मेरे कष्ट एवं मेरे हाथों
के परिश्रम को देखा है, और उसका प्रतिफल उन्होंने मुझे कल
रात में प्रदान कर दिया है."

43 यह सब सुनकर लाबान ने याकोब को उत्तर दिया, "ये
स्त्रियां मेरी पुत्रियां हैं, ये बालक मेरे बालक हैं, ये भेड़-बकरियां
भी मेरी ही हैं, तथा जो कुछ तुम्हें दिखाई दे रहा है, वह मेरा ही
है; किंतु अब मैं अपनी पुत्रियों एवं इन बालकों का क्या करूं,
जो इनकी सन्तति हैं?

44 इसलिये आओ, हम परस्पर यह वाचा स्थापित कर लें, तुम
और मैं, और यही हमारे मध्य साक्ष्य हो जाए."

45 इसलिये याकोब ने एक शिलाखण्ड को स्तंभ स्वरूप खड़ा
किया.

46 याकोब ने अपने संबंधियों से कहा, "पत्थर एकत्र करो."
इसलिये उन्होंने पत्थर एकत्र कर एक ढेर बना दिया तथा उस
ढेर के निकट बैठ उन्होंने भोजन किया.

47 लाबान ने तो इसे नाम दिया येगर-सहदूथा किंतु याकोब ने
इसे गलएद कहकर पुकारा.

48 लाबान ने कहा, "पत्थरों का यह ढेर आज मेरे तथा तुम्हारे मध्य एक साक्ष्य है." इसलिये इसे गलएद तथा मिज़पाह नाम दिया गया,

49 क्योंकि उनका कथन था, "जब हम एक दूसरे की दृष्टि से दूर हों, याहवेह ही तुम्हारे तथा मेरे मध्य चौकसी बनाए रखें.

50 यदि तुम मेरी पुत्रियों के साथ दुर्व्यवहार करो अथवा मेरी पुत्रियों के अतिरिक्त पत्नियां ले आओ, यद्यपि कोई मनुष्य यह देख न सकेगा, किंतु स्मरण रहे, तुम्हारे तथा मेरे मध्य परमेश्वर साक्ष्य हैं."

51 लाबान ने याकोब से कहा, "इस ढेर को तथा इस स्तंभ को देखो, जो मैंने तुम्हारे तथा मेरे मध्य में स्थापित किया है.

52 यह स्तंभ तथा पत्थरों का ढेर साक्ष्य है, कि मैं इसके निकट से होकर तुम्हारी हानि करने के लक्ष्य से आगे नहीं बढ़ूंगा, वैसे ही तुम भी इस ढेर तथा इस स्तंभ के निकट से होकर मेरी हानि के उद्देश्य से आगे नहीं बढ़ोगे.

53 इसके लिए अब्राहाम के परमेश्वर, नाहोर के परमेश्वर तथा उनके पिता के परमेश्वर हमारा न्याय करें." इसलिये याकोब ने अपने पिता यित्सहाक के प्रति भय-भाव में शपथ ली.

54 फिर याकोब ने उस पर्वत पर ही बलि अर्पित की तथा अपने संबंधियों को भोज के लिए आमंत्रित किया. उन्होंने भोजन किया तथा पर्वत पर ही रात्रि व्यतीत की.

55 बड़े तड़के लाबान उठा, अपने पुत्र-पुत्रियों का चुंबन लिया तथा उन्हें आशीर्वाद दिया. फिर लाबान स्वदेश लौट गया.

Genesis 32:1

1 जब याकोब अपने देश की ओर निकले तब रास्ते में उनकी भेंट परमेश्वर के दूत से हुई.

2 उन्हें देखकर याकोब ने कहा, "यह परमेश्वर का शिविर है!" उन्होंने उस जगह को माहानाईम नाम दिया.

3 याकोब ने अपने भाई एसाव के पास एदोम के सेईर देश में दूत भेजे,

4 और उनसे कहा कि मेरा स्वामी एसाव से यह कहना कि आपके सेवक याकोब कहता है, "मैं लाबान के यहां पराये होकर अब तक वहीं रहा.

5 अब मेरे पास बैल, गधे तथा स्त्री-पुरुष व दासियां हैं. मेरे अधिपति एसाव के पास दूत भेजने का कारण यह था कि आपकी कृपादृष्टि मुझ पर बनी रहे."

6 जब वे दूत लौटकर याकोब के पास आए और उन्हें बताया, "हम आपके भाई से मिले. वे आपसे मिलने यहां आ रहे हैं और उनके साथ चार सौ व्यक्तियों का झुंड भी है."

7 यह सुन याकोब बहुत डर गये एवं व्याकुल हो गए. उन्होंने अपने साथ चल रहे लोगों को दो भागों में बांट दिया तथा भेड़-बकरियों, गाय-बैलों तथा ऊंटों के दो समूह बना दिए.

8 यह सोचकर कि, अगर एसाव आकर एक झुंड पर आक्रमण करेगा, तो दूसरा झुंड बचकर भाग जायेगा.

9 याकोब ने कहा, "हे याहवेह, मेरे पिता अब्राहाम तथा यित्सहाक के परमेश्वर, आपने ही मुझे अपने देश जाने को कहा और कहा कि मैं तुम्हें आशीषित करूंगा.

10 आपने मुझे जितना प्रेम किया, बढ़ाया और आशीषित किया, मैं उसके योग्य नहीं हूं, क्योंकि जाते समय मेरे पास एक छड़ी ही थी जिसको लेकर मैंने यरदन नदी पार की थी और

11 अब मैं इन दो समूहों के साथ लौट रहा हूं. प्रभु, मेरी बिनती है कि आप मुझे मेरे भाई एसाव से बचाएं. मुझे डर है कि वह आकर मुझ पर, व इन माताओं और बालकों पर आक्रमण करेगा.

12 आपने कहा था कि निश्चय मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा तथा तुम्हारे वंश की संख्या सागर तट के बालू समान कर दूंगा."

13 याकोब ने रात वहीं बिताई. और उन्होंने अपनी संपत्ति में से अपने भाई एसाव को उपहार देने के लिए अलग किया:

Genesis 33:1

14 दो सौ बकरियां तथा बीस बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस मेढ़े,

15 तीस दुधार ऊंटनियां तथा उनके शावक, चालीस गायें तथा
दस सांड़, बीस गधियां तथा दस गधे.

16 याकोब ने पशुओं के अलग-अलग झुंड बनाकर अपने
सेवकों को सौंप दिए, और उन्होंने अपने सेवकों से कहा, "मेरे
आगे-आगे चलते जाओ तथा हर एक झुंड के बीच थोड़ी जगह
छोड़ना."

17 जो सबसे आगे था उनसे कहा: "जब तुम मेरे भाई एसाव से
मिलोगे और वह तुमसे पूछेगा, 'कौन है तुम्हारा स्वामी और
कहां जा रहे हो? और ये सब पशु, जो आगे जा रहे हैं, किसके
हैं?'

18 तब तुम उनसे कहना, 'ये सभी आपके भाई याकोब के हैं,
जो उपहार में उनके अधिपति एसाव को दिए जा रहे हैं. और
याकोब हमारे पीछे आ रहे हैं.' "

19 याकोब ने यही बात दूसरे तथा तीसरे तथा उन सभी को
कही, जो उनके पीछे-पीछे आ रहे थे.

20 "तुम यह कहना, 'आपके सेवक याकोब पीछे आ रहे हैं.' "
क्योंकि याकोब ने सोचा, "इतने उपहार देकर मैं एसाव को
खुश कर दूंगा. इसके बाद मैं उनके साथ जाऊंगा. तब ज़रूर,
वह मुझे स्वीकार कर लेंगे."

21 और इसी तरह सब उपहार आगे बढ़ते गये, और याकोब
तंबू में रहे.

22 उस रात याकोब उठे और अपनी दोनों पत्नियों, दोनों
दासियों एवं बालकों को लेकर यब्बोक के घाट के पार चले
गए.

23 याकोब ने सबको नदी की दूसरी तरफ भेज दिया.

24 और याकोब वहीं रुक गये. एक व्यक्ति वहां आकर सुबह
तक उनसे मल्ल-युद्ध करता रहा.

25 जब उस व्यक्ति ने यह देखा कि वह याकोब को हरा नहीं
सका तब उसने याकोब की जांघ की नस को छुआ और मल्ल-
युद्ध करते-करते ही उनकी नस चढ़ गई.

26 यह होने पर उस व्यक्ति ने याकोब से कहा, "अब मुझे जाने
दो." किंतु याकोब ने उस व्यक्ति से कहा, "नहीं, मैं आपको तब
तक जाने न दूंगा, जब तक आप मुझे आशीष न देंगे."

27 तब उसने याकोब से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" उसने
कहा, "याकोब."

28 तब उस व्यक्ति ने उनसे कहा, "अब से तुम्हारा नाम याकोब
नहीं बल्कि इस्राएल होगा, क्योंकि परमेश्वर से तथा मनुष्यों से
संघर्ष करते हुए तुम जीत गए हो."

29 तब याकोब ने उस व्यक्ति से कहा, "कृपया आप मुझे
अपना नाम बताइए." उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "क्या करोगे
मेरा नाम जानकर?" और तब उस व्यक्ति ने वहीं याकोब को
आशीष दी.

30 जहां यह सब कुछ हुआ याकोब ने उस स्थान का नाम
पनीएल रखा, यह कहकर कि "मैंने परमेश्वर को आमने-
सामने देखा, फिर भी मेरा जीवन बच गया!"

31 जब याकोब पनीएल से निकले तब सूरज उसके ऊपर उग
आया था. वह अपनी जांघ के कारण लंगड़ा रहे थे.

32 इस घटना का स्मरण करते हुए इस्राएल वंश आज तक
जांघ की पुट्ठे की मांसपेशी को नहीं खाते क्योंकि उस व्यक्ति
ने याकोब के जांघ की इसी मांसपेशी पर छुआ था.

Genesis 33:1

1 याकोब ने देखा कि दूर एसाव अपने चार सौ साथियों के साथ
आ रहे थे; याकोब ने अपने बालकों को लियाह, राहेल तथा
दोनों दासियों को दो भागों में कर दिये.

2 उन्होंने दोनों दासियों तथा उनके बालकों को सबसे आगे कर
दिया, उनके पीछे लियाह और उसकी संतान तथा राहेल और
योसेफ़ सबसे पीछे थे.

Genesis 34:1

3 याकोब सबसे आगे थे और एसाव को देखते ही सात बार
भूमि पर गिरकर दंडवत किया और एसाव के पास पहुंचे.

4 एसाव दौड़ते हुए आए और याकोब को गले लगाया और
चुंबन किया. और दोनो रोने लगे.

5 एसाव ने स्त्रियों एवं बालकों को देखा. उसने पूछा, "तुम्हारे
साथ ये सब कौन हैं?" याकोब ने कहा ये बालक, "जो परमेश्वर
ने अपनी कृपा से आपके दास को दिये हैं."

6 और दासियां अपने-अपने बालकों के साथ पास आई और
झुककर प्रणाम किया.

7 वैसे ही लियाह अपने बालकों के साथ पास आई, उसने भी
झुककर प्रणाम किया और फिर राहेल के साथ योसेफ़ भी
आया और प्रणाम किया.

8 एसाव ने याकोब से पूछा, "ये गाय, बैल मुझे क्यों दिया, समझ
में नहीं आया." याकोब बोले, "मेरे अधिपति, मैं इसके द्वारा
आपकी दया पाना चाहता हूं."

9 एसाव ने कहा, "हे मेरे भाई मेरे पास सब कुछ है. और जो
कुछ तुम्हारा है, उसे अपने ही पास रहने दो."

10 याकोब ने कहा, "नहीं! यदि आपका अनुग्रह मुझ पर है, तो
मेरी ओर से इन उपहारों को स्वीकार कर लीजिए; क्योंकि
आपको देखकर लगा कि मैंने परमेश्वर के दर्शन पा लिये, और
आपने मुझे दिल से स्वीकारा भी है.

11 कृपा कर आप मेरे द्वारा प्रस्तुत इस भेंट को स्वीकार कर
लीजिए, जो मैं आपके लिए लाया हूं, क्योंकि मेरे प्रति परमेश्वर
अत्यंत कृपालु रहे हैं तथा मेरे पास बहुत है." जब याकोब ने
ज़बरदस्ती की, एसाव ने वह भेंट स्वीकार कर ली.

12 फिर एसाव ने कहा, "चलो, यहां से अपने घर चलें. मैं तुम्हारे
आगे-आगे चलूंगा."

13 इस पर याकोब ने एसाव से कहा, "मेरे स्वामी, आप जानते
हैं कि बालक कमजोर हैं भेड़-बकरी एवं गायें जो दूध देनेवाली
हैं, उनका ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है.

14 इसलिये मेरे स्वामी, आप आगे चलिये और मैं आपके पीछे-
पीछे धीरे से, भेड़-बकरी एवं गायों का ध्यान रखते हुए उनकी
रफ़्तार में चलूंगा."

15 तब एसाव ने याकोब से कहा, "मैं अपने साथियों को आपके
पास छोड़ देता हूं." तब याकोब ने कहा, "क्या इसकी ज़रूरत
है? मुझ पर मेरे स्वामी की दया बनी रहे, यही काफ़ी है."

16 इसलिये एसाव उसी दिन सेईर चले गये.

17 याकोब सुक्कोथ की दिशा में आगे बढ़े. वहीं उन्होंने अपने
लिए एक घर बनाया तथा पशुओं के रहने के लिए प्रबंध किया.
इसलिये इस स्थान का नाम सुक्कोथ पड़ गया.

18 पद्दन-अराम से यात्रा करते हुए याकोब कनान देश के
शेकेम नगर पहुंचे और उन्होंने नगर के पास तंबू खड़े किए.

19 जिस स्थान पर उन्होंने तंबू खड़े किए, उस ज़मीन को
उन्होंने शेकेम के पिता, हामोर के पुत्रों से एक सौ चांदी की
मुद्राएं देकर खरीदा था.

20 फिर याकोब ने वहां एक वेदी बनाई, जिसे उन्होंने एल-
एलोहे-इस्राएल नाम रखा.

Genesis 34:1

1 लियाह की पुत्री दीनाह उस देश की लड़कियों के साथ
स्त्रियों को देखने के लिए बाहर गई.

2 उस देश के शासक हिव्वी हामोर के पुत्र शेकेम ने उसे देखा,
वह उसे अपने साथ ले गया उसने उसे पकड़ लिया और उसने
उसके साथ बलात्कार किया.

3 याकोब की पुत्री दीनाह से उसे प्रेम था और उसके प्रति
उसका व्यवहार अच्छा था.

4 शेकेम ने अपने पिता हामोर से कहा, "मेरा विवाह इस युवती
से कर दीजिए."

Genesis 34:1

5 जब याकोब को पता चला कि शेकेम ने उनकी पुत्री को
दूषित कर दिया है, उस समय उनके पुत्र पशुओं के साथ
मैदान में थे; इसलिये याकोब उनके लौटने तक शांत रहे.

6 इसी समय शेकेम का पिता हामोर याकोब से मिलने आये.

7 जब याकोब के पुत्र लौटे और उन्हें सब बात पता चली तब वे
बहुत उदास और नाराज हुए, क्योंकि उसने याकोब की पुत्री
से संभोग द्वारा इस्राएल में मूर्खता का काम कर डाला था, एक
ऐसा काम, जो अनुचित था.

8 किंतु हामोर ने उनसे कहा, "मेरा पुत्र शेकेम आपकी पुत्री को
चाहता है. कृपया उसका विवाह मेरे पुत्र से कर दीजिए.

9 हमारे साथ वैवाहिक संबंध बना लीजिए आप हमें अपनी
पुत्रियां दीजिए और आप हमारी पुत्रियां लीजिए.

10 इस प्रकार आप हमारे साथ इस देश में मिलकर रह पायेंगे.
आप इस देश में रहिये, व्यवसाय कीजिए तथा संपत्ति प्राप्त
करते जाइए."

11 शेकेम ने दीनाह के पिता तथा उसके भाइयों से यह भी
कहा, "यदि मैंने आपकी कृपादृष्टि प्राप्त कर ली है, तो आप
अपने मन की बात कह दीजिए कि मैं उसे पूरा कर सकूं.

12 आप वधू के लिए जो भी मांगेंगे उसे मैं पूरा करूंगा. किंतु
मेरा विवाह उसी युवती से कीजिए."

13 तब याकोब के पुत्रों ने शेकेम को तथा उसके पिता हामोर
को छलपूर्ण उत्तर दिया, क्योंकि शेकेम ने उनकी बहन दीनाह
को दूषित कर दिया था.

14 उन्होंने उन्हें उत्तर दिया, "यह हमारे लिए संभव नहीं है कि
हम किसी ख़तना रहित को अपनी बहन दे सकें. क्योंकि यह
हमारे लिए शर्मनाक है.

15 एक ही शर्त पर यह बात हो सकती है: आपके देश के हर
एक पुरुष का ख़तना किया जाए, ताकि आप हमारे समान हो
जाएं.

16 तब हममें पुत्रियों का लेना देना हो सकेगा और हम आपके
बीच रह सकेंगे, और हम एक ही लोग बन जाएंगे.

17 यदि आपको हमारी बात सही नहीं लगी, तो हम अपनी पुत्री
को लेकर यहां से चले जाएंगे."

18 उनकी यह बात हामोर तथा उसके पुत्र शेकेम को पसंद
आई.

19 याकोब की पुत्री शेकेम को बहुत पसंद थी कि उसने इस
काम को करने में देरी नहीं की. अपने पिता के परिवार में वह
सम्मानित व्यक्ति था.

20 इसलिये हामोर एवं उसके पुत्र शेकेम ने नगर में जाकर
नगर के सब लोगों से कहा,

21 "ये लोग हमारे साथ हैं, इसलिये हम इन्हें इस देश में रहने
देंगे, इनके साथ व्यापार करेंगे, क्योंकि हमारा देश इनके लिए
पर्याप्त है. हम इनकी कन्याएं लें तथा अपनी कन्याएं इन्हें दे.

22 ये एक ही शर्त पर हमारे साथ रहने के लिए सहमत हुए हैं,
कि हम सभी पुरुषों का ख़तना किया जाए, जैसा उनका किया
जाता है कि हम सभी एक हो जाएं.

23 तब इनका पशु धन, इनकी संपत्ति तथा इनके समस्त पशु
हमारे ही तो हो जाएंगे न? बस, हम उनसे यहां सहमत हो जाएं,
कि वे हमारे साथ ही निवास करने लगें."

24 उन सभी ने, जो नगर से निकल रहे थे, हामोर तथा उसके
पुत्र शेकेम की बात मान ली. उस नगर द्वार से बाहर निकलते
हुए हर एक पुरुष का ख़तना कर दिया गया.

25 तीन दिन बाद, जब नगर का हर एक पुरुष पीड़ा में था,
याकोब के दोनों बेटे शिमओन और लेवी ने, जो दीनाह के भाई
थे, अचानक हमला कर दिया तथा हर एक पुरुष की हत्या कर
दी.

26 उन्होंने तलवार से हामोर तथा उसके पुत्र शेकेम की हत्या
की और शेकेम के घर से दीनाह को लेकर आये.

27 और याकोब के अन्य पुत्रों ने नगर को लूट लिया, क्योंकि
उन्होंने उनकी बहन को दूषित कर दिया था.

28 उन्होंने नगर के लोग भेड़-बकरी, उनके पशु, गधे, नगर में
जो कुछ उनका था जो कुछ खेतों में था, सभी कुछ ले लिया.

29 उन्होंने उनकी पूरी संपत्ति पर अधिकार करके उसे लूट
लिया, यहां तक कि उन्होंने उनकी पत्नियों एवं उनके बालकों
को बंदी बनाकर सभी कुछ, जो उनके घरों में था, लूट लिया.

30 यह सब देख याकोब ने शिमओन तथा लेवी से कहा, "तुमने
तो मुझे इन देशवासियों के लिए दुश्मन बनाकर कनानियों एवं
परिज़्ज़ियों के बीच विपत्ति में डाल दिया है. यदि वे सब एकजुट
होकर मुझ पर आक्रमण कर देंगे, तो मैं नष्ट हो जाऊंगा, मैं
और मेरा संपूर्ण परिवार, क्योंकि हम गिनती में कम हैं."

31 उन्होंने कहा, "क्या हमारी बहन से उन्होंने जो एक वेश्या के
समान बर्ताव किया; क्या वह सही था?"

Genesis 35:1

1 परमेश्वर ने याकोब से कहा, "उठो और जाकर बेथेल में बस
जाओ. वहां परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाओ, जिसने तुझे उस
समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भाग रहा
था."

2 इसलिये याकोब ने अपने पूरे घर-परिवार तथा उन सभी
व्यक्तियों को, जो उनके साथ थे, कहा, "इस समय तुम्हारे पास
जो पराए देवता हैं, उन्हें दूर कर दो और अपने आपको शुद्ध
कर अपने वस्त्र बदल दो.

3 उठो, हम बेथेल को चलें ताकि वहां मैं परमेश्वर के लिए एक
वेदी बनाऊं, जिन्होंने संकट की स्थिति में मेरी दोहाई सुनी तथा
जहां-जहां मैं गया जिनकी उपस्थिति मेरे साथ साथ रही."

4 यह सुन उन्होंने याकोब को सब पराए देवता दे दिए, जो
उन्होंने अपने पास रखे थे. इसके अलावा कानों के कुण्डल भी
दिये. याकोब ने इन सभी को उस बांज वृक्ष के नीचे दफना
दिया, जो शेकेम के पास था.

5 जब वे वहां से निकले तब पूरे नगर पर परमेश्वर का भय छाया
हुआ था. किसी ने भी याकोब के पुत्रों का पीछा नहीं किया.

6 इस प्रकार याकोब तथा उनके साथ के सभी लोग कनान देश
के लूज़ (अर्थात् बेथेल) नगर पहुंच गए.

7 याकोब ने वहां एक वेदी बनाई और उस स्थान का नाम एल-
बेथेल रखा, क्योंकि इसी स्थान पर परमेश्वर ने स्वयं को उन पर
प्रकट किया था, जब वह अपने भाई से बचकर भाग रहे थे.

8 उसी समय रेबेकाह की धाय दबोरा की मृत्यु हो गई, उसे
बेथेल के बाहर बांज वृक्ष के नीचे दफ़ना दिया. उस वृक्ष का
नाम अल्लोन-बाकूथ रखा गया (अर्थात् रोने का बांज वृक्ष).

9 जब याकोब पद्दन-अराम से आए, परमेश्वर दुबारा याकोब
पर प्रकट हुए. परमेश्वर ने उनको आशीष दी.

10 और कहा, "तुम्हारा नाम याकोब है, अब से तुम्हारा नाम
इस्राएल होगा." इस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें इस्राएल नाम दे
दिया.

11 परमेश्वर ने उनसे यह भी कहा, "मैं एल शद्दय अर्थात्
सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं; तुम फूलो फलो और बढ़ते जाओ.
तुम एक राष्ट्र तथा एक जनता का समूह भी होंगे, तुम्हारे वंश
में राजा पैदा होंगे.

12 जो देश मैंने अब्राहाम तथा यित्सहाक को दिया था, वह मैं
तुम्हें भी दूंगा, तथा यही देश तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को दूंगा."

13 इसके बाद परमेश्वर उस स्थान से ऊपर चढ़ गए, जिस स्थान
पर उन्होंने याकोब से बातचीत की थी.

14 याकोब ने उस स्थान पर, जहां परमेश्वर से उनकी बात हुई
थी, वहां खंभा खड़ा किया—यह एक पत्थर था. याकोब ने इस
पर पेय बलि चढ़ाई तथा उस पर तेल भी उंडेला.

15 जिस स्थान पर परमेश्वर ने उनसे बात की थी, उस स्थान का
नाम उन्होंने बेथेल रखा.

Genesis 36:1

16 फिर वे बेथेल से चलना शुरू करके एफ़राथा नामक जगह
के पास थे, कि राहेल की तबियत खराब हो गई.

17 जब वह इस प्रसव पीड़ा में ही थी, धाय ने कहा, “डरो मत,
अब तो तुम एक और पुत्र को जन्म दे चुकी हो.”

18 जब उसके प्राण निकल ही रहे थे, उसने इस पुत्र का नाम
बेन-ओनी रखा. किंतु उसके पिता ने उसे बिन्यामिन कहकर
पुकारा.

19 और वहां इस प्रकार राहेल की मृत्यु हुई तथा उसे एफ़राथा
(अर्थात् बेथलेहेम) में दफ़ना दिया.

20 याकोब ने उसकी कब्र पर एक स्तंभ खड़ा किया, राहेल की
कब्र का यह स्तंभ आज तक वहां स्थित है.

21 फिर इस्राएल ने अपनी यात्रा शुरू की और उन्होंने ऐदेर के
स्तंभ से आगे बढ़कर तंबू डाला.

22 जब इस्राएल उस देश में रह रहे थे, तब रियूबेन ने अपने
पिता की रखेल बिलहाह से संभोग किया, जो इस्राएल से छिपा
न रहा. याकोब के पुत्र संख्या में बारह थे.

23 इनमें लियाह के पुत्र: याकोब का बड़ा बेटा रियूबेन, फिर
शिमओन, लेवी, यहूदाह, इस्साखार तथा ज़ेबुलून थे.

24 राहेल के पुत्र: योसेफ़ तथा बिन्यामिन.

25 राहेल की दासी बिलहाह के पुत्र: दान तथा नफताली.

26 लियाह की दासी ज़िलपाह के पुत्र: गाद तथा आशेर. पद्दन-
अराम में ही याकोब के ये पुत्र पैदा हुए थे.

27 याकोब अपने पिता यित्सहाक के पास पहुंच गए, जो
किरयथ-अरबा (अर्थात् हेब्रोन) के ममरे में रहते थे. अब्राहाम
तथा यित्सहाक यहीं रहते थे.

28 यित्सहाक की आयु एक सौ अस्सी वर्ष की हुई.

29 तब उनकी मृत्यु हुई. उनके पुत्र एसाव तथा याकोब ने उन्हें
वहीं दफनाया जहां उनके पिता को दफनाया गया था.

Genesis 36:1

1 एसाव (अर्थात् एदोम) के वंशज इस प्रकार है:

2 एसाव ने कनान देश की ही कन्याओं से विवाह कर लिया.
हित्ती एलोन की पुत्री अदाह, अनाह की पुत्री तथा हिव्वी
ज़िबेओन की पौत्री ओहोलिबामाह थे.

3 इसके अलावा उन्होंने इशमाएल की पुत्री नेबाइयोथ की
बहन बसेमाथ से भी विवाह किया था.

4 एसाव से अदाह ने एलिफाज़ को जन्म दिया तथा बसेमाथ ने
रियुएल को जन्म दिया,

5 ओहोलिबामाह ने योउश, यालम तथा कोराह को जन्म दिया.
कनान देश में ही एसाव के ये पुत्र पैदा हुए.

6 इसके बाद एसाव अपनी पत्नियों, पुत्र-पुत्रियों, अपने संपूर्ण
घर-परिवार, अपने पशु, तथा अपनी समस्त संपत्ति को लेकर,
जो उसने कनान देश में पाई थी, अपने भाई याकोब से दूर देश
में जाकर रहा.

7 उन दोनों की संपत्ति इतनी अधिक थी कि दोनों का एक साथ
रहना मुश्किल था; वह भूमि दोनों परिवारों के पोषण के लिए
काफ़ी नहीं थी. उनके पास अत्यधिक पशु थे.

8 इसलिये एसाव (अर्थात् एदोम) सेईर के पर्वतीय क्षेत्र में रहने
लगे.

9 सेईर के पर्वतीय क्षेत्र में बसे हुए एदोमियों के वंश एसाव की
पीढ़ियां इस प्रकार हैं.

10 एसाव के पुत्र थे: एसाव की पत्नी अदाह से जन्मे एलिफाज़,
एसाव दूसरी की पत्नी बसेमाथ का पुत्र रियुएल.

Genesis 36:1

11 एलिफाज़ के पुत्र: तेमान, ओमर, ज़ेफो, गाताम तथा केनाज़
थे.

12 एसाव के पुत्र एलिफाज़ की दासी का नाम तिम्ना था, जिसने
एलिफाज़ से अमालेक को जन्म दिया. ये एसाव की पत्नी
अदाह की संतान हैं.

13 रियुएल के पुत्र थे: नाहाथ, ज़ेराह, शम्माह तथा मिज्जाह. ये
एसाव की पत्नी बसेमाथ द्वारा पैदा हुए थे.

14 अनाह की पुत्री, ज़िबेओन की पौत्री, एसाव की पत्नी
ओहोलिबामाह के पुत्र योउश, यालम तथा कोराह थे.

15 एसाव के पुत्रों में प्रमुख ये थे: एसाव के बड़े बेटे एलिफाज़
के पुत्र: तेमान, ओमर, ज़ेफो, केनाज़,

16 कोराह, गाताम, अमालेक. एदोम देश में एलिफाज़ के ये पुत्र
थे; ये सभी अदाह वंश के थे.

17 एसाव के पुत्र रियुएल के पुत्र: नाहाथ, ज़ेराह, शम्माह,
मिज्जाह. ये वे प्रधान हैं, जो एदोम देश में रियुएल द्वारा जन्मे
थे—ये वे हैं, जो एसाव की पत्नी बसेमाथ से पैदा हुए थे.

18 एसाव की पत्नी ओहोलिबामाह से पुत्र हैं: योउश, यालम,
कोराह. ये एसाव की पत्नी अनाह की पुत्री ओहोलिबामाह के
द्वारा जन्मे हैं.

19 ये एसाव (अर्थात् एदोम) के पुत्र तथा उनके प्रधान हैं.

20 ये उस देश के होरी सेईर के पुत्र हैं: लोतन, शोबल,
ज़िबेओन, अनाह,

21 दिशोन, एज़र तथा दिशान. ये सभी एदोम देश के वे प्रधान
हैं. जो होरियों के वंश के सेईर के पुत्र हैं.

22 लोतन के पुत्र: होरी तथा होमाम, तथा तिम्ना लोतन की बहन
थी.

23 शोबल के पुत्र थे: अलवान, मानाहाथ, एबल, शेफो तथा
ओनम.

24 ज़िबेओन के पुत्र ये है: अइयाह तथा अनाह (यह वही अनाह
है, जिसने निर्जन देश में, अपने पिता ज़िबेओन के गधों को
चराते हुए गर्म पानी के झरने की खोज की थी.)

25 अनाह की संतान हैं: दिशोन तथा ओहोलिबामाह, जो अनाह
की पुत्री थी.

26 दिशोन के पुत्र: हेमदान, एशबान, इथरान तथा चेरन.

27 एज़र के पुत्र: बिलहान, त्सावन और आकन.

28 दिशान के पुत्र: उज़ और अरान.

29 वे प्रधान, जो होरियों वंश के, ये है: लोतन, शोबल, ज़िबेओन,
अनाह,

30 दिशोन, एज़र तथा दिशान. सेईर देश में होरी जाति के लोग
प्रधान बने.

31 इसके पहले कि इस्राएल पर किसी राजा का शासन होता,
एदोम देश पर राज्य करनेवाले राजा ये थे:

32 बेओर का पुत्र बेला एदोम का राजा बना, तथा उसके द्वारा
शासित नगर का नाम था दिनहाबाह.

33 बेला के मरने के बाद, उसके स्थान पर बोज़राहवासी ज़ेराह
का पुत्र योबाब राजा बना.

34 योबाब के मरने के बाद, उसके स्थान पर तेमानियों के देश
का व्यक्ति हुशम राजा बना.

35 हुशम के मरने के बाद, उसके स्थान पर बेदद का पुत्र हदद
राजा बना. उसने मोआब देश में मिदियानी सेना को हरा दिया.
उसके द्वारा शासित नगर का नाम था आविथ.

36 हदद के मरने के बाद, उसके स्थान पर मसरेकाह का सामलाह राजा बना.

37 सामलाह के मरने के बाद, फरात नदी पर बसे रेहोबोथ का निवासी शाऊल उनके स्थान पर राजा बना.

38 शाऊल के मरने के बाद, उसके स्थान पर अखबोर का पुत्र बाल-हनन राजा बना.

39 अखबोर के पुत्र बाल-हनन के मरने के बाद, उसके स्थान पर हदद राजा बना. उस नगर का नाम पाऊ था तथा उसकी पत्नी का नाम मेहेताबेल था. वह मातरेद की पुत्री, और मातरेद मेत्साहब की पुत्री थी.

40 एसाव के वंश में जो प्रधान थे उनके नाम: तिम्ना, अलवाह, यथेथ,

41 ओहोलिबामाह, एलाह, पिनोन,

42 केनाज़, तेमान, मिबज़ार,

43 मगदिएल, इराम. ये सभी एदोम देश के प्रधान हुए. एक प्रदेश में जो रहा, उस प्रदेश का नाम भी वही था जो उनका पारिवारिक नाम था. यह एसाव, जो एदोमियों का गोत्रपिता था, उसका परिवार है.

Genesis 37:1

1 याकोब कनान देश में रहते थे. वहीं तो उनके पिता परदेशी होकर रहे थे.

2 यह है याकोब के परिवार का इतिहास. याकोब के वंश में योसेफ़ जब सत्रह वर्ष के थे वह अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियों को चराते थे, उनके पिता की पत्नियों बिलहाह तथा ज़िलपाह के पुत्र भी उनके साथ ही थे. योसेफ़ अपने पिता को अपने भाइयों की गलत आदतों के बारे में बताया करते थे.

3 इस्राएल अपने सभी बच्चों से ज्यादा योसेफ़ को प्यार करते थे; क्योंकि वह उनके बुढ़ापे की संतान थी. याकोब ने योसेफ़ के लिए रंग बिरंगा वस्त्र बनवाया था.

4 योसेफ़ के भाइयों ने देखा कि उनके पिता उनसे ज्यादा योसेफ़ को प्यार करते हैं; इसलिये वे योसेफ़ से नफ़रत करने लगे.

5 योसेफ़ ने एक स्वप्न देखा था, जिसे उसने अपने भाइयों को बताया. योसेफ़ के भाई योसेफ़ से ज्यादा नफ़रत करने लगे.

6 योसेफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "कृपया मेरा स्वप्न सुनिए.

7 हम सब खेत में पूला बांध रहे थे. मैंने देखा कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया. और आपके पूले मेरे पूले के आस-पास एकत्र हो गये और मेरे पूले को प्रणाम करने लगे."

8 यह सुन उनके भाई कह उठे, "तो क्या तुम हम पर अधिकार करने का विचार कर रहे हो? क्या तुम सच में हम पर अधिकार कर लोगे?" इसके बाद वे योसेफ़ से और ज्यादा नफ़रत करने लगे.

9 फिर योसेफ़ ने दूसरा सपना देखा. योसेफ़ ने कहा, "मैंने दूसरा सपना देखा है; मैंने सूरज, चांद और ग्यारह नक्षत्रों को मुझे प्रणाम करते देखा."

10 यह स्वप्न योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों को बताया, जिसे सुन उनके पिता ने उसे डांटते हुए कहा, "यह कैसा स्वप्न देखते हो तुम! क्या यह वास्तव में संभव है कि मैं, तुम्हारी माता एवं तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हें प्रणाम करेंगे?"

11 योसेफ़ के भाई उससे लगातार ईर्ष्या करते रहे. किंतु योसेफ़ के पिता ने इन सभी बातों को अपने मन में रखा.

12 योसेफ़ के भाई अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराने के लिए शेकेम गए थे.

13 इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, "तुम्हारे भाई शेकेम में भेड़-बकरी चरा रहे हैं न? मैं तुम्हें उनके पास भेजना चाहता हूं." योसेफ़ ने कहा, "मैं चला जाता हूं."

14 याकोब ने योसेफ़ से कहा, "तुम जाओ और अपने भाइयों का हाल पता करके आओ और मुझे बताओ." योसेफ़ को

Genesis 37:1

याकोब ने हेब्रोन घाटी से रवाना किया. और योसेफ़ शेकेम पहुंचे,

15 जब योसेफ़ एक मैदान में इधर-उधर देख रहे थे, तब एक व्यक्ति उन्हें मिला, जिसने उससे पूछा, "क्या ढूंढ़ रहे हो तुम?"

16 योसेफ़ ने कहा, "मैं अपने भाइयों को ढूंढ़ रहा हूं. क्या आप कृपा कर मुझे बताएंगे वे अपनी भेड़-बकरियां कहां चरा रहे हैं?"

17 उस व्यक्ति ने कहा, "वे तो यहां से जा चुके हैं, क्योंकि मैंने उन्हें यह कहते सुना था, 'चलो, अब दोथान जायें.' " इसलिये योसेफ़ अपने भाइयों को ढूंढ़ते दोथान पहुंचे.

18 जब भाइयों ने दूर से योसेफ़ को आते देखा, उसके नज़दीक आने के पहले ही उन्होंने उसको मार डालने का विचार किया.

19 उन्होंने कहा, "यह लो, आ गया स्वप्न देखनेवाला!

20 चलो, उसकी हत्या कर यहां किसी गड्ढे में फेंक दें, और हम कह देंगे, कि उसे किसी जंगली जानवर ने खा लिया; फिर हम देखते हैं उसके स्वप्न का क्या होता है."

21 किंतु रियूबेन योसेफ़ को बचाना चाहता था. इसलिये रियूबेन ने कहा "हम योसेफ़ को जान से नहीं मारेंगे;

22 बल्कि हम उसे बंजर भूमि के किसी गड्ढे में डाल देते हैं," रियूबेन ने ऐसा इसलिये कहा कि वह योसेफ़ को बचाकर पिता को सौंप देना चाहता था.

23 जैसे ही योसेफ़ अपने भाइयों के पास आये, उन्होंने योसेफ़ का रंग बिरंगा वस्त्र, जो वह पहने हुए थे उतार दिया,

24 और योसेफ़ को एक सूखे गड्ढे में डाल दिया, गड्ढा खाली था; उसमें पानी नहीं था.

25 यह करके वे भोजन करने बैठे. तभी उन्होंने देखा कि गिलआद की ओर से इशमाएलियों का एक समूह आ रहा था. उनके ऊंटों पर सुगंध गोंद, बलसान तथा गन्धरस लदे हुए थे. यह सब वे मिस्र ले जा रहे थे.

26 यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, "अपने भाई की हत्या कर उसे छुपाने से हमें कुछ नहीं मिलेगा.

27 हम इसे इन इशमाएलियों को बेच दें. हम इसकी हत्या न करें; अंततः वह हमारा भाई ही है, हमारा अपना खून." भाइयों को यह बात ठीक लगी.

28 उसी समय कुछ मिदियानी व्यापारी वहां से निकले, तब उन्होंने उनकी सहायता से योसेफ़ को गड्ढे से ऊपर खींच निकाला और उसे इशमाएलियों को बीस चांदी के सिक्कों में बेच दिया.

29 जब रियूबेन उस गड्ढे पर लौटा, तब उसने देखा कि योसेफ़ वहां नहीं हैं. यह देख उसने अपने वस्त्र फाड़ लिए.

30 उसने अपने भाइयों के पास जाकर पूछा, "वह तो वहां नहीं हैं! मुझे समझ नहीं आ रहा, अब मैं क्या करूं?"

31 भाइयों ने एक बकरी को मारा और उसके खून में योसेफ़ के सुंदर अंगरखे को डुबो दिया

32 और उस वस्त्र को अपने पिता के पास ले जाकर कहा, "हमें यह वस्त्र मिला; क्या यह आपके पुत्र का वस्त्र तो नहीं?"

33 याकोब ने वस्त्र देखकर कहा, "यह मेरे पुत्र का ही वस्त्र है. किसी जंगली पशु ने उसे खा लिया है."

34 तब याकोब ने अपने वस्त्र फाड़े, टाट पहन लिए और कई दिनों तक अपने बेटे के लिए रोते रहे.

35 सबने याकोब को दिलासा देने की कोशिश की, पर याकोब का दुःख कम न हुआ, और वे योसेफ़ के लिए रोते ही रहे. याकोब ने कहा, "मैं मरने के दिन तक (शीयोल तक) अपने पुत्र योसेफ़ के शोक में डूबा रहूंगा."

36 वहां, मिदियानियों ने मिस्र पहुंचकर योसेफ़ को पोतिफर को बेच दिया, जो फ़रोह का एक अधिकारी, अंगरक्षकों का प्रधान था.

Genesis 38:1

Genesis 38:1

1 जब उन्हीं दिनों यहूदाह अपने भाइयों के बीच से निकलकर
हीराह नामक अदुल्लामवासी व्यक्ति के साथ रहने चले गये.

2 तब शुआ नामक एक कनानी व्यक्ति की पुत्री से मिले और
उन्होंने उससे विवाह कर लिया और उससे प्रेम किया;

3 और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका एर नाम रखा.

4 उसने एक और पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम ओनान
रखा.

5 उसने एक और पुत्र को जन्म दिया, जिसका शेलाह नाम
रखा. तब यहूदाह केज़ीब में रहते थे.

6 यहूदाह ने एर, का विवाह तामार नामक स्त्री से किया.

7 यहूदाह का बड़ा बेटा याहवेह के दृष्टि में दुष्ट था; इसलिये
याहवेह ने उसे मार डाला.

8 यहूदाह ने ओनान से कहा, "अपने भाई की पत्नी के साथ
देवर का कर्तव्य पूरा करके अपने भाई के लिए संतान पैदा
करो."

9 ओनान ने कहा, ये संतान मेरी नहीं होगी; इसलिये जब कभी
वह समागम करता, अपना वीर्य भूमि पर गिरा देता था कि
उससे उसके भाई के लिए कोई संतान पैदा न हो सके.

10 उसका यह काम याहवेह को अच्छा नहीं लगा, इसलिये
याहवेह ने उसके प्राण ले लिए.

11 यह देख यहूदाह ने अपनी बहू तामार से कहा, "जब तक
मेरा पुत्र शेलाह, विवाह के योग्य न हो जाए, अपने पिता के घर
विधवा बनकर रहना." यहूदाह को डर था कि इस पुत्र की भी
मृत्यु उसके भाइयों के समान हो जाए. इसलिये तामार अपने
पिता के घर चली गई.

12 बहुत समय बाद शुआ की पुत्री अर्थात् यहूदाह की पत्नी की
मृत्यु हो गई. यहूदाह अपने शोक के समय के बाद अपनी भेड़ों
के ऊन कतरने वालों के पास तिमनाह को गया. उसके साथ
उसका मित्र अदुल्लामी हीराह भी था.

13 जब तामार को यह बताया गया, "तुम्हारे ससुर तिमनाह जा
रहे हैं,"

14 तब तामार ने अपने विधवा के वस्त्र उतार दिए, और अपना
मुंह घूंघट से छिपाकर एक चादर लपेट ली तथा तिमनाह के
मार्ग पर एनाइम के प्रवेश द्वार पर बैठ गई. यह इसलिये किया
क्योंकि उसका देवर शेलाह जवान हो चुका था तथा उससे
उसका विवाह नहीं किया गया था.

15 वहां से निकलते हुए उसे देख यहूदाह ने उसे वेश्या समझा,
क्योंकि उसने मुंह ढक रखा था.

16 इसलिये यहूदाह उसके पास गया और उससे कहा, "मुझे
तुम्हारे साथ संभोग करना है." यहूदाह को यह मालूम नहीं था
कि वह उसकी ही बहू थी. उसने पूछा, "क्या मजदूरी दोगे?"

17 यहूदाह ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें अपने झुंड में से एक बकरी
भिजवा दूंगा." तब तामार ने कहा, "उसे भिजवाने तक उसके
बदले में क्या दोगे?"

18 यहूदाह ने पूछा, "क्या चाहती हो?" उसने उत्तर दिया,
"तुम्हारी मुद्रामोहर, तुम्हारा बाजूबन्द तथा तुम्हारे हाथ की
लाठी." तब यहूदाह ने उसे ये देकर उससे संभोग किया और
चला गया. तामार यहूदाह से गर्भवती हो गई.

19 तामार ने घर जाकर अपना विधवा वस्त्र वापस पहन लिया.

20 जब यहूदाह ने अपने अदुल्लामी मित्र के हाथ वह शावक
बकरी उस स्त्री के लिए भेजी, तो वहां उसे वह स्त्री नहीं मिली.

21 उसने आस-पास लोगों से पूछा, "वह वेश्या कहां है, जो
एनाइम मार्ग पर बैठा करती है?" उन्होंने कहा, "यहां कोई
वेश्या कभी थी ही नहीं."

22 इसलिये वह यहूदाह के पास लौट गया और उसे बताया,
"वह मुझे नहीं मिली. इतना ही नहीं, वहां लोगों ने बताया कि
वहां तो कभी कोई वेश्या थी ही नहीं."

Genesis 39:1

23 यह सुन यहूदाह ने उससे कहा, “तब तो उसे वे चीज़ें रख
लेने दो अन्यथा तुच्छ हम ही बन जाएंगे. मैंने तो उसके लिए
बकरी भिजवा दी थी, किंतु हम उसका पता नहीं लगा सके.”

24 लगभग तीन माह बाद यहूदाह को बताया गया, “तुम्हारी
बहू ने व्यभिचार किया है और वह गर्भवती है.” यहूदाह ने
कहा, “उसे बाहर लाओ ताकि उसे जला दें!”

25 जब उसे बाहर ला रहे थे, तो उसने अपने ससुर को यह
संदेश भेजा, “मैं उस व्यक्ति से गर्भवती हूं जिसकी ये वस्तुएं
हैं.” तामार ने कहा, “देखो, कि यह मुद्रामोहर, बाजूबन्द तथा
लाठी किसकी है?”

26 यहूदाह ने ये वस्तुएं देखते ही पहचान लीं और कहा, “वह
तो मुझसे कम दोषी है, क्योंकि मैंने ही उसे शेलाह की पत्नी
होने से रोका था.” यहूदाह ने उससे पुनः संभोग नहीं किया.

27 जब प्रसव का समय आया तब पता चला कि उसके गर्भ में
जुड़वां बच्चे हैं.

28 जब प्रसव पीड़ा हो रही थी एक ने हाथ बाहर निकाला तो
धाय ने उसके हाथ में यह कहते हुए लाल डोरी बांध दी, “कि
यह पहले जन्मा है.”

29 लेकिन उसने अपना हाथ अंदर खींच लिया और उसके
भाई का जन्म उससे पहले हुआ. तब धाय ने कहा, “तुम ही
पहले बाहर निकलने में समर्थ हुए!” इसलिये उसका नाम
पेरेज़ रखा.

30 फिर उसके भाई का जन्म हुआ, जिसके हाथ पर वह लाल
डोर बांधी गई थी. उसका नाम ज़ेराह रखा.

Genesis 39:1

1 जब योसेफ़ को मिस्र ले गये, तब फ़रोह के अंगरक्षकों के
प्रधान मिस्री पोतिफर ने उसे उन इशमाएलियों से मोल ले
लिया जो उसे वहां लाए थे.

2 योसेफ़ पर याहवेह की कृपा थी, इसलिये वह सफल व्यक्ति
बन गये. वह मिस्री स्वामी के घर में रहते थे.

3 योसेफ़ के स्वामी ने यह समझ लिया था कि योसेफ़ पर
याहवेह की कृपा है, वह जो भी काम करते हैं, याहवेह उस
काम को सफल कर देते थे.

4 इस कारण योसेफ़ उनके कृपापात्र बन उनकी सेवा में लग
गये. पोतिफर ने उन्हें अब अपने पूरे घर का तथा संपत्ति का
अधिकारी बना दिया था.

5 और जब से योसेफ़ को संपत्ति का अधिकारी बनाया याहवेह
ने योसेफ़ के कारण उस मिस्री घर को बहुत आशीष दी.
याहवेह की आशीष पोतिफर के घर में और उसके खेतों में
थी.

6 इसलिये पोतिफर ने अपनी पूरी संपत्ति योसेफ़ को सौंप दी.
पोतिफर अपने भोजन के अलावा किसी भी चीज़ पर ध्यान
नहीं देता था. योसेफ़ सुंदर व रूपवान युवक थे,

7 और कुछ समय बाद पोतिफर की पत्नी योसेफ़ के प्रति गलत
सोच रखने लगी और उससे कहा, “मुझसे समागम करो!”

8 किंतु योसेफ़ ने मना किया और अपनी स्वामिनी से कहा,
“यह समझने की कोशिश कीजिए कि इस घर में मेरे स्वामी
किसी भी विषय की चिंता नहीं करते, उन्होंने तो अपनी पूरी
संपत्ति ही मेरे पास छोड़ दी है.

9 इस घर में कोई भी मुझसे बड़ा नहीं है. मेरे स्वामी ने मुझे
आपके अलावा किसी भी वस्तु से अलग नहीं रखा है, क्योंकि
आप उनकी पत्नी हैं. इसलिये यह कैसे संभव है कि मैं ऐसी
दुष्टता कर परमेश्वर के विरुद्ध पाप करूं?”

10 वह दिन-प्रतिदिन योसेफ़ से समागम के लिए आग्रह करती
रही, योसेफ़ न तो समागम के लिए तत्पर हुए और न ही उसके
पास रहने के लिए तैयार हुए.

11 एक दिन जब घर में कोई भी सेवक नहीं था और योसेफ़
घर में अपने काम करने गये.

12 पोतिफर की पत्नी ने योसेफ़ के वस्त्र पकड़ लिए और उनसे
आग्रह करने लगी, “मुझसे संभोग करो!” योसेफ़ अपना वस्त्र
उसी के हाथ में छोड़कर भागकर बाहर आ गये.

13 जब उस स्त्री ने देखा कि योसेफ़ अपना वस्त्र उसके हाथों
में छोड़कर बाहर भाग गए,

14 उसने सब सेवकों को बुलाया और कहा, “यह देखो, मेरे
पति ने इस इब्री को हमारी देखभाल के लिए रखा है लेकिन
वह मुझे दूषित करने मेरे पास आया तब मैं चिल्ला पड़ी.

15 जैसे ही उसने मेरी चिल्लाहट सुनी, वह अपना वस्त्र मेरे साथ
छोड़कर बाहर भाग गया.”

16 योसेफ़ का वह वस्त्र अपने पति के लौटने तक अपने पास
रखा.

17 पति के आने पर उसने बताया: “आप जिस इब्री दास को
यहां लाए हैं, वह मेरा अपमान करने यहां आया था.

18 जैसे ही मैं चिल्लाई, वह अपना वस्त्र छोड़कर बाहर भाग
गया.”

19 जब योसेफ़ के स्वामी ने अपनी पत्नी की यह बात सुनी,
‘आपके सेवक ने मुझसे ऐसा व्यवहार किया’ तब उसे बहुत
गुस्सा आया.

20 योसेफ़ के स्वामी ने उसे कारागार में डाल दिया, यह वही
स्थान था जहां राजा के अपराधी रखे जाते थे. योसेफ़ इसी
कारागार में थे,

21 किंतु योसेफ़ पर याहवेह की कृपा थी और इसलिये
कारागार के अधिकारी योसेफ़ का पूरा ध्यान रखते थे.

22 कारागार के अधिकारी ने योसेफ़ को कारागार की पूरी
जवाबदारी सौंप दी; कारागार में जो कुछ होता था योसेफ़ के
कहने से ही होता था.

23 कारागार के अधिकारी जानते थे कि योसेफ़ पर याहवेह की
कृपा है और योसेफ़ जो कुछ करते थे, याहवेह उस काम को
सफल करते थे.

Genesis 40:1

1 कुछ समय बाद राजा फ़रोह के कटोरा-वाहक और उनके
खाना बनानेवाले ने अपने स्वामी फ़रोह के विरुद्ध कुछ गलती
की.

2 और प्रधान खानसामे और प्रधान पिलाने वाले दोनों पर राजा
गुस्सा हुए,

3 इसलिये राजा ने उन दोनों को कारावास में डाल दिया, जहां
योसेफ़ भी बंदी थे.

4 अंगरक्षकों के प्रधान ने योसेफ़ के हाथ उन दोनों को सौंप
दिया. योसेफ़ उनका ध्यान रखते थे. और वे दोनों कुछ समय
तक कारावास में रहे,

5 तब एक रात दोनों ने अलग-अलग सपना देखा, और हर एक
सपने का अपना अलग-अलग अर्थ था.

6 जब सुबह योसेफ़ वहां आए और उन दोनों को देखा कि वे
उदास थे.

7 योसेफ़ ने जो उसके साथ उसके स्वामी के घर में कारावास
में थे, उनसे पूछा: “आप दोनो ऐसे उदास क्यों हैं?”

8 उन्होंने कहा, “हम दोनों ही ने स्वप्न देखा है, किंतु कोई भी
नहीं है, जो उसका मतलब बता सके.” यह सुनकर योसेफ़ ने
कहा, “क्या आप नहीं जानते कि स्वप्न की व्याख्या परमेश्वर की
ओर से होती है? कृपया आप मुझे अपना स्वप्न बताएं.”

9 तब प्रधान पिलाने वाले ने योसेफ़ से कहा, “अपने स्वप्न में मैंने
देखा कि मेरे पास एक दाखलता है,

10 जिसमें तीन शाखाएं हैं. जैसे ही इन पर कलियां खिली, उनमें
फूल खिलें और अंगूर लगकर पक गए.

11 और मैं फ़रोह का प्याला मेरे हाथ में था, और मैंने अंगूर
लेकर प्याले में रस निचोड़ा. फिर मैंने प्याला फ़रोह के हाथों में
दिया.”

12 स्वप्न सुनकर योसेफ़ ने कहा, “वे तीन शाखाएं तीन दिन हैं.

13 और तीन दिन में फ़रोह आपको वापस बुला लेंगे और आपका काम दुबारा आपको सौंप देंगे और आप फिर से पिलाने का काम शुरू करेंगे.

14 योसेफ़ ने उनसे कहा जब आप फ़रोह राजा के पास जायेंगे तब मुझे मत भूलना, लेकिन राजा को मेरे बारे में बताना और मुझे कारावास से बाहर निकलवाना.

15 मुझे अपने घर इब्रियों के देश से ज़बरदस्ती से लाया गया था और यहां पर भी मैंने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है जिसके लिये मुझे इस काल-कोठरी में डाला गया.”

16 फिर प्रधान खाना बनानेवाले ने देखा कि दूसरे नौकर के स्वप्न की व्याख्या उनके पक्ष में थी, तब उसने योसेफ़ से कहा, “मैंने भी एक स्वप्न देखा है: मैंने देखा कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की तीन टोकरियां रखी हैं.

17 सबसे ऊपर की टोकरी में फ़रोह के लिए तैयार किए गए सभी प्रकार के व्यंजन थे, टोकरी सिर पर रखी हुई थी; पक्षी उसमें से खाते जा रहे थे.”

18 स्वप्न सुनकर योसेफ़ ने अर्थ बताया: “वे तीन टोकरियां तीन दिन हैं.

19 इन तीन दिनों में फ़रोह तुम्हारा सिर काट देंगे और शरीर को पेड़ पर लटका देंगे और पक्षी आकर तुम्हारे शरीर को नोचेंगे.”

20 यही हुआ. तीसरे दिन फ़रोह का जन्मदिन था उसने अपने सभी सेवकों को भोज दिया उस दिन प्रधान पिलाने वाले और प्रधान पकाने वाले दोनों को कारावास से बाहर लाया गया.

21 प्रधान पिलाने वाले को फिर से उसकी जवाबदारी दे दी गई; वह फ़रोह के हाथ में फिर से प्याला देने लगे.

22 लेकिन प्रधान पकाने वाले को फांसी पर लटका दिया; सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा योसेफ़ ने बताया था.

23 यह सब देखकर भी प्रधान पिलाने वाले ने योसेफ़ को याद न किया; पर भूल गया.

Genesis 41:1

1 पूरे दो साल बाद फ़रोह ने एक स्वप्न देखा: वे नील नदी के किनारे खड़े हैं.

2 नदी में से सात सुंदर एवं मोटी गायें निकली और घास चरने लगीं.

3 फिर और सात गायें नील नदी में से निकलीं, जो कुरूप तथा पतली थीं. ये नदी के किनारे उन मोटी गायों के पास आकर खड़ी हो गईं.

4 और कुरूप एवं दुर्बल गायों ने उन सुंदर एवं मोटी गायों को खा लिया. इससे फ़रोह की नींद खुल गई.

5 जब उन्हें फिर नींद आई, तब उन्होंने एक और स्वप्न देखा: एक ही तने में से सात बालें उगीं, जो अच्छी और मोटी मोटी थीं.

6 फिर सात और बालें उगीं जो पतली और मुरझाई हुई थीं,

7 तब पतली बालों ने मोटी बालों को निगल लिया. इससे फ़रोह की नींद खुल गई और वह समझ गये कि यह स्वप्न था.

8 सुबह होने पर राजा मन में बेचैन हुए, इसलिये इनका अर्थ जानने के लिए मिस्र देश के सब ज्योतिषियों एवं पंडितों को बुलवाया और फ़रोह ने उन्हें अपने दोनों स्वप्न बताये लेकिन कोई भी उनका अर्थ नहीं बता पाया.

9 तब प्रधान पिलाने वाले ने फ़रोह से कहा, “आज मुझे अपनी गलती याद आ रही है.

10 एक बार फ़रोह अपने नौकरों से क्रुद्ध हुए और मुझे और प्रधान खानसामे को अंगरक्षकों के नायक के घर के बंदीगृह में डाला.

Genesis 41:1

11 हमने उस कारावास में स्वप्न देखा, और दोनों ही स्वप्न का
अपना अलग अर्थ था.

12 एक इब्री युवक वहां था, वह अंगरक्षकों के नायक का सेवक
था. जब हमने उसे अपना स्वप्न बताया उसने हमारे हर एक के
स्वप्न की व्याख्या की.

13 जैसा उसने बताया था वैसा ही हुआ: फ़रोह ने मुझे तो अपना
पद सौंप दिया, और खानसामें को प्राण-दंड दे दिया."

14 यह सुनकर फ़रोह ने कहा कि योसेफ़ को मेरे पास लाओ.
उन्होंने जल्दी योसेफ़ को कारागार से बाहर निकाला. और
उसके बाल कटाकर उसके कपड़े बदलकर फ़रोह के पास
लेकर आये.

15 फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "मैंने एक स्वप्न देखा है, उसका
अर्थ कोई नहीं बता पा रहे हैं, लेकिन मैंने तुम्हारे बारे में सुना
है कि तुम स्वप्न का अर्थ बता सकते हो."

16 योसेफ़ ने यह सुनकर फ़रोह से कहा, "अर्थ मैं नहीं, बल्कि
स्वयं परमेश्वर ही देंगे."

17 तब फ़रोह ने कहा, "मैंने स्वप्न में देखा कि मैं नील नदी के
किनारे खड़ा हूं.

18 वहां मैंने सात मोटी एवं सुंदर गायों को नील नदी से निकलते
देखा. और वे घास चर रही थीं.

19 तभी मैंने देखा कि सात और गायें निकलीं—जो दुबली,
पतली और कुरूप थीं. ऐसी कुरूप गायें मैंने मिस्र देश में कभी
नहीं देखीं.

20 दुर्बल एवं कुरूप गायों ने उन सात मोटी एवं सुंदर गायों को
खा लिया.

21 इतना होने पर भी यह समझ नहीं पाये कि इन्होंने उन सात
मोटी गायों को कैसे खा लिया; लेकिन वे अब भी वैसी ही
कुरूप बनी हुई थीं. और मेरी नींद खुल गई.

22 "मैंने एक और स्वप्न देखा: एक ही तने में से सात मोटी एवं
अच्छी बालें उगीं.

23 तभी मैंने देखा कि कमजोर और मुरझाई, और पूर्वी वायु से
झुलसी बालें उगीं.

24 तथा कमजोर बालों ने उन मोटी बालों को निगल लिया. मैंने
अपने ज्योतिषियों से ये स्वप्न बताये, लेकिन अर्थ कोई नहीं बता
पाया."

25 तब योसेफ़ ने फ़रोह से कहा, "आपके दोनों स्वप्न एक ही
हैं. इनमें परमेश्वर ने फ़रोह को बताया हैं कि परमेश्वर क्या
करने जा रहे हैं.

26 सात सुंदर और मोटी गायें सात वर्ष हैं, सात अच्छी बालें भी
सात वर्ष हैं; दोनों ही स्वप्न एक ही हैं.

27 कमजोर एवं कुरूप गायें, सात वर्ष हैं, और मुरझाई हुई बालें
जो देखी वे भी सात वर्ष; वे अकाल के होंगे.

28 "जैसा मैंने फ़रोह को बताया, ठीक वैसा ही होगा; परमेश्वर
ने आपको यह दिखा दिया है कि जल्दी ही क्या होनेवाला है.

29 मिस्र देश में सात वर्ष बहुत ही अच्छी फसल होगी,

30 और उसके बाद सात वर्ष का अकाल होगा. तब मिस्र देश
के लोग सारी उपज को भूल जायेंगे, और अकाल से देश का
नाश होगा.

31 अकाल इतना भयानक होगा कि अच्छी फसल और उपज
किसी को याद तक नहीं रहेगी.

32 फ़रोह आपने एक ही बात के विषय दो बार स्वप्न देखे; यह
इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर निश्चय ही ऐसा होने देंगे
और परमेश्वर जल्दी ही इसे पूरा करेंगे.

33 "इसलिये फ़रोह जल्दी किसी समझदार एवं बुद्धिमान
व्यक्ति को मिस्र देश का अधिकारी बनाएं.

34 और फ़रोह सारे मिस्र देश में सर्वेक्षकों को नियुक्त करे और
सात वर्ष जो अच्छी फसल और उपज का है, उस समय भूमि
की उपज का पंचमांश इकट्ठा करें.

35 तब अच्छी फसल के सात वर्षों में सारी भोजन वस्तु एकत्रित
की जाये और अनाज को फ़रोह के अधिकार में भंडार नगरों
में सुरक्षित रखते जायें.

36 और यह भोजन सात वर्ष के अकाल से बचने के लिए पूरे
मिस्र देश को देने के लिए इकट्ठा करे ताकि लोग भोजन के
अभाव में नहीं मरें."

37 फ़रोह तथा सब कर्मचारियों को लगा कि यह जवाबदारी
योसेफ़ को ही दी जाये.

38 फ़रोह ने अपने सेवकों से पूछा, "क्या हमें ऐसा कोई व्यक्ति
मिल सकता है जिसमें परमेश्वर का आत्मा हो?"

39 फिर फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "इसलिये कि परमेश्वर ने ही
तुम पर यह सब प्रकट किया है, तुम यह जवाबदारी लो क्योंकि
तुम जैसा समझदार तथा बुद्धिमान कोई नहीं.

40 और तुम मेरे महल के अधिकारी होंगे तथा मेरी प्रजा तुम्हारे
ही आदेश का पालन करेगी. मैं सिंहासन पर बैठने के कारण
राजा होकर तुमसे बड़ा रहूंगा."

41 और फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "मैंने तुम्हें सारे मिस्र देश पर
अधिकार दे दिया है."

42 यह कहते हुए फ़रोह ने अपनी राजमुद्रा वाली अंगूठी
उतारकर योसेफ़ को पहना दी, और मलमल के वस्त्र तथा गले
में सोने की माला भी पहना दी.

43 फिर फ़रोह ने योसेफ़ को अपने दूसरे रथ में चढ़ाकर
सम्मान दिया. रथों के आगे-आगे चल रहे अधिकारी बोल रहे
थे, "घुटने टेको!" इस प्रकार फ़रोह ने योसेफ़ को संपूर्ण मिस्र
का अधिकार सौंप दिया.

44 और फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "फ़रोह तो मैं हूं, किंतु अब
से सारे मिस्र देश में बिना तुम्हारी आज्ञा के कोई भी न तो हाथ
उठा सकेगा और न ही पांव."

45 फ़रोह ने योसेफ़ का नया नाम ज़ाफेनाथ-पानियाह रखा
तथा उनका विवाह ओन के पुरोहित पोतिफेरा की पुत्री
असेनाथ से कर दिया. इस प्रकार अब योसेफ़ समस्त मिस्र
देश के प्रशासक हो गए.

46 जब योसेफ़ को मिस्र के राजा फ़रोह के पास लाया गया,
तब वे तीस वर्ष के थे. फ़रोह से अधिकार पाकर योसेफ़ समस्त
मिस्र देश का निरीक्षण करने के लिए निकले.

47 पहले सात वर्षों में बहुत उपज हुई.

48 और योसेफ़ ने इन सात वर्षों में बहुत भोजन वस्तुएं जमा
की, जो मिस्र देश में उत्पन्न हो रही थीं. वह सब अन्न योसेफ़
नगरों में जमा करते गए. जिस नगर के पास खेत था उसकी
उपज वहीं जमा करते गए.

49 इस तरह योसेफ़ ने सागर तट के बालू समान अनाज जमा
कर लिया कि उसको गिनना ही छोड़ दिया, क्योंकि उपज
असंख्य हो चुकी थी.

50 इससे पहले कि अकाल के वर्ष शुरू हों, ओन के पुरोहित
पोतिफेरा की पुत्री असेनाथ से योसेफ़ के दो पुत्र पैदा हुए.

51 पहले बेटे का नाम योसेफ़ ने मनश्शेह रखा क्योंकि उन्होंने
विचार किया, "परमेश्वर ने सभी कष्टों एवं मेरे पिता के परिवार
को भुलाने में मेरी सहायता की है."

52 उन्होंने दूसरे पुत्र का नाम एफ्राईम रखा, क्योंकि उनका
कहना था, "दुःख मिलने की जगह इस देश में परमेश्वर ने मुझे
फलवंत किया."

53 जब मिस्र देश में फसल के वे सात वर्ष खत्म हुए,

54 तब अकाल के सात वर्षों की शुरुआत हुई, जैसा योसेफ़ ने
कहा था. सभी देशों में अकाल था, किंतु मिस्र देश में अन्न की
कोई कमी न थी.

55 जब मिस्र देश में भोजन की कमी होने लगी तब लोग फ़रोह से भोजन मांगने लगे. फ़रोह ने मिस्र की प्रजा से कहा, "तुम योसेफ़ के पास जाओ. वह जो कुछ कहे, वही करना."

56 जब पूरे देश में अकाल पड़ा, तब योसेफ़ ने अपने भंडार खोलकर मिस्रवासियों को अन्न बेचना शुरू किया, क्योंकि अकाल भयानक था.

57 पृथ्वी के अलग-अलग देश से लोग योसेफ़ से अन्न खरीदने आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर अकाल भयंकर हो चुका था.

Genesis 42:1

1 जब याकोब को यह पता चला कि मिस्र देश में अन्न मिल रहा है, तो उन्होंने अपने बेटों से कहा, "क्यों एक दूसरे का मुख ताक रहे हो?

2 मिस्र देश में अन्न मिल रहा है. जाओ और वहां से अन्न खरीद कर लाओ, कि हम जीवित रह सकें."

3 तब योसेफ़ के दस भाई अन्न खरीदने मिस्र देश आये.

4 किंतु याकोब ने योसेफ़ के भाई बिन्यामिन को नहीं भेजा क्योंकि उन्हें यह डर था कि कहीं उस पर कोई कष्ट न आ पड़े.

5 इसलिये इस्राएल के पुत्र अन्न खरीदने मिस्र पहुंचे, क्योंकि कनान देश में भी अकाल था.

6 योसेफ़ मिस्र देश के प्रशासक थे. वही पूरे राष्ट्र को अन्न बेचते थे. योसेफ़ के भाई वहां पहुंचे और उनको प्रणाम किया और उनका मुह ज़मीन की ओर था.

7 योसेफ़ अपने भाइयों को देखते ही पहचान गए; लेकिन अनजान बनकर वह अपने भाइयों से कठोरता से बात कर रहे थे. योसेफ़ ने उनसे पूछा, "तुम लोग कहां से आए हो?" उन्होंने कहा, "कनान देश से, अन्न खरीदने के लिए आए हैं."

8 योसेफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया था, किंतु भाइयों ने उन्हें नहीं पहचाना था.

9 तब योसेफ़ को अपने स्वप्न याद आये, जो उन्होंने उनके विषय में देखे थे. उन्होंने अपने भाइयों से कहा, "तुम लोग भेदिए हो और तुम यहां हमारे देश की दुर्दशा देखने आए हो."

10 उन्होंने कहा, "नहीं, अधिपति महोदय, आपके ये सेवक अन्न खरीदने यहां आए हैं.

11 हम सभी एक ही पिता की संतान हैं. हम, सीधे और सच्चे लोग हैं, कोई जासूस नहीं."

12 योसेफ़ ने फिर भी उनसे कहा, "मैं नहीं मान सकता. तुम लोग अवश्य हमारे देश की दुर्दशा देखने आए हो!"

13 किंतु वे बार-बार कहते रहे, "आपके ये सेवक बारह भाई हैं, जो एक ही पिता की संतान हैं, हम कनान के रहनेवाले हैं. हमारा छोटा भाई हमारे पिता के साथ ही है. हमारा एक भाई अब जीवित नहीं है."

14 योसेफ़ ने उनसे कहा, "कुछ भी हो, मैं जानता हूं कि तुम लोग जासूस ही हो!

15 अब तुम्हें जांचने का एक ही तरीका हैं: फ़रोह के जीवन की शपथ, तुम्हारे छोटे भाई को यहां आना होगा.

16 तुममें से कोई जाकर अपने भाई को यहां लेकर आओ; फ़रोह की शपथ, तब तक तुम सभी बंदी बनकर यहीं रहोगे, और तुमने कितना सच कहा है वह पता चल जायेगा."

17 तब योसेफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए बंदीगृह में डाल दिया.

18 तीसरे दिन योसेफ़ ने उनसे कहा, "यदि जीवित रहना चाहते हो, तो तुम्हें यह करना होगा; क्योंकि मुझमें परमेश्वर का भय है:

19 यदि तुम सच्चे हो, तो तुममें से एक भाई कारागार में रहे और बाकी तुम लोग वापस घर जाओ और अपने परिवार को अकाल से बचाने के लिए अन्न ले जाओ.

Genesis 43:1

20 और अपने छोटे भाई को यहां लेकर आना, ताकि वह
तुम्हारे शब्दों को साबित कर सके और तुम्हारी मृत्यु न हो!"
उन्होंने इस बात को माना.

21 तब वे आपस में बात करने लगे, "हम अपने भाई के प्रति
दोषी हैं, क्योंकि जब वह हमसे लगातार दया मांगी, और
उसके प्राणों की वेदना दिख रही थी, किंतु हमने ही अपना मन
कठोर बना लिया था. यही कारण कि आज हम पर यह कष्ट
आ पड़ा है."

22 रियूबेन ने कहा, "क्या मैं नहीं कह रहा था, लड़के के विरुद्ध
कोई अपराध मत करो? तुमने मेरी बात न सुनी. अब समय आ
गया है; उसकी हत्या का बदला पाने का."

23 उन्हें मालूम नहीं पड़ा कि योसेफ़ उनकी बात को समझ रहे
थे.

24 योसेफ़ उनके सामने से अलग जाकर रोने लगे; फिर वापस
आकर उन्होंने उन्हीं के सामने शिमओन को पकड़ा और बांध
दिया.

25 फिर योसेफ़ ने आदेश दिया कि उनके बोरों को अन्न से भर
दिया जाए और जो दाम दिया है, वह भी उसी के बोरे में रख
दिया जाए. और योसेफ़ ने कहा कि उनकी यात्रा के लिए
आवश्यक सामान भी उन्हें दे दिया जाए.

26 तब भाइयों ने अपने-अपने गधों पर अन्न के बोरे रखे और
वहां से चल पड़े.

27 जब रास्ते में गधे को चारा देने के उद्देश्य से उनमें से एक ने
बोरा खोला, तो उसे वही रुपया दिखा जिसे उसने उन्हें दिया
था.

28 यह उसने अपने भाइयों को बताया, "मैंने जो रुपया दिया
था वह मेरे बोरे में मिला है." वे सभी आश्चर्य करने लगे. और
कांपने लगे तथा एक दूसरे की ओर देखते हुए कहने लगे,
"परमेश्वर ने हमारे साथ यह क्या कर दिया है?"

29 जब वे कनान देश में अपने पिता याकोब के पास पहुंचे, तब
उन्होंने अपने पिता को पूरी घटना बताई.

30 और कहा, "उस देश का अधिपति हमसे कठोर होकर बात
कर रहा था. उसने हमें अपने देश का जासूस समझा.

31 हमने उन्हें समझाया, 'हम सच्चे लोग हैं; जासूस नहीं.

32 और बताया कि हम बारह भाई हैं, एक ही पिता की संतान.
एक भाई अब जीवित नहीं रहा, तथा हमारा छोटा भाई पिता
के साथ कनान देश में ही है.'

33 "उस देश के अधिपति ने हमसे कहा, 'तुम्हारी सच्चाई तब
प्रकट होगी जब तुम अपने भाइयों में से एक को मेरे पास
छोड़कर जाओगे; और अब अकाल में अपने परिवारों के लिए
अन्न लेकर जाओ.

34 जब तुम अपने छोटे भाई को मेरे पास लाओगे, तब मालूम
पड़ेगा कि तुम जासूस नहीं हो, फिर मैं तुम्हारे भाई को छोड़
दूंगा और तुम इस देश में व्यापार कर सकोगे.' "

35 जब वे अपने-अपने बोरे खाली कर रहे थे, उन सभी ने देखा
कि सबके बोरों में उनके रुपये की थैलियां रखी हुई है! जब
उन्होंने तथा उनके पिता ने रुपये की थैली देखी, तब वे डर गए.

36 उनके पिता याकोब ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने तो मुझसे
मेरी संतान ही छीन ली है. योसेफ़ नहीं रहा और अब तुम लोग
बिन्यामिन को ले जा रहे हो. यह सब मेरे विरुद्ध ही हो रहा है!"

37 रियूबेन ने अपने पिता को यह आश्वासन दिया, "अगर मैं
बिन्यामिन को यहां वापस न लाऊं, तो आप मेरे दोनों पुत्रों की
हत्या कर देना. आप बिन्यामिन को मेरे हाथों में सौंप दीजिए,
मैं उसे वापस लाऊंगा."

38 किंतु याकोब कहते रहे, "मेरा पुत्र तुम्हारे साथ न जाएगा;
क्योंकि उसके भाई की मृत्यु हो ही चुकी है, इसलिये वह
अकेला ही रह गया है. यदि इस यात्रा में उसके साथ कुछ
अनर्थ हुआ तो तुम इस बुढ़ापे में मुझे घोर वेदना के साथ कब्र
में नीचे उतारोगे."

Genesis 43:1

1 देश में अब भी अकाल बहुत भयंकर था.

Genesis 43:1

2 जब उनके द्वारा मिस्र देश से लाया हुआ अन्न खत्म होने
लगा, तब उनके पिता ने कहा, "जाओ, थोड़ा और अनाज
खरीद कर लाओ."

3 किंतु यहूदाह ने उनसे कहा, "बड़ी गंभीरता पूर्वक उस
प्रशासक ने हमें चेतावनी दी थी, 'यदि तुम अपने साथ अपने
भाई को न लाओ तो मुझे अपना मुख न दिखाना.'

4 अन्न मोल लेने हम तब ही वहां जायेंगे, जब आप हमारे साथ
हमारे भाई को भी भेजेंगे.

5 यदि आप उसे हमारे साथ नहीं भेजेंगे, तो हम भी नहीं जाएंगे.
क्योंकि उस अधिपति ने कहा था, 'मेरे सामने ही न आना, यदि
तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न होगा.' "

6 इस्राएल ने कहा, "क्यों तुम लोगों ने उसे यह बताकर मेरा
अनर्थ कर दिया कि तुम्हारा एक भाई और भी है?"

7 किंतु उन्होंने अपने पिता को यह बताया, "वह व्यक्ति ही
हमसे हमारे विषय में तथा हमारे संबंधियों के विषय में पूछ
रहा था, 'क्या तुम्हारा पिता अब भी जीवित है? क्या तुम्हारा
कोई अन्य भाई भी है?' हम केवल उसके प्रश्नों का उत्तर दे रहे
थे. हमें क्या मालूम था कि वह हमसे ऐसा कहेंगे 'अपने उस
भाई को यहां ले आओ?' "

8 यहूदाह ने अपने पिता इस्राएल से कहा, "इस लड़के को मेरे
साथ भेज दीजिए, तब हम यहां से जाएंगे, ताकि अकाल में
हमारी मृत्यु न हो जाए और आप, और हमारे बच्चे नहीं मरें
और सब जीवित रह सकें.

9 मैं इस लड़के की जवाबदारी अपने ऊपर लेता हूं; अगर उसे
आपके पास लौटा न लाऊं, तो मैं सदा-सर्वदा आपका दोषी
बना रहूंगा.

10 यदि हम देरी न करते तो हम वहां दो बार जाकर आ गए
होते."

11 यह सुन उनके पिता इस्राएल ने उनसे कहा, "अगर यही
बात है, तो ठीक है, यही करो. लेकिन आप लोग अपने-अपने
बोरों में उस व्यक्ति के लिए उपहार स्वरूप बलसान, मधु,
गोंद, गन्धरस, पिस्ता तथा बादाम ले जाओ.

12 दो गुणा रुपया भी ले जाओ और जो रुपया तुम्हारे बोरे में
वहां से आया था वह भी वापस कर देना, शायद भूल हो गई
होगी.

13 अपने भाई को अपने साथ ले जाओ, देरी न करो.

14 प्रार्थना है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उस व्यक्ति के दिल में
दया डाले ताकि वह तुम्हारे उस भाई बिन्यामिन को छोड़ दे.
अगर बिछड़ना ही है, तो ऐसा ही होने दो."

15 तब उन्होंने उपहार, दो गुणा रुपया तथा अपने साथ
बिन्यामिन को लिया और मिस्र के लिए रवाना हुए, और योसेफ़
के पास पहुंचे.

16 जब योसेफ़ ने अपने भाइयों के साथ बिन्यामिन को देखा,
तब उन्होंने अपने घर के सेवक से कहा, "इन लोगों को मेरे घर
ले जाओ, एक पशु का वध कर भोजन तैयार करो. ये सभी
दोपहर का भोजन मेरे साथ करेंगे."

17 सेवक से जैसा कहा गया उसने वैसा ही किया और इन
भाइयों को योसेफ़ के घर पर ले गए.

18 योसेफ़ के घर आकर सब डर गए. सबने सोचा, "जो रुपया
हम सबके बोरे में था, वे हम लोगों को अपराधी सिद्ध करने
लिए उनका उपयोग करेंगे. तब वे हम लोगों के गधों को ले लेंगे
और हम लोगों को दास बनाएंगे."

19 इसलिये घर के पास आकर उन्होंने योसेफ़ के गृह सेवक
से कहा,

20 "महोदय, विश्वास कीजिए, जब हम पिछले बार भी मात्र
अनाज खरीदने ही आये थे

21 तब हमने धर्मशाला पहुंचकर अपने-अपने बोरे खोले, तो
हमने देखा कि जो रुपया हमने यहां अनाज के लिए दिया था
वह वापस हमारे बोरे में रखा गया; तब हम वह रुपया अपने
साथ लाए हैं.

Genesis 44:1

22 दुबारा खरीदने के लिए भी रुपया लाए हैं. हमें कुछ भी नहीं
पता कि किसने रुपया हमारे बोरों में रखा था."

23 उस सेवक ने उनसे कहा, "शांत हो जाइए, डरिये नहीं,
आपके परमेश्वर, तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने आपके बोरों में
रुपया रखा होगा. मुझे तो रुपया मिल चुका है." यह कहते हुए
वह शिमओन को उनके पास बाहर लाए.

24 जब सेवक उन्हें योसेफ़ के घर के भीतर ले गये, उसने उन्हें
पांव धोने के लिए पानी दिया, सबने अपने पांव धोए, सेवक ने
उनके गधों को चारा भी दिया.

25 दोपहर में योसेफ़ के घर पहुंचने से पहले योसेफ़ को देने के
लिए जो भेंट वे लाए थे उन्हें तैयार किया क्योंकि योसेफ़ इन
सबके साथ खाना खाने आनेवाले थे.

26 योसेफ़ के घर पहुंचते ही जो भेंट वे उनके लिए लाए थे उन्हें
उनको दिया और प्रणाम किया.

27 योसेफ़ ने सबका हाल पूछा और कहा, "क्या तुम्हारे बूढ़े
पिता जिनके विषय में तुमने मुझे बताया था वह जीवित हैं?"

28 उन्होंने कहा, "हमारे पिता ठीक हैं, अभी तक जीवित हैं."
और आदर के साथ सिर झुकाकर प्रणाम किया.

29 तब योसेफ़ ने बिन्यामिन को देखा, योसेफ़ ने पूछा, "क्या
यही तुम्हारा छोटा भाई है, जिसके विषय में तुमने मुझसे
बताया था?" योसेफ़ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम पर परमेश्वर की
कृपा बनी रहे."

30 यह कहकर योसेफ़ एकदम उठकर चले गए, क्योंकि अपने
भाई को देखकर प्यार से उनकी आंखें भर आईं और एकांत
में जाकर रोने लगे.

31 वे अपना मुंह धोकर वापस बाहर आये और अपने आपको
संभाला और कहा, "खाना परोसो."

32 योसेफ़ खाना खाने अलग बैठ गए और भाइयों को दूसरी
ओर अलग बिठाया, क्योंकि मिस्री और इब्री एक साथ भोजन
नहीं कर सकते.

33 योसेफ़ के भाइयों को उनके सामने ही अपनी-अपनी आयु
के क्रम से पंक्ति में बैठा गया; सबके पहले सबसे बड़ा, फिर
उसका छोटा, फिर उसका छोटा. सभी भाई एक दूसरे को
आश्चर्य से देखते रहे.

34 योसेफ़ ने अपने लिए परोसे गए भोजन में से सबको दिया,
लेकिन बिन्यामिन को पांच गुणा ज्यादा दिया गया. सबने
योसेफ़ के साथ भरपेट खाया और पिया.

Genesis 44:1

1 योसेफ़ ने अपने घर के भंडारी को आदेश दिया: "इनके बोरों
को जितना वे ले जा सकते हैं उतने अन्न से भर दो और हर
एक का दिया गया धन उसी के बोरे में डाल देना.

2 तब सबसे छोटे भाई के बोरे में मेरा चांदी का कटोरा तथा
अन्न के लिए लिया गया धन भी रख देना." भंडारी ने योसेफ़
के आदेश के अनुरूप ही किया.

3 भोर होते ही उन्हें उनके अपने-अपने गधों के साथ विदा कर
दिया गया.

4 वे नगर के बाहर निकले ही थे कि योसेफ़ ने अपने घर के
भंडारी को आदेश दिया, "उठो, उनका पीछा करो. जब तुम
उन तक पहुंच जाओ, तो उनसे कहना, 'भलाई का बदला तुम
बुरे से क्यों दे रहे हो?

5 क्या यह वही पात्र नहीं है, जिससे हमारे स्वामी पीते हैं, जिससे
वह भावी जानते हैं? आप लोगों ने यह उचित नहीं किया है.' "

6 वह भंडारी उन तक जा पहुंचा और उनसे वही सब कह
दिया.

7 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "मेरे स्वामी, आप यह क्या कह रहे
हैं? आपके सेवक ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते!

8 आप देख लीजिए कि वह राशि, जो हमारे साथ चली गई थी,
कनान देश से हमने आपको लौटा दी है. तो हम आपके स्वामी
के आवास से चांदी अथवा स्वर्ण क्यों चुराते?

Genesis 44:1

9 जिस किसी के पास वह पात्र पाया जाए, उसे प्राण-दंड दे
दिया जाए, और हम सभी आपके अधिपति के दास बन
जाएंगे."

10 भंडारी ने उनसे कहा, "ठीक है, जैसा तुम लोगों ने कहा है,
वैसा ही होगा, जिसके पास से वह पात्र पाया जाएगा, वह मेरा
दास हो जाएगा, शेष निर्दोष होंगे."

11 शीघ्र ही उन्होंने अपने-अपने बोरे नीचे उतारे. हर एक ने
अपना बोरा खोल दिया.

12 उसने खोजना प्रारंभ किया, सबसे बड़े से सबसे छोटे के
क्रम में, और कटोरा बिन्यामिन के बोरे में पाया गया.

13 यह देख हर एक ने अपने-अपने वस्त्र फाड़ डाले, गधों पर
सामग्री लादी और नगर को लौट गए.

14 जब यहूदाह तथा उसके भाई योसेफ़ के आवास पर पहुंचे,
योसेफ़ वहीं थे. वे उनके समक्ष नत हुए.

15 योसेफ़ ने उनसे कहा, "यह क्या किया है आप लोगों ने? क्या
आपको यह बोध नहीं कि मैं अपने इस पद पर होने के कारण
वास्तव में भविष्य ज्ञात कर सकता हूं?"

16 इसका उत्तर यहूदाह ने दिया, "हम अपने स्वामी से क्या
कहें? हमारे पास तो कहने के लिए शब्द ही नहीं हैं. हम स्वयं
को निर्दोष प्रमाणित ही नहीं कर सकते. परमेश्वर ही ने आपके
सेवकों की पापिष्ठता ज्ञात कर ली है. देखिए, हम अपने
अधिपति के दास होने के लिए तैयार हैं; हम सभी तथा वह
जिसके बोरे में वह कटोरा पाया गया है."

17 योसेफ़ ने उत्तर दिया, "मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता. मेरा
दास वही व्यक्ति बनाया जाएगा, जिसके बोरे में वह कटोरा
पाया गया है. शेष आप सभी अपने पिता के पास शांतिपूर्वक
लौट जाएं."

18 यह सुन यहूदाह योसेफ़ के निकट गए और उनसे आग्रह
किया, "मेरे अधिपति महोदय, क्या आप अपने सेवक को
अपने कानों में कुछ कहने की अनुमति प्रदान करेंगे? कृपया
आप मुझ अपने सेवक पर क्रुद्ध न हों, क्योंकि आप तो पद में
फ़रोह के समान हैं.

19 मेरे अधिपति, आपने अपने सेवकों से पूछा था, 'क्या तुम्हारे
पिता अथवा भाई हैं?'

20 हमने अपने अधिपति को उत्तर दिया था, 'हमारे वयोवृद्ध
पिता हैं तथा उनकी वृद्धावस्था में एक बालक भी है. हां, उसके
भाई की मृत्यु हो चुकी है. अब वह अपनी माता का एकमात्र
पुत्र रह गया है. वह अपने पिता का अत्यंत प्रिय पुत्र है.'

21 "तब महोदय ने अपने इन सेवकों को आदेश दिया था, 'उस
पुत्र को यहां ले आओ, कि मैं उसे देख सकूं.'

22 किंतु हमने अपने अधिपति से निवेदन किया था, 'यह
किशोर अपने पिता से दूर नहीं रह सकता, क्योंकि यदि उसे
पिता से दूर किया जाएगा, तो उसके पिता की मृत्यु हो जाएगी.'

23 किंतु आपने तो अपने इन सेवकों से कहा था, 'यदि तुम्हारा
वह कनिष्ठ भाई तुम्हारे साथ यहां नहीं आएगा, तो तुम मेरा
मुख न देखोगे.'

24 तब हुआ यह कि जब हम लौटकर अपने पिता के यहां
पहुंचे, हमने उन्हें अपने अधिपति, आप का आदेश सुना दिया.

25 "हमारे पिता का आदेश था, 'पुनः मिस्र जाकर हमारे
उपभोग के लिए कुछ अन्न ले आओ.'

26 हमने प्रतिवाद किया, 'हम वहां बिना हमारे कनिष्ठ भाई के
नहीं जा सकते; क्योंकि हम अधिपति की उपस्थिति में बिना
अपने कनिष्ठ भाई के प्रवेश कर ही नहीं सकेंगे.'

27 "आपके सेवक हमारे पिता ने हमें स्मरण दिलाया, 'तुम्हें
स्मरण ही है कि मेरी पत्नी से मुझे दो पुत्र पैदा हुए थे,

28 एक तो मैं खो चुका हूं. निश्चय ही वह कोई हिंसक पशु द्वारा
फाड़ डाला गया है, तब से मैंने उसे नहीं देखा है.

29 अब यदि तुम इस कनिष्ठ को भी मुझसे दूर ले जाना चाह रहे
हो और यदि उसका भी कुछ अनिष्ट हो जाता है, तो इस
वृद्धावस्था में तुम मुझ पर विषादपूर्ण मृत्यु ले आओगे.'

30 "इसलिये अब आपके सेवक मेरे पिता के पास लौटूंगा और यदि यह किशोर हमारे साथ न होगा तो; वस्तुस्थिति यह है कि हमारे पिता का प्राण इस किशोर के प्राणों से संयुक्त है,

31 जब वह यह पाएंगे, कि हम इस किशोर को साथ लेकर नहीं लौटे हैं, तो उनके प्राण ही निकल जाएंगे. हम, आपके सेवक, हमारे पिता को उनकी वृद्धावस्था में घोर शोक के साथ अधोलोक भेज देंगे.

32 मैं आपका सेवक, अपने पिता के समक्ष इस किशोर के लिए प्रतिभूति होकर आया हूं. मैंने पिता को आश्वासन दिया था, 'यदि मैं उसे लौटाकर आपके समक्ष लाने में असमर्थ पाया जाऊं, तो मैं अपने पिता के समक्ष सदा-सर्वदा के लिए दोषी बना रहूंगा.'

33 "तब हे स्वामी, अब कृपा कर इस किशोर के स्थान पर मुझे अपना दास बना लीजिए.

34 क्योंकि मैं अब अपने पिता के समक्ष कैसे जा सकता हूं, यदि यह किशोर हमारे साथ न होगा? मुझे भय है कि इससे मेरे पिता पर अनिष्ट ही आ पड़ेगा!"

Genesis 45:1

1 यहां तक आकर योसेफ़ का नियंत्रण टूट गया. वह वहां उपस्थित सभी व्यक्तियों के समक्ष चिल्ला उठे, "सब यहां से बाहर चले जाएं." सब वहां से बाहर चले गए. तब योसेफ़ ने स्वयं को अपने भाइयों पर अपने वास्तविक रूप में प्रकट किया.

2 योसेफ़ का क्रंदन इतना प्रबल था कि बाहर मिस्री अधिकारियों ने इसे सुन लिया तथा इसके विषय में फ़रोह के परिवार ने भी सुन लिया.

3 तब योसेफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं योसेफ़ हूं! क्या मेरा पिताजी अब भी जीवित हैं?" किंतु उनके भाई अवाक रह गए थे, उनके लिए योसेफ़ के समक्ष कुछ भी कहना असंभव हो गया था.

4 तब योसेफ़ ने अपने भाइयों से अनुरोध किया, "मेरे निकट आइए" वे उनके निकट गए तब योसेफ़ ने उनसे कहा, मैं आपका भाई योसेफ़ हूं, जिसे आप लोगों ने मिस्र देश से आनेवाले व्यापारियों के हाथों में बेच दिया था!

5 अब आप न तो स्वयं के लिए शोकित हों और न ही क्रुद्ध, कि आपने मुझे यहां के लिए विक्रीत कर दिया था; क्योंकि परमेश्वर ही मुझे आपके पूर्व यहां ले आए हैं, कि जीवन बचाए जाएं.

6 क्योंकि दो वर्ष से संपूर्ण देश में अकाल व्याप्त है तथा यह पांच वर्ष और भी व्याप्त रहेगा. तब इन वर्षों में न तो हल चलाए जा सकेंगे और न ही किसी प्रकार की कटनी संभव हो सकेगी.

7 परमेश्वर ने मुझे आप लोगों के पूर्व ही यहां भेज दिया था, कि वह आप लोगों के लिए पृथ्वी पर एक शेषांश बचा रखें, आपको एक बड़ा बचाव द्वारा जीवित रखा जा सके.

8 "इसलिये, वास्तव में, मुझे यहां आप लोगों के द्वारा नहीं, परंतु परमेश्वर द्वारा भेजा गया था. परमेश्वर ने ही मुझे फ़रोह के पिता का स्थान दिया है, मुझे फ़रोह की समस्त गृहस्थी का प्रभारी तथा पूरे मिस्र देश पर प्रशासक नियुक्त कर दिया है.

9 अब आप लोग अविलम्ब मेरे पिता के पास जाकर उनसे कहें, 'आपके पुत्र योसेफ़ का यह आग्रह है: परमेश्वर ने मुझे समग्र मिस्र देश का प्रशासक नियुक्त किया है. आप यहां मेरे पास आ जाएं. अब विलंब न करें.

10 आप लोग आकर गोशेन प्रदेश में बस जाएं और मेरे निकट ही आप, आपकी संतान, आपकी संतान की संतान, आपके पशुवृन्द, आपकी भेड़-बकरी तथा आपकी संपूर्ण संपत्ति भी.

11 वहां मैं आपके लिए भोजन की व्यवस्था करता रहूंगा, क्योंकि अकाल अभी पांच वर्ष और रहेगा, जिसके कारण आप वहां आपकी संपूर्ण गृहस्थी के साथ पूर्णतः साधन विहीन हो जाएंगे.'

12 "अब आप लोग स्वयं देख लीजिए और यहां स्वयं मेरा भाई बिन्यामिन भी यह देख रहा है कि यह स्वयं मैं आपसे कह रहा हूं.

13 अब आप लोग जाइए और जाकर मिस्र में मेरे इस वैभव का उल्लेख वहां मेरे पिता से कीजिए तथा उस सबका भी, जो स्वयं

Genesis 46:1

आपने यहां देखा है. आवश्यक है कि अब आप अति शीघ्र जाएं और मेरे पिता को यहां ले आएं.”

14 तब योसेफ़ अपने भाई बिन्यामिन को गले लगाकर रोते रहे
तथा बिन्यामिन भी उनसे गले लगकर रोते रहे.

15 फिर योसेफ़ ने अपने सभी भाइयों का चुंबन लिया और
उनके साथ रोते रहे; इसके बाद ही उनके भाइयों ने योसेफ़
के साथ बात करना आरंभ किया.

16 फ़रोह के परिवार में भी यह समाचार सुना गया कि योसेफ़
के भाई आए हुए हैं, जिसे सुनकर फ़रोह तथा उसके दासों में
उल्लास की लहर दौड़ गई.

17 तब फ़रोह ने योसेफ़ के समक्ष प्रस्ताव रखा, “अपने भाइयों
से यह कहो, ‘अपने-अपने गधों पर सामान रखें और कनान
देश चले जाएं,

18 वहां से अपने पिता एवं समस्त गृहस्थी लेकर यहां मेरे पास
आ जाएं, मैं उन्हें मिस्र देश का सर्वोत्तम ही प्रदान करूंगा और
उनका भोजन इस देश की प्रचुरता में से ही होगा.’

19 “और अब, योसेफ़ तुम्हारे लिए आदेश यह है; ‘ऐसा करो:
यहां मिस्र देश से स्त्रियों एवं बालकों के लिए वाहन ले जाओ
और अपने पिता को यहां ले आओ.

20 अपने सामान की चिंता न करना, क्योंकि मिस्र देश में जो
कुछ सर्वोत्तम है, वह सब तुम्हारा ही है.’ ”

21 इस्राएल के पुत्रों ने ठीक यही किया. फ़रोह के आदेश के
अनुरूप योसेफ़ ने उन्हें वाहन प्रदान कर दिए तथा यात्रा के
लिए आवश्यक सामग्री भी दी.

22 योसेफ़ ने हर एक को एक-एक जोड़ी वस्त्र भी दिया, किंतु
बिन्यामिन को तीन सौ चांदी मुद्राएं और पांच जोड़ी वस्त्र दिये.

23 अपने पिता के लिए योसेफ़ ने ये सभी वस्तुएं भेजीं: दस गधे,
जिन पर मिस्र की सर्वोत्तम वस्तुएं रख दी गई थीं, दस गधियां,
जिन पर भोज्य सामग्री तथा अन्न रख दिया गया था, कि यात्रा
के समय उनके पिता का भरण-पोषण होता रहे.

24 इस प्रकार योसेफ़ ने अपने भाइयों को कनान देश के लिए
भेज दिया. जब वे विदा हो ही रहे थे, तब योसेफ़ ने उनसे
आग्रह किया, “यात्रा मध्य आपस में झगड़ना नहीं.”

25 इसलिये वे मिस्र देश से अपने पिता के पास कनान में पहुंच
गए,

26 उन्होंने अपने पिता को सूचित किया, “योसेफ़ जीवित है!
और सत्य तो यह है कि वह समस्त मिस्र देश का प्रशासक है.”
यह सुन याकोब अवाक रह गए—उन्हें अपने पुत्रों की बातों
पर विश्वास ही न हुआ.

27 तब उन्होंने अपने पिता को योसेफ़ की कही हुई वह सारी
बातें बताई जो उन्होंने उनसे कही थीं. जब उन्होंने योसेफ़ द्वारा
भेजें वाहन देखे, जो उनको ले जाने के लिए भेजे गए थे, तब
उनके पिता याकोब के जी में जी आया.

28 तब इस्राएल ने कहा, “मैं आश्वस्त हूं! मेरा पुत्र योसेफ़ जीवित
है, अपनी मृत्यु के पूर्व वहां जाकर मैं उसे देखूंगा.”

Genesis 46:1

1 इस्राएल अपनी पूरी संपत्ति लेकर वहां से रवाना हुए. जब वे
बेअरशेबा पहुंचे, उन्होंने अपने पिता यित्सहाक के परमेश्वर
को बलि चढ़ाई.

2 उस रात परमेश्वर ने इस्राएल को दर्शन में कहा “हे, याकोब!
याकोब!” उसने कहा, “कहिये, क्या आज्ञा है?”

3 उन्होंने कहा, “मैं परमेश्वर, तुम्हारे पिता का परमेश्वर हूं; मिस्र
जाने से मत डरो, तुम वहां जाओ और मैं वहां तुमसे एक बड़ी
जाति बनाऊंगा.

4 मिस्र तक मैं तुम्हारे साथ साथ चलूंगा और निश्चयतः मैं ही
तुम्हें वहां से लौटा भी लाऊंगा. तुम्हारी मृत्यु के समय योसेफ़
तुम्हारे पास होगा.”

5 तब इस्राएल के पुत्रों ने अपने पिता याकोब, अपने-अपने
बालकों एवं अपनी-अपनी पत्नियों को उस गाड़ी में बैठा दिया,
जिसे फ़रोह ने भेजी थी.

Genesis 46:1

6 इन्होंने अपने साथ अपने पशु एवं पूरी संपत्ति ले ली थी, जो
कनान देश में उन्होंने अर्जित थी. याकोब तथा उनके सभी
लोग मिस्र देश पहुंच गये.

7 याकोब अपने पुत्र तथा उनके पौत्र, उनकी पुत्रियां तथा
उनकी पौत्रियां—सभी को अपने साथ मिस्र लेकर आये.

8 इस्राएल के पुत्रों के नाम (याकोब तथा उनके पुत्र) जो मिस्र
देश में आए थे: रियूबेन, याकोब का बड़ा बेटा.

9 रियूबेन के पुत्र: हनोख, पल्लू, हेज़रोन तथा कारमी.

10 शिमओन के पुत्र: येमुएल, यामिन, ओहद, याकिन, ज़ोहार,
तथा एक कनानी स्त्री से पैदा शाऊल.

11 लेवी के पुत्र: गेरशोन, कोहाथ तथा मेरारी.

12 यहूदाह के पुत्र: एर, ओनान, शेलाह, पेरेज़ तथा ज़ेराह (किंतु
एर तथा ओनान की मृत्यु कनान देश में ही हो चुकी थी). पेरेज़
के पुत्र: हेज़रोन एवं हामुल.

13 इस्साखार के पुत्र: तोला, पुव्वाह, याशूब तथा शिम्रोन.

14 ज़ेबुलून के पुत्र: सेरेद, एलोन तथा याहलील.

15 ये सभी लियाह के पुत्र थे जो याकोब से पद्दन-अराम में पैदा
हुए थे; इनके अतिरिक्त उनकी एक पुत्री दीनाह भी थी. उनके
पुत्र-पुत्रियों की संख्या तैंतीस थी.

16 गाद के पुत्र: ज़िफिओन, हग्गी, शूनी, एज़बोन, एरी, अरोदी
तथा अरेली.

17 आशेर के पुत्र: इमनाह, इशवाह, इशवी, बेरियाह तथा
उनकी बहन सेराह. बेरियाह के पुत्र: हेबेर तथा मालखिएल.

18 ये सभी ज़िलपाह से जन्मे पुत्र हैं. ज़िलपाह लाबान द्वारा
अपनी पुत्री लियाह को दी गईं दासी थी. उससे याकोब के
सोलह जन पैदा हुए थे.

19 याकोब की पत्नी राहेल: योसेफ़ तथा बिन्यामिन जन्मे.

20 मिस्र देश में योसेफ़ के दो पुत्र मनश्शेह तथा एफ्राईम जन्मे.
ये सभी योसेफ़ की पत्नी असेनाथ से जन्मे थे जो ओन के
पुरोहित पोतिफेरा की पुत्री थी.

21 बिन्यामिन के पुत्र: बेला, बेकेर, अशबेल, गेरा, नामान, एही,
रोश, मुप्पिम, हुप्पिम तथा अर्द.

22 ये राहेल द्वारा याकोब के पुत्र हैं, जो चौदह व्यक्ति थे.

23 दान का पुत्र: हुषीम.

24 नफताली के पुत्र: यहसेल, गूनी, येसेर तथा शिल्लेम.

25 ये सभी अपनी पुत्री राहेल को लाबान द्वारा दी गईं दासी
बिलहाह से जन्मे याकोब के पुत्र थे. ये सभी कुल सात व्यक्ति
थे.

26 याकोब के परिवार के लोग जो मिस्र देश में आ गए थे—जो
उनके वंश में जन्मे थे. इनमें याकोब की बहुएं गिनी गयी नहीं
थीं. ये सभी छियासठ व्यक्ति थे

27 योसेफ़ के पुत्र, जो मिस्र देश में जन्मे हुए थे वह दो थे.
याकोब के पूरे परिवार के लोग जो मिस्र देश में आये थे, वे कुल
सत्तर थे.

28 याकोब ने यहूदाह को पहले योसेफ़ के पास गोशेन के लिए
मार्गदर्शन पाने के लिए भेजा. जब यहूदाह गोशेन प्रदेश में
पहुंच गया,

29 तब योसेफ़ ने अपना रथ तैयार करवाया कि वह अपने पिता
इस्राएल से भेंट करने गोशेन पहुंच जाएं. जैसे ही उनके पिता
उनके पास आये, वह उनके गले लगकर बहुत देर तक रोते
रहे.

Genesis 47:1

30 फिर इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, "अब मैं शांतिपूर्वक अपने
प्राण त्याग सकता हूं, क्योंकि मैंने तुम्हें देख लिया है, कि तुम
जीवित हो."

31 योसेफ़ ने अपने भाइयों तथा अपने पिता के सभी लोगों से
कहा, "मैं जाकर फ़रोह को बताता हूं, 'कनान देश से मेरे भाई
तथा मेरे पिता का परिवार यहां पहुंच चुका है.

32 वे सभी चरवाहे हैं; और पशु पालते हैं. वे अपने साथ पशु,
भेड़-बकरी तथा अपनी पूरी संपत्ति लेकर आए हैं.'

33 योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों से कहा कि अगर फ़रोह
आप लोगों से पूछे, 'आप लोग क्या करते हैं?'

34 तो कहना कि हम चरवाहे हैं, और 'हमारे पूर्वज यही काम
करते थे.' इससे आपके लिए गोशेन में रहना आसान हो
जाएगा. क्योंकि मिस्र के लोग चरवाहों से नफ़रत करते हैं."

Genesis 47:1

1 योसेफ़ ने जाकर फ़रोह को बताया, "मेरे पिता तथा मेरे भाई
अपने सब भेड़-बकरी, पशु तथा अपनी पूरी संपत्ति लेकर
कनान देश से आ चुके हैं तथा वे गोशेन देश में हैं."

2 योसेफ़ ने अपने पांच भाइयों को फ़रोह के सामने प्रस्तुत
किया.

3 फ़रोह ने उनके भाइयों से पूछा, "आप लोग क्या काम करते
हैं?" उन्होंने फ़रोह से कहा, "हम हमारे पूर्वजों की ही तरह पशु
पालते हैं.

4 अब इस देश में कुछ समय के लिये रहने आए हैं, क्योंकि
कनान में भयंकर अकाल होने के कारण आपके दासों के
पशुओं के लिए चारा नहीं है. तब कृपा कर हमें गोशेन में रहने
की अनुमति दे दीजिए."

5 फ़रोह ने योसेफ़ से कहा, "तुम्हारे पिता एवं तुम्हारे भाई
तुम्हारे पास आए हैं,

6 पूरा मिस्र देश तुम्हारे लिए खुला है; अपने पिता एवं अपने
भाइयों को गोशेन के सबसे अच्छे भाग में रहने की सुविधा दे
दो. और भाइयों में से कोई समझदार हो तो उसे मेरे पशुओं
की देखभाल की पूरी जवाबदारी दे दो."

7 फिर योसेफ़ पिता याकोब को भी फ़रोह से मिलाने लाए.
याकोब ने फ़रोह को आशीष दी.

8 फ़रोह ने याकोब से पूछा, "आपकी उम्र क्या है?"

9 याकोब ने फ़रोह को बताया "मेरी तीर्थ यात्रा के वर्ष एक सौ
तीस रहे हैं. मेरी आयु बहुत छोटी और कष्टभरी रही है और
वह मेरे पूर्वजों सी लंबी नहीं रही है!"

10 याकोब फ़रोह को आशीष देकर वहां से चले गये.

11 योसेफ़ ने अपने पिता एवं भाइयों को फ़रोह की आज्ञा
अनुसार मिस्र में सबसे अच्छी जगह रामेसेस में ज़मीन दी.

12 योसेफ़ ने अपने पिता, अपने भाइयों तथा पिता के पूरे
परिवार को उनके बच्चों की गिनती के अनुसार भोजन
उपलब्ध कराया.

13 पूरे देश में अकाल के कारण भोजन की कमी थी. मिस्र देश
तथा कनान देश अकाल के कारण भूखा पड़ा था.

14 मिस्र देश तथा कनान देश का सारा धन योसेफ़ ने फ़रोह
के राजमहल में अनाज के बदले इकट्ठा कर लिया था.

15 जब लोगों के पास अनाज खरीदने के लिए रुपया नहीं था
तब वह योसेफ़ के पास आकर बिनती करने लगे, "हमें खाने
को भोजन दीजिए. हम आपकी आंखों के सामने क्यों मरें?
हमारा रुपया सब खत्म हो गया है."

16 योसेफ़ ने कहा, "यदि तुमारा रुपया खत्म हो गया हैं तो तुम
अपने पशु हमें देते जाओ और हम तुम्हें उसके बदले अनाज
देंगे."

17 इसलिये वे अपने पशु योसेफ़ को देने लगे; और योसेफ़ उन्हें
उनके घोड़े, पशुओं, भेड़-बकरी तथा गधों के बदले में अनाज

Genesis 48:1

देने लगे. योसेफ़ ने उस वर्ष उनके समस्त पशुओं के बदले में उनकी भोजन की व्यवस्था की.

18 जब वह वर्ष खत्म हुआ तब अगले वर्ष वह योसेफ़ के पास आए और उनसे कहा, "स्वामी यह सच्चाई आपसे छुपी नहीं रह सकती कि हमारा सारा रुपया खर्च हो गया हैं और पशु भी आपके हो गये है; अब हमारा शरीर और हमारी ज़मीन ही बच गई है.

19 क्या हम और हमारी ज़मीन आपकी आंखों के सामने नाश हो जायेंगी? अब भोजन के बदले आप हमारी ज़मीन को ही खरीद लीजिए, और हम अपनी ज़मीन के साथ फ़रोह के दास बन जाएंगे. हमें सिर्फ बीज दे दीजिये कि हम नहीं मरें परंतु जीवित रहें कि हमारी भूमि निर्जन न हो."

20 इस प्रकार योसेफ़ ने मिस्र देश की पूरी ज़मीन फ़रोह के लिये खरीद ली. सभी मिस्रवासियों ने अपनी भूमि बेच दी क्योंकि अकाल भयंकर था और ज़मीन फ़रोह की हो गई.

21 योसेफ़ ने मिस्र के एक छोर से दूसरे छोर तक लोगों को, दास बना दिया.

22 सिर्फ पुरोहितों की भूमि को नहीं खरीदा, क्योंकि उनको फ़रोह की ओर से निर्धारित भोजन मिलता था और वह उनके जीने के लिये पर्याप्त था, इसलिये उन्होंने अपनी ज़मीन नहीं बेची.

23 योसेफ़ ने लोगों से कहा, "मैंने फ़रोह के लिए आपको तथा आपकी भूमि को आज खरीद लिया है, अब आपके लिये यह बीज दिया है कि आप अपनी ज़मीन पर इस बीज को बोना और खेती करना.

24 और जब उपज आयेगी उसमें से फ़रोह को पांचवां भाग देना होगा और शेष चार भाग आपके होंगे; ज़मीन में बोने के बीज के लिये और आप, आपके परिवार और आपके बच्चों के भोजन के लिये होंगे."

25 तब लोगों ने कहा, "आपने हमारा जीवन बचा लिया; यदि हमारे स्वामी की दया हम पर बनी रहे और हम फ़रोह के दास बने रहेंगे."

26 योसेफ़ ने जो नियम बनाया था कि उपज का पांचवां भाग फ़रोह को देना ज़रूरी है वह आज भी स्थापित है. सिर्फ पुरोहितों की भूमि फ़रोह की नहीं हुई.

27 इस्राएल मिस्र देश के गोशेन नामक जगह पर रह रहे थे, वहां वे फलते फूलते धन-संपत्ति अर्जित करते गये और संख्या में कई गुणा बढ़ते गये.

28 मिस्र में याकोब को सत्रह साल हो चुके थे, और वे एक सौ सैंतालीस वर्ष तक रहे.

29 जब इस्राएल मरने पर थे, उन्होंने अपने पुत्र योसेफ़ को पास बुलाया और कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी जांघ के नीचे अपना हाथ रखकर शपथ लो, कि तुम मुझसे करुणा और विश्वास का बर्ताव करोगे और मुझे मिस्र में नहीं दफ़नाओगे,

30 जब मैं चिर-निद्रा में अपने पूर्वजों से जा मिलूं, तब मुझे मिस्र देश से ले जाना और पूर्वजों के साथ उन्हीं के पास मुझे दफ़नाना." योसेफ़ ने कहा, "मैं ऐसा ही करूंगा जैसा आपने कहा है."

31 याकोब ने कहा, "मुझसे वायदा करो!" योसेफ़ ने उनसे वायदा किया और इस्राएल खाट के सिरहाने की ओर झुक गए.

Genesis 48:1

1 कुछ दिन बाद योसेफ़ को बताया गया, "आपके पिता की तबियत ठीक नहीं है." यह सुन योसेफ़ अपने दोनो पुत्रों; मनश्शेह तथा एफ्राईम को लेकर अपने पिता से मिलने निकल पड़े.

2 किसी ने याकोब को बता दिया, "योसेफ़ आपसे मिलने आ रहे हैं." तब इस्राएल अपनी सारी शक्ति समेटकर खाट से उठकर बैठ गये.

3 और योसेफ़ से बात करने लगे और कहा, "कनान देश के लूज़ में सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे दर्शन देकर आशीष दी.

4 और कहा, 'मैं तुम्हें फलवंत करूंगा और तुझे राज्य-राज्य के
समूह का मुखिया बनाऊंगा और यह देश तुम्हें और बाद में
तुम्हारे वंश को सदाकाल के लिये दूंगा.'

5 "तुम्हारे ये दोनो पुत्र, जिनका जन्म मिस्र में मेरे आने से पहले
हुआ है, वे मेरी संतान हैं; एफ्राईम तथा मनश्शेह मेरे
कहलाएंगे, जैसे रियूबेन तथा शिमओन मेरे हैं.

6 किंतु तुम्हारी संतान, जो इन दोनों के बाद जन्मेगी, वह
तुम्हारी कहलाएगी. वे अपने भाइयों के प्रदेशों के भीतर
मीरास प्राप्त करेंगे.

7 जब मैं पद्दन से आ रहा था और एफ़राथा पहुंचने ही वाले थे
कि राहेल की मृत्यु का दुःख मुझ पर आन पड़ा. मैंने उन्हें
एफ़राथा के रास्ते अर्थात् बेथलेहेम में दफनाया."

8 योसेफ़ के पुत्रों को देखकर इस्राएल ने पूछा, "कौन हैं ये?"

9 योसेफ़ ने अपने पिता से कहा, "ये मेरे पुत्र हैं, जो मुझे इस
देश में परमेश्वर ने दिये." तब याकोब ने कहा, "मेरे पास उन्हें
लाओ, कि मैं उन्हें आशीष दूं."

10 इस्राएल की आंखें उम्र के कारण कमजोर हो गयीं थीं कि
वे देख नहीं सकते थे. योसेफ़ अपने पुत्रों को अपने पिता के
पास ले गए. याकोब ने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया.

11 योसेफ़ को देखते हुए इस्राएल ने कहा, "मैंने यह न सोचा था
कि तुम्हें फिर से देख पाऊंगा, किंतु परमेश्वर ने मुझे तुम्हारी
संतान तक देखने का सौभाग्य दिया."

12 योसेफ़ ने अपने पुत्रों को अपने पिता की गोद से उतारा और
झुककर मुंह के बल प्रणाम किया.

13 फिर योसेफ़ दोनों को इस्राएल के नजदीक ले गये; दाएं हाथ
से वह एफ्राईम तथा बाएं हाथ से मनश्शेह को पकड़े हुए थे.
एफ्राईम इस्राएल के बाईं ओर था तथा मनश्शेह इस्राएल के
दाईं ओर.

14 किंतु इस्राएल ने अपना दायां हाथ छोटे बेटे एफ्राईम के सिर
पर तथा अपना बायां हाथ मनश्शेह के सिर पर रखा. याकोब
ने जानबूझकर ऐसा किया.

15 योसेफ़ को आशीष देते हुए इस्राएल ने कहा, "परमेश्वर,
जिसके सम्मुख मेरे पूर्वज अब्राहाम तथा यित्सहाक चलते थे,
वही परमेश्वर, जीवन भर आज तक मेरा चरवाहा बनकर रहे
हैं,

16 वह स्वर्गदूत, जिसने हर पल मेरी रक्षा की है, वही दोनों
बच्चों को आशीषित करें. और ये दोनों मेरे, मेरे पिता अब्राहाम
तथा मेरे पिता यित्सहाक, के नाम को ऊंचा करें. और पृथ्वी में
बढ़ते जाये."

17 जब योसेफ़ ने देखा कि उनके पिता ने अपना दायां हाथ
एफ्राईम के सिर रखा है तो उन्हें अच्छा नहीं लगा वे अपने पिता
का दायां हाथ पकड़कर एफ्राईम के सिर पर से हटाकर
मनश्शेह के सिर पर रखने लगे.

18 योसेफ़ ने अपने पिता से कहा, "वह नहीं, पिताजी, बड़ा बेटा
यह है; आप अपना दायां हाथ इस पर रख दीजिए."

19 किंतु उनके पिता ने कहा, "मुझे पता है मेरे पुत्र; यह भी
महान बन जाएगा, और बढ़ेगा तो भी उसका छोटा भाई उससे
महान हो जाएगा तथा उससे कई जातियां निकलेंगी."

20 उस दिन इस्राएल ने उन्हें आशीष दी और कहा, "इस्राएल
के लोग तुम्हारा नाम लेकर ऐसे कहेंगे: 'परमेश्वर तुम्हें एफ्राईम
तथा मनश्शेह के समान बना दें.' " यह कहते हुए याकोब ने
एफ्राईम को मनश्शेह से अधिक श्रेष्ठ स्थान दे दिया.

21 फिर इस्राएल ने योसेफ़ से कहा, "सुनो, अब मेरी मृत्यु का
समय आ गया है, लेकिन परमेश्वर तुम्हारे साथ साथ रहेंगे और
तुम्हें अपने पूर्वजों के देश में वापस ले जाएंगे.

22 मैं तुम्हें तुम्हारे भाइयों से बढ़कर हिस्सा ज्यादा दे रहा हूं—
वह भाग, जो मैंने अमोरियों से अपनी तलवार एवं धनुष के
द्वारा पाया था."

Genesis 49:1

1 तब याकोब ने अपने बेटों को बुलाकर उनसे कहा: "तुम सब
एक साथ आओ, ताकि तुम्हें बता सकूं कि तुम्हारे साथ अब
क्या-क्या होगा.

2 "याकोब के पुत्रो, सुनो तथा अपने पिता इस्राएल की बातों पर
ध्यान दो.

3 "रियूबेन, तुम तो मेरे बड़े बेटे, मेरे बल एवं मेरे पौरुष का फल
हो, प्रतिष्ठा और शक्ति का उत्तम भाग तुम ही हो.

4 जो अशांत पानी के समान उग्र हैं, इसलिये तुम महान न
बनोगे, क्योंकि तुमने अपने पिता के बिछौने को अशुद्ध किया.

5 "शिमओन तथा लेवी भाई-भाई हैं; उनकी तलवारें हिंसा का
साधन हैं.

6 ऐसा कभी न हो कि मुझे उनकी सभा में जाना पड़े, मैं उनकी
सभाओं से न जुडूं, क्योंकि गुस्से में उन्होंने मनुष्यों को मार
डाला तथा सनक में उन्होंने बैलों की नसें काट दी.

7 शापित है उनका क्रोध जो भीषण हैं और उनका ऐसा गुस्सा,
जो निर्दयी और क्रूर है! मैं उन्हें याकोब में बांट दूंगा. और उन्हें
इस्राएल में तितर-बितर कर दूंगा.

8 "यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे; तुम्हारा हाथ
तुम्हारे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तुम्हारे पिता की अन्य
संतान तुम्हारे सम्मान में झुक जाएंगे.

9 यहूदाह तो जवान सिंह के समान है; हे मेरे पुत्र, तुम अपने
शिकार पर खड़े शेर के समान हो जो आराम करने के लिए
लेटता है, किसमें उसे छेड़ने का साहस है?

10 यहूदाह से राजदंड कभी भी अलग न होगा और न ही
उसके वंश से शासन का राजदंड, दूर होगा, जब तक वह न
आ जाये और राज्य-राज्य के लोग उसके अधीन रहेंगे.

11 अपने गधे को दाखलता से बांध देता है, तथा गधे के बच्चे
को उत्तम दाखलता पर बांधेगा; उसने अपना वस्त्र दाखमधु
में धोया है, तथा बाहरी वस्त्र दाखरस में धोया है.

12 उसकी आंखें दाखमधु से चमकीली तथा, उसके दांत दूध
से भी अधिक सफेद होंगे.

13 "ज़ेबुलून सागर के किनारे रहेगा और इसका समुद्री तट
जहाजों के लिए सुरक्षित होगा, और उसकी सीमा सीदोन देश
तक फैल जायेगी.

14 "इस्साखार एक बलवंत गधा है, वह पशुओं के बाड़े के बीच
रहता है.

15 जब उसने देखा कि आराम करने की जगह ठीक है, कि
भूमि सुखदाई है, तब उसने अपने कंधे को बोझ उठाने के लिए
झुका दिया और वह बेगार का दास बन जायेगा.

16 "दान अपने लोगों का न्याय इस्राएल के एक गोत्र जैसा
करेगा.

17 दान मार्ग का एक सांप होगा, पथ पर एक सर्प! वह घोड़े की
एड़ी को डसता है, और सवार अचानक गिर जाता है.

18 "हे याहवेह, मैं आपके उद्धार की बाट जोहता हूं.

19 "गाद पर छापामार छापा मारेंगे, किंतु वह भी उनकी एड़ी
पर मारेगा.

20 "आशेर का अन्न बहुत उत्तम होगा और वह राजसी भोजन
उपलब्ध कराएगा.

21 "नफताली छोड़ी हुई हिरणी के समान है जो सुंदर बच्चों को
जन्म देती है.

22 "योसेफ़ तो फल से भरी एक शाखा है जो सोते के पास लगी
हुई फलवंत लता की एक शाखा है जो बाड़े के सहारे चढ़ी हैं.

23 धनुष चलानेवाले ने धनुष चलाया और तीर छोड़ा और
लगकर दर्द हुआ.

24 परंतु उसका धनुष दृढ़ रहा, उसकी बांहें मजबूत रहीं, यह
याकोब के सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से था, जो इस्राएल
के चरवाहे तथा चट्टान हैं.

25 तुम्हारे पिता के परमेश्वर की ओर से, जो तुम्हारे सहायक हैं
तथा उस सर्वशक्तिमान से जो स्वर्गीय आशीषों से तुम्हें
आशीषित करेंगे, वे आशीषें, जो नीचे गहराइयों से आती हैं,
स्तनों तथा गर्भ की आशीषें देगा.

26 तुम्हारे पिता की आशीषें तो मेरे पूर्वजों के पहाड़ों से बढ़कर
हैं ये अनंत पर्वतों से संबंधित आशीषों से बढ़कर हैं. ये ही
आशीषें योसेफ़ पर प्रकट होकर उसके सिर का मुकुट बनें,
जो सब भाइयों से प्रतिष्ठित हुआ है.

27 "बिन्यामिन एक क्रूर भेड़िया है; सवेरे वह अहेर का सेवन
करता है, शाम को वह लूट सामग्री बांटा करता है."

28 ये सभी इस्राएल के बारह गोत्र हैं उनके पिता ने उनके बारे
में तब कहा जब वह उन्हें आशीष दे रहे थे, और उनमें से एक-
एक को इन्हीं वचनों से आशीष दी.

29 तब इस्राएल ने कहा, "मुझे मेरे पूर्वजों की उसी गुफ़ा में
दफनाना, जो एफ्रोन हित्ती के खेत में है,

30 कनान देश में उस कब्रस्थान में, जो माखपेलाह के खेत में,
ममरे के पास है, जिसे अब्राहाम ने हित्ती एफ्रोन से खरीदा था.

31 वहां उन्होंने अब्राहाम तथा उनकी पत्नी साराह को दफनाया
था, वहीं उन्होंने यित्सहाक तथा उनकी पत्नी रेबेकाह को
दफनाया तथा वहीं मैंने लियाह को भी दफनाया है;

32 वह खेत गुफा सहित हित्तियों से खरीदा है."

33 जब याकोब अपने पुत्रों को ये आदेश दे चुके, तब उन्होंने
अपने पैर अपने बिछौने पर कर लिए तथा आखिरी सांस ली,
वे अपने पूर्वजों से जा मिले.

Genesis 50:1

1 योसेफ़ अपने पिता से लिपट कर बहुत रोये.

2 योसेफ़ ने अपने सेवकों से, जो वैद्य थे उनसे कहा कि वे पिता
के शव में सुगंध द्रव्य भर दें. वैद्यों ने इस्राएल के शव का
संलेपन किया.

3 इस काम में चालीस दिन लग जाते थे. मिस्रवासियों ने याकोब
के लिए सत्तर दिन तक शोक मनाया.

4 जब शोक के दिन पूरे हुए तब योसेफ़ ने जाकर फ़रोह के
परिवार से कहा, "यदि आपका अनुग्रह मुझ पर है तो फ़रोह
से कहिये,

5 'मेरे पिता ने मरने से पहले मुझसे यह शपथ करवाई: उन्होंने
कहा, मैं मरने पर हूं मुझे कनान देश में उस कब्र में दफनाना,
जो मैंने अपने लिये खोदी है, इसलिये मुझे अपने पिता के शव
को कनान देश ले जाने की आज्ञा दें ताकि मैं वहां जाकर अपने
पिता को दफनाकर लौट आऊं.' "

6 फ़रोह ने कहा, "जाकर अपने पिता को जैसी उन्होंने तुमसे
शपथ करवाई थी, वैसे दफनाकर आओ."

7 इसलिये योसेफ़ अपने पिता के शव को लेकर रवाना हुए
और फ़रोह के सब सेवक उनके साथ गये. उनके साथ उनके
परिवार के तथा मिस्र देश के सारे प्रधान थे.

8 योसेफ़ का पूरा परिवार, उनके भाई तथा उनके पिता का
परिवार भी था. वे गोशेन में बच्चों और अपने भेड़-बकरी तथा
पशुओं को छोड़कर गये.

9 उनके साथ घोड़े तथा रथ और लोगों की बड़ी भीड़ थी.

10 जब वे अताद के खलिहान तक जो यरदन के पार है, पहुंचे;
तब वे बड़े दुःखी हुए और रोने लगे; उन्होंने वहां अपने पिता
के लिए सात दिन का शोक रखा.

11 जब कनान के लोगों ने अताद के खलिहान में यह विलाप
देखा तो कहा, "मिस्रवासियों के लिए यह वास्तव में गहरा
शोक है." इसलिये यरदन पार उस स्थान का नाम अबेल-
मिस्रईम रखा गया.

Genesis 50:1

12 इस प्रकार याकोब के पुत्रों ने उनके लिए ठीक वैसा ही
किया, जैसा याकोब ने कहा था:

13 याकोब के पुत्रों ने उन्हें कनान देश में ममरे के पास
माखपेलाह के खेत की गुफा में दफना दिया, जो अब्राहाम ने
कब्रस्थान के लिए हित्ती एफ्रोन से खरीदी थी.

14 अपने पिता को दफनाने के बाद योसेफ़ मिस्र देश लौट गए.
उनके साथ उनके भाई भी लौट गए तथा वे सब भी, जो उनके
साथ यहां आए थे.

15 जब योसेफ़ के भाइयों ने सोचा, "हमारे पिता का निधन हो
चुका है, अब यदि योसेफ़ हमसे नफरत करके पिछली बातों
का बदला लेगा तो हम क्या करेंगे?"

16 इसलिये उन्होंने योसेफ़ से कहा: "पिता ने हमसे कहा था
कि

17 'योसेफ़ से कहना कि कृपा कर अपने भाइयों के अत्याचार
और गलतियों को माफ कर दो जो उन्होंने तुमसे किए थे,'
इसलिये अब, कृपा कर अपने पिता के परमेश्वर के नाम से
हमारी गलतियों को माफ कर दो." योसेफ़ उनकी यह बात
सुनकर रोने लगे.

18 तब उनके भाई भी रोने लगे और योसेफ़ के सामने झुककर
कहने लगे, "हम सभी आपके दास हैं."

19 किंतु योसेफ़ ने उनसे कहा, "आप लोग मत डरो. क्या मैं
कोई परमेश्वर हूं?

20 मैं जानता हूं कि आप लोगों ने भले ही मेरी हानि की योजना
बनाई हो, लेकिन परमेश्वर ने उसे अच्छे के लिये किया कि
बहुतों का जीवन बचा लिया गया!

21 इसलिये भयभीत न हो; मैं स्वयं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को
भोजन दूंगा." इस प्रकार योसेफ़ ने अपने भाइयों को सांत्वना
दी और उनसे कोमलता से बातें की.

22 योसेफ़ मिस्र में अपने पिता के पूरे परिवार के साथ रहे.
योसेफ़ की उम्र एक सौ दस वर्ष हुई.

23 योसेफ़ ने एफ्राईम की तीसरी पीढ़ी भी देखी तथा मनश्शेह
के पोते, जो माखीर के पुत्र थे, उन्हें भी जन्म के बाद योसेफ़ के
घुटनों पर रखा गया.

24 योसेफ़ ने अपने भाइयों को कहा, "मैं अब मरने पर हूं,
लेकिन परमेश्वर अवश्य आप सब की रक्षा करेंगे और वही
तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएंगे, जिसकी शपथ उन्होंने
अब्राहाम, यित्सहाक तथा याकोब से की थी."

25 तब योसेफ़ ने इस्राएल के पुत्रों से शपथ ली, "परमेश्वर आप
सभी की मदद के लिये आएंगे और तब आप लोग मेरी हड्डियों
को यहां से लेकर जाना."

26 योसेफ़ की मृत्यु एक सौ दस वर्ष में हुई. उनके शव को
सुगंध द्रव्य से भरा गया और उन्हें मिस्र देश में ही एक संदूक
में रख दिया गया.